

करुणा की कथाएं

भाग - २



आइये ! विश्व शांति के लिये हाथ बढ़ाएं ...

-: प्रकाशक :-

करुणा अन्तरराष्ट्रीय, चेन्नई

पुस्तक : करुणा की कथाएं , भाग-2
Stories on Compassion, Part - 2

संपादन : दुलीचन्द जैन 'साहित्यरत्न'

प्रकाशक : करुणा अन्तरराष्ट्रीय, मुणोत सेन्टर, 2nd Floor,
#343, ट्रिप्लीकेन हाई रोड, चेन्नई - 600 005.

फोन : 044-28591724, 28591714, 95514 96900

email : info@karunainternational.org

प्रथम संस्करण : 2009

2016 तक कुल 5 संस्करण, प्रतियां 13000

छठ्ठा संस्करण : सितम्बर 2019, प्रतियां 3000

मूल्य : 30 रुपया

साज-सज्जा : श्रीमती सुनीता जैन, एम.ए., एम.लिब.

मुद्रक : डॉ. भद्रेशकुमार जैन, प्रबंधक : जैन प्रकाशन केन्द्र
पुराना नं. 53, आदियप्पानायकन स्ट्रीट, साहुकारपेट
चेन्नई - 600079. Cell : 93822 91400



बहे जीवन में निरंतर करुणा-धारा, हर प्राणी की सेवा करना है कर्तव्य हमारा !



करुणा प्रार्थना



सत्त्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं,
क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा परत्वं ।
माध्यस्थ भावं विपरीत वृत्तौ,
सदा ममात्मा विदधातु देव ॥



अर्थात् - प्राणिमात्र के प्रति मैत्री, गुणज्ञों के प्रति प्रमोद, व्यथितों के प्रति करुणा एवं अपने से विपरीत भाव रखने वालों के प्रति तटस्थ वृत्ति - हे प्रभो ! मेरी आत्मा में ये विचार सुस्थिर हों ।

विश्व मैत्री की मंगल भावना

मैत्री भाव का पवित्र झरना, मेरे हृदय में बहा करे ।
शुभ हो सारे विश्व जीवों का, नित्य भावना रहा करे ॥
गुणवानों के गुण दर्शन से, मन यह मेरा नृत्य करे ।
गुणीजनों के गुण पालन से जीवन मेरा धन्य बने ॥
दीन, क्रूर और दयाहीन को, देख के दिल यह भर जाये ।
करुणा भीगी आँखों में से, सेवा भाव उभर आये ॥
भूले भटके जीवन पथिक को, मार्ग दिखाने खड़ा रहूँ ।
करे उपेक्षा प्रेमपंथ की, तो भी समता चित्त धरूँ ॥
“चित्रभानु” की यही भावना, मैत्री घर-घर सुख लाये ।
“करुणा क्लब” की यही भावना, मैत्री घर-घर सुख लाये ।
वैर-विरोध के भाव छोड़कर, गीत प्रेम के सब गाये ॥

विद्यालय-प्रार्थना के बाद ‘करुणा प्रार्थना’ का अर्थ सहित गान प्रतिदिन तथा
‘विश्व मैत्री की मंगल भावना’ गीत का सप्ताह में किसी
एक दिन सामूहिक गान कराना चाहिए ।

करुणा अन्तरराष्ट्रीय संस्थान

- ❖ करुणा अन्तरराष्ट्रीय एक रजिस्टर्ड मुनाफा रहित संगठन है, जो विद्यालयों/महाविद्यालयों में करुणा क्लबों के माध्यम से विद्यार्थियों में मानवीय जीवन मूल्यों यथा- करुणा, अहिंसा, प्रेम, वैश्विक भाईचारा, प्रकृति-पर्यावरण की रक्षा एवं शाकाहार का प्रचार करता है ।
- ❖ वर्तमान में देश के विभिन्न राज्यों में गठित कुल 2150 करुणा क्लब, 39 करुणा केन्द्रों एवं 800 कार्यकर्ताओं के माध्यम से संचालित हैं ।
- ❖ भारतीय जीव-जंतु कल्याण बोर्ड ने इस संस्थान को मान्यता प्रदान की है एवं प्रतिवर्ष सहयोग राशि भी प्रदान करता है ।
- ❖ संस्थान प्रति माह 'करुणा न्यूजलेटर' का प्रकाशन हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में संयुक्त रूप से करता है, जिसमें करुणा क्लबों की गतिविधियों के समाचार सचित्र प्रकाशित होते हैं ।
- ❖ करुणा एवं शाकाहार संबंधी साहित्य आवश्यकतानुसार प्रकाशित/वितरित करता है, साथ ही सी.डी./डी.वी.डी तैयार/संकलित/वितरित करता है ।
- ❖ राष्ट्रीय स्तर पर करुणा एवं मानवीय बोध कथाओं पर प्रतियोगी परीक्षा आयोजित करते हुए प्रतिवर्ष लगभग 3,00,000/- (तीन लाख) रुपये की राशि नगद पुरस्कार स्वरूप प्रदान की जाती है ।
- ❖ मानवीय शिक्षा पर आधारित एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर : शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम- 5,000/- विद्यार्थी प्रशिक्षण कार्यक्रम- 3,000/- तथा अंतरविद्यालयीय प्रतियोगिताओं हेतु न्यूनतम 1,500/- एवं अधिकतम 3,000/- रुपये तक की राशि का आर्थिक सहयोग करुणा क्लबों/केन्द्रों को नियमानुसार प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने पर संस्थान द्वारा प्रदान किया जाता है ।
- ❖ अखिल भारतीय/क्षेत्रीय सम्मेलनों का आयोजन कर उत्कृष्ट करुणा क्लबों (विद्यालयों) एवं विद्यार्थियों को दयावान अवार्ड के रूप में लगभग एक लाख रुपए की राशि प्रतिवर्ष प्रदान की जाती है ।

प्रकाशकीय

आज सारा विश्व हिंसा, क्रूरता और आतंकवाद के दौर से गुजर रहा है। पाश्चात्य संस्कृति ने मनुष्य को सृष्टि में प्राथमिकता देने के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया और उसी समय से पशु-पक्षी मनुष्य के भोग-उपभोग की सामग्री बन गए। आज चिकित्सा, औषधि-निर्माण, रसायनों, सौन्दर्य-सज्जा एवं उद्योग-धंधों में पशु-पक्षियों पर जिस प्रकार के जघन्य एवं क्रूरता पूर्ण प्रयोग किये जा रहे हैं, वे निंदनीय तथा मानव जाति के लिए कलंक हैं। यांत्रिक कत्लखानों में लाखों प्राणियों का निर्ममता से कत्ल किया जा रहा है। पशु-पक्षियों की अनेक प्रजातियां लुप्त हो गई हैं, कई लुप्त होने के कगार पर हैं। मनुष्य ने घने वृक्षों से आच्छादित वनों को उजाड़ दिया है, पानी और वायु को प्रदूषित कर दिया है। यही कारण हैं कि पर्यावरण असंतुलित होता जा रहा है तथा प्रदूषण की मात्रा द्रुतगति से बढ़ रही है, अनेक प्रकार की नई बीमारियों ने जन्म ले लिया है।

अतः विश्व के चिन्तक यह सोचने के लिए बाध्य हैं कि इस परिस्थिति का सामना किस प्रकार से किया जाना चाहिए ताकि करुणा, प्रेम एवं सौहार्द के भाव पुनः विश्व में प्रस्फुटित एवं प्रचारित हों।

करुणा क्लब शिक्षा के द्वार पर अहिंसा की दस्तक है। 'जीओ और जीने दो' की मंगलमयी भावना से प्रेरित होकर विद्यालयों/महाविद्यालयों में करुणा क्लबें स्थापित करने का अभियान सन् 1995 में प्रारंभ किया गया। क्लब की सदस्यता सभी विद्यार्थियों के लिए बिना किसी जाति, धर्म या अन्य किसी भेदभाव के सहज उपलब्ध है। चेन्नई में मात्र 3 करुणा क्लबों से प्रारंभ हुआ 'करुणा अन्तरराष्ट्रीय' संस्थान वर्तमान में 13 राज्यों में 39 केन्द्रों के माध्यम से अपना प्रचार-प्रसार करता हुआ 2600 विद्यालयों/महाविद्यालयों में करुणा क्लबें स्थापित कर चुका है। वर्तमान में यह अभियान अपनी नवीनतम योजनाओं के साथ सतत गतिशील है।

पुस्तक का प्रथम प्रकाशन 2006 में किया, जिसकी अब तक 25,000 प्रतियाँ छपकर विद्यार्थियों में वितरित की जा चुकी हैं। यह अन्य तीन भाषाओं में भी उपलब्ध है। इस पुस्तक ‘करुणा की कथाएँ’ भाग- 2 का प्रथम प्रकाशन वर्ष 2009 में किया गया। इसमें हमने मुख्य रूप से “भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड” द्वारा प्रकाशित पुस्तकों (पशु कथाएँ- क्रिस्टल रोजर्स, सारनाथ तथा छः लघु कथाएँ- विशालाक्षी जोहरी) से कहानियाँ, साथ ही साथ ‘डिवाइन लाइफ सोसाइटी’ द्वारा अंग्रेजी में प्रकाशित Stories of Compassion के चार भागों में से कतिपय कहानियाँ, आलेख संकलित किये गये हैं।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2008 से हम इन पुस्तकों के आधार पर प्रति वर्ष राष्ट्रीय प्रतियोगिता का आयोजन करते हुए लगभग 3,00,000/- रुपए की राशि पुरस्कार स्वरूप वितरित करते हैं। कृपया इस पुस्तक के बारे में आप अपने सुझावों से अवगत कराकर हमारे उत्साह में अभिवृद्धि करावें।

दुलीचन्द जैन
चेयरमेन

कैलाशमल दुगड़
अध्यक्ष

पदमकुमार टाटिया
महामंत्री

अनुक्रम

1. सारनाथ (एकांकी)	1
2. पालतू गाय	17
3. दो पंछी	23
4. करुणावान बालक—राजन	28
5. आजादी	35
6. सिल्वर मेडल	40
7. कुन्दन की दया	47
8. करुणा भाव से भागा भय	51
9. परिवर्तन का वह दिन	56
10. पासपोर्ट की कीमत	59
11. जादू का खेल	64
12. प्रेमनाथ का बलिदान	67
13. बहादुर हमदर्द बच्चे	72
14. असहाय नेवला	78
15. कछुए की बहिन	83
16. आज्ञाकारी चेम्पियन	85
17. लिंकन की करुणा	89
18. चौपाया डॉक्टर	94

हमारा मूलभूत कर्तव्य -

“भारत के प्रत्येक नागरिक का यह दायित्व है कि वह प्राकृतिक पर्यावरण, जिसमें वन, झीलें एवं वन्य-जन्तु सम्मिलित हैं, को संरक्षण एवं विकास प्रदान करें और सम्स्त प्राणियों के प्रति करुणा एवं सहानुभूति का बर्ताव करें।”

- भारत का संविधान, अनुच्छेद 51A(G)



सारनाथ

(प्रस्तुत नाटक की कथावस्तु जातक-कथाओं से ली गई है । शताब्दियों पूर्व काशी के निकट सारनाथ के जंगलों में भगवान् बुद्ध का अवतरण मृगों के राजा कनकवर्ण के रूप में हुआ था, जिसने मगध के राजा सम्राट् बिंबिसार को सत्य से प्रेम करना और अहिंसा सिखायी ।)

नाटक से संबंधित कुछ संकेत -

इसमें कुछ मौकों पर नेपथ्य संगीत और छोटे नृत्यों का आयोजन किया जाये, जैसे जब शिकारी हिरनों का शिकार करने आते हैं, हिरन अपने मित्र का मातम मनाते हैं और अंत में जब आनन्दित होते हैं तो नाटक बहुत प्रभावपूर्ण हो सकता है ।

सुन्दर मुखौटे और वस्त्र हिरनों के लिए बनाये जा सकते हैं । बहुत वास्तविकता की चेष्टा नहीं करनी चाहिए ।

संवाद को स्पष्ट और स्वाभाविक ढंग से करना चाहिए । हास्यमय भागों पर अति व्यंजना न हो या बहुत हास्यकर रूप से प्रस्तुत न करें ।

पात्र परिचय -

सम्राट् बिंबिसार मगध का राजा

कनकवर्ण मृगों का राजा

अन्य मृग, शिकारी, भोजन बनाने वाले तथा सेवक ।

पहला दृश्य

(स्थान : सारनाथ जंगल । बहुत से मृग प्रसन्नता से विचरण करते हुए । (नृत्य) अचानक ढक्के का शोरगुल । मृग-यूथ भयभीत होकर कांपने लगता है । शिकारी धनुष-बाण लिए हुए प्रवेश करते हैं । सभी मृग भागते हैं । केवल एक हिरण मारा जाता है ।)

पहला शिकारी- वह देखो ! वह रहा मृग । ओह ! कितना मोटा ताजा है ! आज तो हमारे भाग्य ने खूब जोर मारा ।

दूसरा शिकारी- कितना भारी बोझ है यह । सचमुच इसे उठाकर ले जाना एक समस्या है ।

पहला शिकारी- श्रम-कणों की एक-एक बूंद के बदले यदि राजा से एक-एक स्वर्ण-मुद्रा मिले तो मैं बोझ की तनिक भी परवाह न करूँगा ।

दूसरा शिकारी- हाँ ! तब तो मुझे बोझ की कोई चिन्ता न होगी ।

(हिरण ले जाते हैं । कुछ क्षण बाद एक हिरण दबे पाँव झांकता है । निकलता है । अपने साथी हिरण के मृत्यु-स्थल को धीरे-धीरे बहुत से मृग घेर लेते हैं । दुःखी होते हैं । मृगों के राजा का प्रवेश । उन हिरणों की तरफ देखता है और चकित होता है ।)

मृगों का राजा- तुम सब यहाँ क्यों एकत्रित हुए हो ? तुम सब क्यों रो रहे हो ? क्यों इतने शोकाकुल हो ? मैं तुम्हारा राजा हूँ , अपने दुःख का कारण मुझे बताओ । मैं तुम्हारी सहायता करूँगा ।

पहला मृग- राजन् ! हम सब अपने वन में ऋतुराज वसंत के आगमन की खुशी में उत्सव मना रहे थे । अचानक एक डरावनी आवाज सुनी और देखा कि दो पैरों वाले भयानक जानवरों ने वन में प्रवेश किया । उन्होंने हमारे ऊपर नुकीले बाणों की बौछार कर दी । हम सब भागकर छिप गये, किन्तु हमारा एक साथी यहीं मारा गया । वह तेज दौड़ नहीं सका ।

दूसरा मृग- ये रहे उसके खून के निशान ।

तीसरा मृग- हमने उनका क्या बिगाड़ा है ? वे हमें क्यों दण्ड देते हैं ?

सभी मृग- ये क्यों इतने क्रूर और निर्दयी हैं ?

मृगों का राजा- वे जानवर दो पैरों वाले प्राणी 'मानव' कहलाते हैं । इन मानवों की धारणा है कि सारा संसार उन्हीं के सुख और विलास के लिए बनाया गया है ।

पहला मृग- क्या हमें जीवित रहने का भी अधिकार नहीं है ? फिर ईश्वर ने हमें क्यों बनाया है ?

दूसरा मृग- यह हमारा वन-प्रान्त है । हमारा जन्म यहीं हुआ है । हम अन्यत्र कहाँ रह सकते हैं ?

मृगों का राजा- सत्य है । यह हमारा घर है, किन्तु यह मनुष्य अविचारी और शक्तिशाली है । वह तर्क नहीं सुनेगा । अपने आनन्द के लिए मनमानी करता है ।

तीसरा मृग- तब तो हम सभी का अंत निश्चित है । हममें से एक भी, मनुष्य से बच नहीं सकता । हमारे पास तो कोई शस्त्र भी नहीं, जिनसे लड़ सके । (रोना)

मृगों का राजा- ठहरो । इस प्रकार अधीर मत हो । हमें मनुष्य के विचारों को बदलना ही होगा । मैं मनुष्यों के राजा से निवेदन करूँगा । उनसे तर्क करके अपनी बात समझाऊँगा । सभी मनुष्य उसकी आज्ञा मानेंगे । रोओ मत ।

(सब जाते हैं ।)

दूसरा दृश्य

(वन में सम्राट बिंबिसार का शिविर, राजा तीर-कमान चला अभ्यास कर रहा है । दो शिकारियों का प्रवेश ।)

पहला शिकारी - सम्राट की जय हो !

दूसरा शिकारी - सम्राट की जय हो !

सम्राट- अच्छा ! तो क्या समाचार है ? क्या तुमने सारा जंगल लिया है ? यहाँ राजसी आखेट के लिए कौन-कौन से जानवर मिल

पहला शिकारी- महाराज ! अनेक जाति के मृगों से यह जंगल पड़ा है । सच पूछिये तो यह वन शिकारियों का स्वर्ग ही है ।

दूसरा शिकारी- हमने इतना बड़ा शिकार मारा है कि उससे राजसी भोज का आयोजन हो सकता है ।

सम्राट- मुझे यह सुनकर प्रसन्नता हुई । तुम्हारे जैसे वीर-के रहते हुए किसका भय हो सकता है ? तुम्हें इसके लिए भारी मिलेगा ।

पहला शिकारी- यह महाराज की उदारता और दयालुता है

दूसरा शिकारी- महाराज गुणों के सच्चे पारखी है ।

(रक्षक का प्रवेश)

रक्षक- महाराज ! एक हिरण जैसा विचित्र प्राणी आपकी सेवा निवेदन करना चाहता है । वह निषेध करने पर भी नहीं जाता ।

पहला शिकारी- क्या कहा ! एक हिरण !!

दूसरा शिकारी - एक हिरण ! महाराज से निवेदन करना है !

सम्राट- क्या कहा तुमने ? कौन निवेदन करना चाहता है ? एक हिरण ?

रक्षक- हाँ महाराज, दिखाई तो हिरण जैसा पड़ता है, किन्तु शायद मनुष्य हो सकता है अथवा वन-देवता हो सकता है । मैं उसे समझा नहीं सकता । कहता है- “महाराज से भेंट किये बिना नहीं लौटूंगा ।”

सम्राट- उसे आने दो ।

(मृगराज कनकवर्ण का प्रवेश । प्रणाम करता है । सब चकित होते हैं ।)

पहला शिकारी- आश्चर्य ! असंभव, यह कोई जादू तो नहीं !

दूसरा शिकारी- यह माया है !

सम्राट- (प्रशंसा के भाव से) मैं स्वप्न में भी ऐसे सुन्दर हिरण की कल्पना नहीं कर सकता था । कितना भव्य और सुन्दर है यह ! इसकी आँखें वन के गहरे सरोवर की भाँति चमकदार हैं, जो तारों को प्रतिबिम्बित करती हैं ।

पहला शिकारी- यह तो इन्द्रजाल है- मारीच राक्षस जैसा

दूसरा शिकारी- चलो भाग चलो । कहीं अपने जादू से यह हमें भी सम्मोहित न कर ले ।

सम्राट- महात्मन् ! आप कौन हैं ? आपने मृग का रूप क्यों धारण किया है ? आप कोई ऋषि हैं अथवा गंधर्व ?

मृगों का राजा- महाराज ! मैं सारनाथ जंगल के मृगों का राजा कनकवर्ण हूँ ।

सम्राट- अवश्य ! आप असाधारण हैं । मेरे योग्य सेवा बताइये ।

मृगों का राजा- मैं तो स्वयं ही आपकी कृपा का इच्छुक हूँ ।

सम्राट- तो जो इच्छा हो मांगो । यदि मेरी सामर्थ्य होगी तो अवश्य मिलेगा ।

मृगों का राजा- प्रतिदिन आपके शिकारी मेरे वन-राज्य में अनधिकार प्रवेश करते हैं । तीखे शस्त्रों से सुसज्जित ये शिकारी, मेरी प्रजा का निर्दयतापूर्वक हनन करते हैं । क्या इसे आप न्याय समझते हैं ?

सम्राट- मृगया तो राजाओं का आमोद है । इसके द्वारा हम अपने भुज-बल और शक्ति को बढ़ाते हैं ।

मृगों का राजा- आपका मनोरंजन हमारी मृत्यु है । क्या मैं आपसे एक प्रश्न पूछ सकता हूँ ?

सम्राट- अवश्य पूछो । क्या है ?

मृगों का राजा- क्या भगवान् दयालु है ?

सम्राट- भगवान् की दया असीम है । उसकी दया पर हमारा जीवन निर्भर है ।

मृगों का राजा- क्या मनुष्य मृगों के लिए भगवान् के समान नहीं है ? हम जानवरों का जीवन भी तो मनुष्य की दया पर निर्भर है ।

सम्राट- हाँ, तुम्हारा कहना ठीक है ।

मृगों का राजा- तब क्या मनुष्य को ईश्वर के समान दयालु नहीं होना चाहिए, जिससे हम निरीहों को अभय मिले ?

सम्राट- (स्वगत) यह मैं क्या सुन रहा हूँ । यह हिरण- एक जानवर- भगवान् और उनकी दया की बात करता है ! अपने प्रश्नों से मुझे निरुत्तर कर रहा है ? ... (हिरण से) तुम्हारी बातों में असाधारण विवेक है मृग, पर वीरता तो क्षत्रिय की शोभा है । जंगल में शिकार करने से वीरता बढ़ती है, निर्भीक होकर कठिनाइयों का सामना करना क्षत्रियों का धर्म है ।

मृगों का राजा- क्या क्षत्रियों का इससे ऊँचा कोई धर्म नहीं है ? क्या वह निर्बल और निर्दोष, निरीह प्राणियों का संरक्षक नहीं है ?

सम्राट- (स्वगत) मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं होता । साधु-संत ही ऐसी बातें कह सकते हैं, जानवर नहीं । (हिरण से) मुझे अब पक्का विश्वास हो गया है कि तुम मृग नहीं हो । मेरे साथ छल मत करो । अपने को प्रकट करो, तभी मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दूंगा । अपना छद्म-वेश उतारो ।

मृगों का राजा- मैं तो वही हूँ, जो आपको दिखाई दे रहा हूँ- केवल एक मृग । मैं स्वप्न में भी किसी को नहीं छल सकता । मुझे एक और प्रश्न पूछने की अनुमति दीजिये ।

सम्राट- पूछो ।

मृगों का राजा- जो चीज आप दे नहीं सकते, क्या उसे लेने का अधिकार आपको है ?

सम्राट- यह भी कोई प्रश्न है ? यह तो पूछना ही व्यर्थ है । उत्तर इतना स्पष्ट है कि जानवर भी इस बात को समझते हैं । गाय हमसे खाना पाती है और बदले में हमें दूध देती है । इसी प्रकार हर एक प्राणी, हमसे कुछ लेता है तो कुछ हमें भी देता है । लेकर कुछ न देना तो नीचता है । मनुष्य के गौरव के विपरीत है ।

मृगों का राजा- तो आप जब शिकार करके हमें मारते हैं तो हमारी सबसे अमूल्य निधि जीवन को हमसे छीन लेते हैं । ईश्वर की इस अमूल्य देन को आप वापस नहीं कर सकते । क्या यह मनुष्यों और उनके राजा के लिए गौरव की बात है ?

सम्राट- (परेशान) मैंने इस प्रकार कभी सोचा ही नहीं । (ठहरकर) किन्तु शिकार न करने पर कुछ कठिनाइयाँ होंगी ।

मृगों का राजा- व क्या है ? बताइये । सभव है, मैं कुछ सहायता कर सकूँ ।

सम्राट- मेरे यहाँ, राजसी आतिथ्य के लिए मांस बनाना आवश्यक है । शिकार न करने पर पूर्वजों द्वारा प्रचलित इस प्रथा को मैं कैसे चला सकूँगा ?

मृगों का राजा- क्या माँस भोजन द्वारा अतिथि-सत्कार करना इतना आवश्यक है ?

सम्राट- हाँ । यदि मैं उचित रीति से अतिथि-सत्कार नहीं करूँगा तो यह मेरे और मेरे कुल की मर्यादा पर कलंक होगा ।

मृगों का राजा- अच्छा, तो यदि राजसी, भोजनालय के लिए प्रतिदिन एक मृग भेज दिया जाये तो क्या आप शिकार पर प्रतिबंध लगा देंगे ? राजन् ! मैं आपकी इतनी कृपा का इच्छुक हूँ कि आपके भोजनालय में प्रतिदिन एक हिरण भेजूँगा ।

सम्राट- जान पड़ता है तुमने सब कुछ गंभीरतापूर्वक सोचा है । तुम्हारी प्रार्थना उचित है ।

मृगों का राजा- यह एक राजा की दूसरे राजा से प्रार्थना है ।

सम्राट- (मुस्कुराते हुए) बेशक !

मृगों का राजा- एक मित्र की अपने पड़ोसी से प्रार्थना है ।

सम्राट- सत्य है । (मृग की ओर देखता हुआ) तो मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करता हूँ ।

मृगों का राजा- महाराज ! ईश्वर आपको चिरायु करे ।

सम्राट- किन्तु अपनी प्रतिज्ञा को मत भूलना । यदि एक दिन भी तुम हिरण भेजना भूले तो शिकार का आदेश फिर से दे दिया जायेगा ।

मृगों का राजा- मैं अपना वचन पूरा करूंगा । (प्रणाम करके जाता है ।)

सम्राट- क्या यह स्वप्न था ? मुझे विश्वास नहीं होता कि वह हिरण था । शायद कोई देवता मेरी परीक्षा ले रहा है । मैं भी उसकी परीक्षा लूंगा । (ताली बजाता है । सेवकों और शिकारियों का प्रवेश) ... मेरे राज्य में यह आज्ञा प्रसारित करो- आज से राज्य का कोई भी व्यक्ति सारनाथ के जंगलों में शिकार नहीं करेगा । आज्ञा का उल्लंघन करने वाले को कठोर दण्ड दिया जायेगा ।

पहला शिकारी- ओह ! तो राजा को मारीच ने वश में कर ही लिया ।

दूसरा शिकारी- अब तो हमें भिक्षा-पात्र लेकर भीख मांगने की तैयारी करनी चाहिए ।

तीसरा दृश्य

(वन में मृग-शावक को प्यार करती हुई मृगी अत्यधिक दुःखी दिखाई पड़ती है ।)

मृगी- मेरे प्यारे बच्चे ! तुम्हें अकेला छोड़ कैसे जाऊंगी । राजा के भोजनालय में जाने की कल मेरी बारी है । तुम्हारी कौन देखभाल करेगा ? अब खतरा देखने पर तुम्हें कौन सावधान करेगा कि तुम भागकर छिप जाओ । रात्रि के अंधकार में जब भयानक भेड़िया शिकार के लिए निकलेगा तो उससे कौन तुम्हारी रक्षा करेगा ? आह ! मुझे छोड़कर तुम कैसे रह सकोगे ? (रोती है ।)

(मृगों के राजा का प्रवेश, अपने अनुचरों के साथ । मृग-शावक की ओर देखता है ।)

मृगों का राजा- कितना प्यारा बच्चा है । यह तो बड़ा ही सुन्दर है । क्या तुम्हें इसका गर्व नहीं है ? इसका क्या नाम है ?

मृगी- मैंने इसकी सुन्दर आँखों के कारण इसका नाम 'सुलोचन' रखा था, किन्तु अब तो इसे 'अभागा' ही कहना चाहिए ।

मृगों का राजा- ऐसा क्यों ? अरे ! तुम रो क्यों रही हो ?

मृगी- कल राजा के भोजनालय में मेरा वध होगा । कल मेरी बारी है । इस दूधमुँह बच्चे का क्या होगा ? यह असहाय है । न अपने आप खा सकता है और न अपनी रक्षा ही कर सकता है । यह तेज दौड़ भी नहीं सकता है । मेरा वध होने पर यह निश्चय ही मर जायेगा ।

मृगों का राजा- इसका मरना तो ठीक नहीं है । इसने अभी वन-जीवन का आनन्द भी नहीं जाना । मैं इसकी रक्षा करूँगा ।

मृगी- यदि मैं नहीं जाती हूँ तो राजा फिर से शिकार करना प्रारंभ कर देंगे, फिर तो हमारे ही बहुत से हिरण-बांधव मारे जायेंगे ।

मृगों का राजा- हाँ, मुझे अपना वचन पूरा करने के लिए एक हिरण तो प्रतिदिन भोजना ही है । लेकिन ठहरो, मुझे उपाय सोचने दो ।... (सोचता हुआ) शायद... ऐसा संभव होगा... (अनुयायियों से) क्या तुम सब ने मृगी की बात सुनी ? (एक बूढ़े हिरण से) तुम बुद्धिमान हो और अनुभवी भी हो । क्या कोई उपाय बता सकते हो ?

बूढ़ा हिरण- हमारे भाग्य में मनुष्य द्वारा मारा जाना ही लिखा है, यद्यपि हम उसे कोई हानि नहीं पहुँचाते हैं ।

दूसरे मृग- हम असहाय हैं ।

मृगी- यदि किसी प्रकार मैं केवल दो मास जीवित रह सकूँ तो यह बच्चा अपनी देखभाल करने योग्य हो जायेगा । दो माह के बाद मैं प्रसन्नतापूर्वक अपना उत्सर्ग करूँगी ।

मृगी का राजा- कबल दा माह ! इस मृगी के बदले कोन जाने क तैयार है ? हम सभी को एक दिन मरना ही है । किन्तु एक निरीह शिशु के लिए प्राणोत्सर्ग करना गौरवपूर्ण होगा । (द्रुतगामी हिरण की ओर देखकर) तुम्हारी तो परसों की बारी है । क्या तुम मृगी के बदले जाकर बच्चे की रक्षा करोगे ? तुम वीर हो !

द्रुतगामी हिरण- क्या यह आपकी आज्ञा है ?

मृगी का राजा- नहीं, यह आज्ञा नहीं है ।

द्रुतगामी हिरण- राजन् ! सब के लिए जीवन अमूल्य है । क्या मुझे आप मेरे जीवन का आखिरी दिन भी छीनना चाहते हैं ? मेरे लिए यही दिन सब से प्यारा है ।

मृगी का राजा- ऐसा लगता है कि तुम में से कोई भी मृगी के बदले नहीं जाना चाहते हो । (सभी लज्जा से नीचे देखते हैं, चले जाते हैं ।)

मृगी- मेरे लाल ! अब तुम्हारे जीवन की कोई आशा नहीं रही । किन्तु मैं तुम्हें जंगल की दया पर नहीं छोड़ूंगी । तुम्हें अपने साथ ले जाऊंगी । अच्छा होगा कि हम दोनों साथ ही मरें । (जाने को उद्यत)

मृगी का राजा- ठहरो ! मैंने तुमसे कहा है कि मैं इसकी रक्षा करूंगा । मैं अपना वचन पूरा करूंगा । कोई न कोई उपाय अवश्य निकालूंगा । तब तक तुम बच्चे की देखभाल करो । कल राजा के भोजनालय में जाने की तुम्हें कोई आवश्यकता नहीं है ।

मृगी- तब कौन जायेगा मेरी जगह ?

मृगी का राजा- चिंता मत करो । कोई तो होगा ही ।

मृगी- महाराज ! मुझे उस दयालु के पास ले चलो ताकि मैं उसे धन्यवाद दे सकूं । कृतज्ञता प्रकट कर सकूं । मेरे बच्चे ! तुम जीवित रहोगे, अवश्य रहोगे । (प्यार करती है ।)

(वन के शिविर में राजा का भोजनालय । एक रसोइया आलू भून रहा है, दूसरा लड्डू बना रहा है । एक कसाई अपना छूरा तेज कर रहा है ।)

पहला रसोइया- (लड्डू चखने वाले रसोइये से) तुम्हारे लड्डू चखते-चखते तो शायद राजा के लिए एक भी लड्डू न बचेगा । तुम्हीं सारे चटकर जाओगे ।

दूसरा रसोइया- अपना काम देखो जी ! नहीं तो मैं तुम्हारे दोनों गाल गरम करके इन आलुओं की तरह लाल कर दूंगा- समझें ?

पहला रसोइया- ऐसा ? तुम्हारे ऐसा करने से पहले मैं तुम्हें लड्डुओं की तरह लुढ़का कर बाहर फेंक दूंगा । तुम्हें मालूम होना चाहिए कि रसोइया बनने के पहले मैं मशहूर पहलवान था ।

दूसरा रसोइया- सचमुच ! अच्छा बहुत डींगे न हांको । अपना जोर आजमाओ तो समझूं । आओ मैं तैयार हूँ ।

(दोनों अपनी-अपनी कमरबन्ध कसते हैं- बांह बढ़ाकर लड़ने को तैयार होते हैं । इसी बीच एक लड़का एक लड्डू चुराकर मुँह में रख लेता है । कसाई चिल्लाता है ।)

कसाई- चोर ! चोर !

(रसोइये घूमकर देखते हैं । पहला रसोइया लड़के का कान पकड़ता है)

पहला रसोइया- क्यों रे बंदर ! क्या कर रहा था तू ?

दूसरा रसोइया- शैतान कहीं का ! खोल मुँह ! क्या खाया है तूने ?

लड़का- (खोलने में असमर्थ) मैं... मैं... नहीं... कुछ नहीं...

कसाई- अरे भाई जाने दो, छोड़ो, नहीं तो मर जायेगा ।

(रसोइये लड़के को छोड़ देते हैं और हंसते हैं ।)

दूसरा रसोइया- अब कभी चोरी करते पकड़ा तो भूत बुलाकर तेरे पीछे लगा दूंगा । समझे ? (दोनों रसोइये अपना काम करते हैं ।)

कसाई- (छूरी रखता हुआ) आज रात्रि के भोजन में माँस नहीं बन सकेगा ।

पहला रसोइया- माँस नहीं बनेगा ? पर क्यों ? यह तो बुरा होगा । हम माँस क्यों नहीं बना सकेंगे ?

दूसरा रसोइया- क्या कुछ गड़बड़ है ?

कसाई- अभी तक कोई हिरण जंगल से नहीं आया । मुझे देर हो रही है और मैं प्रतीक्षा करते-करते थक गया हूँ । (अंगड़ाई लेता है ।)

पहला रसोइया- देखो-देखो- वह दरवाजे पर कौन-सा जानवर है ? (मृगों के राजा का प्रवेश)

कसाई- (आश्चर्य से देखता हुआ) कौन हो तुम ? यहाँ क्यों आये हो ?

मृगों का राजा- मैं वनचर मृगों का राजा हूँ । आज मेरी बारी है । (घुटने टेककर गर्दन झुका लेता है ।)

कसाई- (भयभीत सा) उठो । जाओ यहाँ से । तुम मृग नहीं हो और तुम कहते हो कि राजा हो । यदि ऐसा है तो तुम्हें मारना अपराध होगा और इसके लिए मैं कठोर दण्ड पाऊँगा ।

लड़का- (काँपता हुआ) शायद यह भूत है । मुझे पकड़ने आया है ।

(लड़का बाहर भागता है । रसोइये परेशान हैं ।)

पहला रसोइया- (दूसरे से) लगता है, यह वही प्रेत है, जिसे बुलाने की

तुमने धमकी दी थी । कहीं वह मेरा गला पकड़ ले तो...(दूसरे रसोइये की गर्दन पकड़ लेता है ।)

दूसरा रसोइया- (उसके हाथों को हटाता हुआ) अरे छोड़ मूर्ख । यदि यह सचमुच कोई दृष्ट प्रेतात्मा है, तो हमें इसे प्रसन्न करने का उपाय करना चाहिए । (लड्डू हिरण के सामने ले जाकर) महाराज से लड्डू ग्रहण करने की प्रार्थना करता हूँ ।

मृगों का राजा- (कसाई से) मैं तैयार हूँ । संकोच छोड़ो, अपना काम करो ।

कसाई- किंतु मुझे सम्राट से आज्ञा लेनी ही चाहिए । (जाता है ।)

पहला रसोइया- हम कैसे उसे प्रसन्न करें ?

(कसाई के साथ सम्राट बिंबिसार का प्रवेश । रसोइये पीछे हटते हैं, सम्राट आश्चर्य चकित होते हैं ।)

सम्राट- क्या तुम मृगों के राजा कनकवर्ण नहीं हो ?

(कनकवर्ण आदर से सिर झुकाता है ।)

सम्राट- आज तुम यहाँ कैसे आये ?

कनकवर्ण- आज राजसी भोज की बारी में मैंने स्वयं को वध के लिए चुना है ।

सम्राट- मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है । क्या तुम्हारे वन में और मृग नहीं है ?

मृगों का राजा- बहुत से हैं ।

सम्राट- तुम अपने स्थान पर किसी और को भी आज्ञा देकर भेज सकते थे ।

मृगों का राजा- आज एक मृगी की बारी थी, जिसका बच्चा इतना छोटा है कि वह बिना माँ के जीवित नहीं रह सकता । मैंने उस बच्चे की रक्षा का वचन दिया है । उस मृगी के बदले कोई स्वेच्छा से आने को तैयार नहीं हुआ । अतः मैं स्वयं ही आया हूँ ।

(हिरणों का समूह भागता हुआ अन्दर आता है, अपने राजा के सामने आदर के साथ झुकते हैं ।)

पहला हिरण- ओह राजन् ! आखिर हमने आपको पा ही लिया ।

सभी हिरण- भगवान् को धन्यवाद है कि आप सकुशल है ।

मृगी- मेरे महान् राजन् ! मुझे क्षमा कीजिये । यदि मुझे ज्ञात होता कि मेरे स्थान पर आप स्वयं जा रहे हैं, तो कभी ऐसा न होने देती । (पैरों पर गिरती है ।)

दूसरा हिरण- अब आप हमारे साथ वन को वापस चलिए ।

तीसरा हिरण- हम अपनी सुरक्षा के लिए आपका वध नहीं होने देंगे, भले ही क्रूर सम्राट हम सब का शिकार करके मार डाले ।

मृगों का राजा- नहीं, नहीं । मैं ऐसा कभी नहीं होने दूंगा । मैं अपना वचन अवश्य निभाऊँगा ।

चौथा मृग- ऐसा ही है तो अपने बदले मेरा वध होने दीजिए ।

मृगी- बारी मेरी है, और मैं इसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करूँगी ।

सब मृग- हममें से किसी को भी चुन लीजिए- हम सब मरने को तैयार हैं ।

सम्राट बिंबिसार- (हिरणों के पास जाकर) मेरी बात सुनो । तुम्हारे राजा का वध नहीं होगा । और न तुममें से किसी एक को भी मरना होगा । (कनकवर्ण से) मृगों के राजा ! आज तुमने मुझे सत्य, धर्म और दया

का मार्ग दिखाया है। तुम वन्य प्राणी होते हुए भी ईश्वराय ज्ञान से सम्पन्न हो। तुम्हारा प्रेम और तुम्हारी दया असीम है। आज तुमने मेरी आँखों को खोला, मुझे सत्य का दर्शन कराया। मैं इसी क्षण से अहिंसा-व्रत धारण करने का प्रण करता हूँ। आज से मेरे राज्य में हिंसा करना सदा के लिए बंद हो जायेगा। आगे से शिकार नहीं होगा और मेरे मुख के लिए किसी वन्य प्राणी का बलिदान नहीं होगा।

कनकवर्ण- ईश्वर आपको चिरायु करें। ईश्वर आप पर प्रसन्न हो।

सभी हिरण- (आनन्द से नृत्य करते हुए) महाराज कनकवर्ण की जय। सम्राट बिंबिसार की जय।

(कनकवर्ण के चारों ओर घेरा बनाकर नाचते हैं और आनन्द से उसे बाहर ले जाते हैं।)

(पर्दा गिरता है।)

प्रश्नावली

(क) उत्तर लिखो -

1. दो पैरों वाला भयानक जानवर किसके लिए कहा गया है ?
2. मृगों के राजा ने रोते मृगों को क्या कहकर सान्त्वना दी ?
3. मृगों का राजा किस सम्राट के पास गया ?
4. सम्राट बिंबिसार ने किस शर्त पर मृगराज कनकवर्ण को अपने राज्य में शिकार पर रोक लगाने का आश्वासन दिया ?

(ख) समझकर वाक्य को पूरा करो -

मृगी अपनी बारी आने पर भी सम्राट बिंबिसार के यहाँ नहीं जाना चाहती थी क्योंकि

(ग) इस लघु नाटिका का सारांश एक अनुच्छेद में लिखिए।

नाटक बोध : सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं।

अतः किसी भी प्राणी की हत्या या शिकार मत करो।

पालतू गाय



जिस दिन छोटी लाल बछिया का जन्म हुआ, सारा घर उल्लसित हो उठा। कान्हा की बेटी वल्ली और बेटे चंदू ने झट आंगन तक दौड़ लगाई और देखा कि गाय अपनी बछिये को चाव से चाट रही थी। सुबह की धूप बछिये पर गिरकर उसे एक लालिमा दे रही थी।

“अरे यह तो लाल है। बिल्कुल माँ के गले में पहने मूंगों के समान !” वल्ली ने कहा।

“हम इसका नाम “मूँगा” रखे, कान्हा ने नयी बछिये को पुचकारते हुए कहा।

“मैं इसको नदी में नहलाने के लिए कब ले जा सकूँगा।” चंदू ने पूछा।

“अभी यह बहुत छोटी है। थोड़े दिन और ठहरो।” कान्हा बोला।

उस दिन बच्चों का स्कूल जाने का बिल्कुल मन न था । “मैं अगर जाऊंगा तो बछिया की देखभाल कौन करेगा ?” चंदू खंआसा होकर बोला ।

“पड़ोसियों के कुत्ते तो उस पर धावा कर देंगे” वल्ली बोली । पर कान्हा ने उनकी एक न सुनी ।

जब बच्चे स्कूल से वापिस आये तो फौरन “मूंगा” को देखने दौड़ पड़े और उन्होंने बड़े अचंभे से देखा कि छोटी बछिया अपनी नन्हीं टांगों पर खड़ी होकर दूध पीने की कोशिश कर रही हैं ।

“यह बछिया मेरी है” वल्ली ने दावे से कहा ।

“यह तो सारी दुनियाँ में सबसे सुन्दर बछिया है ।”

“नहीं यह मेरी है” चंदू बोला । उनकी माँ बंगम्मा ने झगड़ा बंद करने के लिए यह निश्चय किया कि बछिया पूरे घर भर की है ।

इस तरह शुरू हुई मूंगा की कहानी । वह जल्दी ही बड़ी हो गयी और थोड़े दिनों में बच्चों से भी लम्बी और तगड़ी हो गयी । वह उनके साथ खेलती, कभी अपना मुँह उनके पीठ पर लगाती, और कभी वल्ली की चोटी चबा जाती या कभी अपनी पूंछ ऊँची कर सारे मैदान में दौड़ लगाती । बच्चे उसकी शरारत से बहुत खुश होते और उसे खूब प्यार करते ।

वल्ली जल्दी ही बड़ी होकर एक सुन्दर युवती बन गयी । उसके माँ-बाप ने उसकी शादी एक ऐसे किसान के लड़के से कर दी, जो उनके गाँव से बहुत दूर रहता था । वह दिन भी आया, जब वल्ली नयी नवेली दुल्हन बनकर अपने माँ-बाप, भाई और अपनी प्यारी बछिया से, जो अब गाय बन चुकी थी, विदा लेने आयी । सब लोग रो रहे थे । वल्ली अपने माँ-बाप से चिपट गयी, अपने भाई के गले लग गयी और अपनी बाहें मूंगा के गले में डालकर बोली- “चंदू, मेरी मूंगा की अच्छी देखभाल करना । वह कुछ कह नहीं सकती, पर देखो, इसकी आँखें बोलती हैं । कितनी दुःखी है वह ।

उसकी मालूम है कि मैं जा रहा हूँ।" मूँगा ने अपनी खुरदरी जबान से वल्लू के हाथ चाटे और इस तरह उन्होंने एक-दूसरे की विदायी ली ।

कई साल बीत गये । मूँगा शक्तिहीन और बूढ़ी हो चली । उसने दूध देना कम कर दिया और कुछ दिनों में बिल्कुल ही बंद । कान्हा और उसकी स्त्री के लिए भी बुरे दिन आ गये थे । उस साल वर्षा नहीं हुई थी और अनाज के दाम बहुत बढ़ गये थे । “हम ऐसी गाय को कैसे पाल सकते हैं, जो दूध नहीं देती ?” कान्हा ने पूछा । सब निरुत्तर थे । केवल कान्हा की स्त्री ने जवाब दिया- “हम इसे भूखा छोड़ भी तो नहीं सकते ।” कुछ दिन पश्चात् जब गोदाम में अनाज और भी कम हो गया तो यही सवाल कान्हा ने फिर पूछा । इस बार उसकी स्त्री ने कोई जवाब नहीं दिया । धीरे-धीरे गाय को चारा कम दिया जाने लगा और फिर वह दिन भी आया, जब गाय को खूँटी से खोलकर इधर-उधर चारे की खोज में भटकने छोड़ दिया गया । हर शाम को वह वापिस आ जाती, आँगन के दरवाजे खुलने की प्रतीक्षा करती, फिर निराश होकर सुबह-सुबह कूड़े के ढेर में रोटी के टुकड़े या सड़े-गले चावल की खोज में फिर चल देती । बरसात के दिन में उसे यहाँ-वहाँ कुछ घास मिल जाती पर जहाँ भी जाती वहाँ से भगा दी जाती थी । त्यौहार के दिनों में गाँव की स्त्रियाँ और बच्चे उसके सींगों पर फूलों का हार टंगा कर माथे पर टीका लगाते थे और गौमाता कहते थे । पर इस पूजा की क्या आवश्यकता थी, जब उसे भूख से छुटकारा नहीं मिलता था ! गाय दिनोंदिन कमजोर होती चली गयी । पहले चंदू मूँगा को याद कर लेता था और उस पर दया कर एक कैला या एक रोटी दे आता था । पर धीरे-धीरे उसने भी उस पर ध्यान देना छोड़ दिया । उसे सब लोग भूल गये । वह एकदम चुप होकर अपनी मूक, निरीह आँखों से उस घर को देखा करती, जो कभी उसका था । ऐसे ही भूली बिसरी वह एक दिन चल बसती, पर भाग्य से एक घटना घटी ।

चंदू की शादी पास के गाँव की लड़की से हुई थी और वह अपनी

वधू घर लाया था। घर में खुशियाँ मनायी जा रही थी। सब घर वाले वधू को देखने आये थे, पर वल्ली न आ सकी थी। चंदू को अफसोस था, क्योंकि वह चाहता था कि वल्ली उसकी स्त्री की प्रशंसा करे। उसी दिन गोधूलि की वेला में एक बैलगाड़ी दरवाजे पर आ खड़ी हुई और वल्ली एक हाथ में संदूक संभाले और दूसरे हाथ से अपनी लड़की को पकड़े उतरी। सब की खुशी की सीमा न रही। दीप जल उठे और आँगन में दावत की तैयारियाँ कर दी गयी। वल्ली ने अपना संदूक खोला और चंदू के लिए एक बढ़िया रेशम का कोट निकाला, अपने पिता के लिए एक नारंगी रंग का साफा, एक लाल रंग की साड़ी अपनी माँ के लिए और चाँदी का हार अपनी भाभी के लिए।

फिर उसने रंग-बिरंगी पोत की माला निकाली, जिसमें घुंघरू लगे थे और चंदू के सामने रखकर बोली- “सोचो चंदू, मैं ये किसके लिए लायी हूँ।” चंदू उसे देखकर हंसा और बोला- “इसे एक गाय के सिवा और कौन पहनेगा?” हाँ, और ये है भी उसी के लिए। ये अपनी गाय मूँगा के लिए है”- वल्ली ने उत्तर दिया और उठ गयी। उसने अपनी बच्ची का हाथ थामा और बोली- “चलो, मैं तुम्हें वह गाय दिखाती हूँ, जिसकी मैंने तुम्हें इतनी कहानियाँ सुनायी है।”

चंदू अपनी माँ की ओर हतबुद्धि होकर देखने लगा। माँ ने वल्ली को रोका और कहा- “वल्ली मूँगा हमको छोड़ गयी है।”

“पर क्यों?” वल्ली आश्चर्य से बोली। “वह तो हम सबको बहुत प्यार करती थी और यहाँ आराम से थी।”

किसी ने उत्तर न दिया। तब पिता ने उसको सच बता दिया। वल्ली रोने लगी और सामने रखा भोजन न खा सकी। उसकी माँ चिढ़कर बोली- “वल्ली तुम तो हृद से बाहर जा रही हो। मूँगा तो केवल जानवर है। हमको भी उसका दुःख है, पर मजबूरी थी। सब लोग ऐसा ही करते हैं।”

वल्ली ने जवाब नहीं दिया । उसने चंदू से पूछा- “चंदू, क्या तुमको याद है वह दिन, जब मैं विदाई ले रही थी ? मैंने तुमसे कहा था कि मेरी गाय की देखभाल करना । तुमने उसे भूखा मर जाने के लिए छोड़ दिया । याद नहीं, उसने हमको छोटपन में दूध दिया था ?”

उस रात चंदू को नींद नहीं आयी और देर तक वह करवटें बदलता रहा । उसे बड़ा पश्चाताप हो रहा था । उसने बड़ा नीच और घृणित काम कर डाला था । जिससे वह अपनी बहन और गाय का विश्वास खो बैठा था । उसे अवश्य कुछ करना चाहिए । वह खटिया से उठा बाहर चला गया । उसने संकल्प किया कि वह गाँव का कोना-कोना छान डालेगा और गाय को वापिस ले आयेगा । उसे भय था कि वह कहीं मर न गयी हो । चारों ओर अंधेरा था । कंटेली झाड़ियाँ उसके पैरों में चुभ रही थीं, पर उसने दर्द की परवाह न की । उसे केवल मूँगा को पाने की धुन थी । वह तो उसे रोज देखा करता था, पर वह अचानक गुम हो गयी थी । “जब किसी चीज की चाह होती है, वह कभी नहीं मिलती और जब उसकी जरूरत नहीं होती, तो वह बार-बार मिल जाती है ।” चंदू बड़बड़ाता रहा ।

कुछ घंटों बाद वह थक गया । वह कुएं के पास बैठकर दम लेने लगा । नींद ने उसे घेर लिया । उषाकाल में जब पास ही चरने की आवाज आयी तो चंदू की नींद खुली । उसकी पगड़ी खींची जा रही थी । चंदू खुशी से उछल पड़ा और उसके पास गया ।

पर उसकी खुशी दुःख में बदल गयी । मूँगा केवल ढांचा मात्र रह गयी थी । उसकी पसलियाँ बाहर निकल आयी थी और वह अपना सिर मुश्किल से उठा सकती थी । उसने उसे चारा दिया, जो वह चलते समय घर से ही सोचकर लाया था । अश्रुपूर्ण आँखों से उसने मूँगा को धीरे-धीरे चारा चबाते देखा । उसने पुचकार कर कहा- “वल्ली तुमको बुला रही है, चलो घर चलें ।” पथरीली सड़कों पर से वह बहुत धीरे-धीरे उसे घर तक ले गया ।

फिर उसने उसके लिए फाटक खोल दिया । वह कुछ झिझकी और चंदू की ओर उसने प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखा । फिर वह अन्दर चली गयी । चंदू ने उसके लिए चारा बिछा दिया । मूँगा ने उसकी ओर एहसानमंद होकर देखा और नीचे सुस्ताने के लिए बैठ गयी । इतने महीनों के भटकने के बाद आज वह फिर घर आ गयी थी । “ओह ! मैं कितना खुश हूँ” चंदू ने सोचा । एक बड़ा भार उसके मन से उठ गया था । सुबह जब वल्ली ने सुना कि मूँगा वापिस आ गयी है, तो वह मुस्कुरायी । उसने घंटीवाली पोत की माला गाय को पहना दी । “मूँगा बहुत बूढ़ी हो गयी है और बहुत कम खाती है । मैं जब जाऊँगी तब उसे साथ ले जाऊँगी ।” वल्ली ने कहा ।

“नहीं वल्ली” चंदू ने जवाब दिया- “यह तो मेरी है ।”

उन्होंने याद किया कि जब वह पैदा हुई थी तब वे उसके लिए कैसे लड़े थे । यह याद कर दोनों हंस पड़े ।

प्रश्नावली

(क) उत्तर लिखो-

1. मूँगा कौन थी ? उसका यह नाम क्यों पड़ा ?
2. वल्ली ने ससुराल जाते समय किसको मूँगा की देखभाल करने को कहा ?
3. वल्ली मूँगा के लिए क्या लाई ?

(ख) उचित वाक्य चुनकर पूरा करो-

चन्दू मूँगा को ढूँढ़कर घर ले आया क्योंकि.....

वह दूध देने लगी थी ।

उसके बिना उसका मन नहीं लगता था ।

वल्ली ने उसकी आँखें खोल दी थी ।

कान्हा ने उसे लाने को कहा था ।

(ग) पालतू पशु गाय पर एक अनुच्छेद लिखिए ।

पाठ बोध : पशु हमारे मित्र हैं, उनके प्रति कृतज्ञता का भाव रखना चाहिये ।



दो पंछी

दो पंछी जंगल में रहते थे। एक तोता था, चटक हरे रंग का, जिसकी लाल चोंच थी और दूसरी थी काली मैना। वे दोनों गहरे मित्र बन गये, क्योंकि उनकी उम्र समान थी। वे हमेशा साथ रहते थे। वे पेड़ों की पत्तियों में छुपा-छुपी खेलते थे और एक-दूसरे का उन झुरमुटों में पीछा करते थे। वे पानी में डुबकी लगाते और एक-दूसरे पर पानी फेंकते थे। जब उनको कोई रस्सी का टुकड़ा मिल जाता तो खींचातानी का खेल शुरू हो जाता। अंधेरे में वह पास-पास बैठते, क्योंकि उन्हें उल्लू और चमगादड़ों से डर लगता था। जब वे किसी घोंसले या फल के पीछे झगड़ा करते तो लगता कि दो शरारती बच्चे लड़ाई कर रहे हैं। उनके दिन ऐसे ही उछल-कूद से भरे थे।

एक दिन एक अजनबी आदमी पेड़ों के झुरमुटों से निकला और एक पेड़ की डाली के नीचे जा बैठा। दोनों पक्षियों ने अपनी पत्तियों में छुपी जगह से उसे देखा। शरारती तोते ने नीम का फल काटकर उसके सिर पर गिराया। उसने उसे झाड़ दिया। तोते ने एक फल और गिराया। अजनबी क्रोधित हो गया। इससे पक्षी और खुश हुए, उन्होंने कुछ फल और गिराये। वह आदमी उछलकर खड़ा हो गया। उसने अपनी नजर चारों ओर दौड़ायी और दोनों पक्षी को खुशी से चहचहाते देखा। वह एकदम चुपचाप होकर गहरे विचार में पड़ गया।

दूसरे दिन वह उसी पेड़ के नीचे आ गया। उसने चुपके से जाल फैलाकर चावल और गेहूँ के दाने डाल दिये। फिर वह छुपकर देखने लगा। तोता उड़कर नीचे आया और जाल पर बैठ गया। उसके पैर फंस

गये और वह उड़ न सका । आदमी झट दोड़कर आया और तोते का हाथ से पकड़कर बड़ी खुशी से हंस पड़ा और बोला, “मैंने तुम्हें पकड़ ही लिया, शरारती पंछी । मैं तुम्हारे लिए सुंदर पिंजड़ा बनाकर तुम्हें उसमें बंद कर दूंगा । मैं तुम्हें बोलना, नाचना और गाना सिखाऊँगा । हम मालामाल हो जायेंगे और तब सुंदर पंछी, मैं तुम्हारे लिए सोने की माला लूँगा ।” तोता चीखा और उसने अपने को आजाद करने की कोशिश की, पर वह आदमी बहुत ताकतवर था । इस तरह एक मासूम मजाक खत्म हो गया । बेचारा तोता पिंजड़े का पंछी बन गया और उसका नाम रखा गया ‘रंगा’ ।

शहर की एक धूलभरी गली में टीन की छत के नीचे उस आदमी ने पिंजड़ा लटका दिया । रोज का पाठ शुरू हो गया । एक हाथ में छड़ी और दूसरे हाथ में दाना लिए आदमी ने तोते को सिखाया- “कहिए, आप कैसे हैं ? वर्षगांठ मुबारक हो । चिंता न कीजिये, सब ठीक हो जायेगा ।” वगैरह-वगैरह । तोते ने सब बहुत जल्दी सीख लिया । वह गीत गाकर उस पर नाच भी दिखा सकता था । महीने भर बाद आदमी उसे बाजार के एक कोने में ले गया । बूढ़ी औरतें फूल लकड़कर उस पर चढ़ाने लगी और जवान औरतें उससे अपना हाथ पढ़ाने लगी । वह आदमी दिन-ब-दिन धनवान होता चला गया । थोड़े समय बाद तोते को इस खेल में कोई दिलचस्पी न रही । उसे अपने जंगल के घर की याद आने लगी । वह पिंजड़े में तड़पने लगा । उसे आकाश में घूमने की चाह होने लगी और बाजार के शोरगुल से उसे सिर्फ गुस्सा आने लगा । हँसी और तालियों की आवाज से उसकी तबियत घबरा गयी । उसके मालिक ने उसे सुस्ताने न दिया । उसके मालिक के पास बहुत पैसा इकट्ठा हो गया था, पर उससे उसका जी कभी भी न भरता था । तोते को अपनी मित्र मैना की याद आयी और वह उसके लिए बेचैन हो उठा । पर काश ! उसे देर से समझ आया कि वह केवल दास है और मुक्ति की कोई राह नहीं है । इसलिए सब से अच्छा यही है कि वह अपने जंगल के जीवन को भूलकर आदमी का कहना माने । पर वह कुछ भुला न

सका । रात में वह उसके सपने देखता और रोता था । उसने अपने मित्र की आवाज भी सुनी और वह रो पड़ा । उसने अपने मित्र को जवाब देना चाहा, पर उसका गला भर आया । वह बहुत सुस्त और उदास हो चला और वह चाहता था कि वह मर जाये ।



इसी बीच काली मैना अपने साथी को ढूँढती थी । वह जंगल में घूम-घूमकर उसे बुलाती थी, पर वह उसे न मिल पाता था । “मेरा मित्र, कहां है ? क्या तुमने हरे तोते को देखा है ?” उसने सब जीवों से पूछा । खरगोश, गिलहरी और हिरण बहुत अफसोस करते थे । बहुत दिन गुजर गये, पर मैना को तोते का पता न चला । एक दिन जब वह एक आम के पेड़ की डाल पर बैठी थी, उसने कुछ लड़के देखे, जो वहां सैर के लिए आये थे । एक ने कहा “मैं क्या कहूँ, मैंने तोते को नाचते और गाते देखा ।

आश्चर्यजनक पक्षी है ।” मैना तुरन्त अपने कान लगाकर सुनने लगी । एकाएक उसे आशा बंध गयी । कहीं यह तोता उसका मित्र तो नहीं है, जब लड़के अपने थैले लेकर जाने लगे तो उसने उनका पीछा किया । लड़के बाजार तक पहुंच गये । उसे डर तो लग रहा था । फिर भी उसने उनका पीछा न छोड़ा । गली के मोड़ पर उसने आदमियों की भीड़ देखी । औरतें और बच्चे हंस रहे थे और ताली बजा रहे थे । वह उनके जितने पास पहुंच सकती थी, पहुंच गयी । उसने लोगों की भीड़ के बीच एक तोते को गाते और नाचते देखा । बहुत खुशी के साथ उसने अपने मित्र, हरे तोते को पहचाना ।

अंधेरा हो चला था । भीड़ चली गयी तो आदमी ने तोते को पिंजड़े में डाला और उसे घर ले जाने लगा । “हाय, मेरे दोस्त ! तुमने कौन-सा पाप किया है ? कौन सा नुकसान पहुंचाया है ? तुम्हें जेल में क्यों डाला गया ?” मैना सोचने लगी । मैना नीचे आकर तोते से मिलना चाहती थी पर उसे पिंजड़े से डर लगता था । इसलिए वह पेड़ की एक डाल पर बैठकर तोते को देखने लगी । जल्दी ही वह आदमी वापिस आ गया, उसने पिंजड़ा उतारा और प्याले में पानी और कुछ खाना देने के लिए खिड़की खोल दी । एक काला कपड़ा जो पिंजड़ा ढकने के काम आता था, उसने पास रख दिया । इतने में मैना नीचे आयी और कपड़ा लेकर उड़ गयी । आदमी को बहुत आश्चर्य और क्रोध हुआ । वह मैना के पीछे चिल्लाता और गाली देता हुआ भागा । तोते ने जब यह देखा तो पिंजड़े की खिड़की खोल ली और अपने जकड़े हुए पंखों को तानकर खुशी से मैना से मिलने के लिए उड़ चला । चालाक मैना ने कपड़ा गिरा दिया । आदमी ने उसे उठाकर शैतान मैना को मुँह चिढ़ाया और घर लौट आया । पर उसने जब पिंजड़े की खिड़की खुली पायी तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ । रंगा ! रंगा !! तुम कहां हो ? तुमने अपने आपको कहां छुपा लिया ? शैतान ! मेरे पास आ जाओ, बेवकूफ

पक्षी ।” एस चिल्लाता गया, पर उसे कोई जवाब नहीं मिला । वह इधर-उधर भागने लगा और कोना-कोना दूँढ़ने लगा । सब पड़ोसियों ने उसे घेर लिया । कुछ ने उसकी मदद की और कुछ ऐसे ही हंसने लगे । इसी बीच मैना और तोता जंगल की ओर उड़ चले । उनके मित्र पक्षी और जानवर सभी ने उनका खुशी से स्वागत किया ।

तोते ने एक गाना गया जिसका भाव यह था-

“आह, गाओ आजादी के गीत गाओ,
 पंख फैलाकर उड़ जाने में,
 पत्तियों, फूलों और मधुमक्खियों के गानों में,
 पेड़ों से आती हवा के झोंकों में,
 जहाँ आजादी है, वहाँ है सुख,
 कोई न हो इससे विमुख । ”

प्रश्नावली

(क) रिक्त स्थान भरिए -

1. तोते ने अजनबी आदमी पर का फल गिराया ।
2. अजनबी आदमी ने फैलाकर तोते को पकड़ लिया ।
3. तोते के बिना बहुत दुःखी थी ।
4. आदमी ने तोते को सिखा दिया फिर उससे कमाने लगा ।

(ख) तोता मैना की मित्रता के बारे में कुछ वाक्य लिखिए ।

पाठ बोध :

पशु पक्षियों को सताना, उन पर अत्याचार करना
 अपराध की श्रेणी में आता है ।

करुणावान बालक - राजन

राजन का तेरहवाँ जन्म दिन था। राजन को बहुत आश्चर्य हुआ जब उसके पिता ने उसको एक बंदूक दी। बंदूक भी बाईस बोर राईफल थी, जो कि बड़े जानवरों को मार सकती थी।

“बेटा, तुम इसके लायक हो,” उसके पिता ने राजन से कहा। “तुम्हारे शूटिंग चैम्पियनशिप जीतने से मुझे बहुत खुशी हुई है। मैं तुम्हारी उम्र के लड़कों को ऐसा खतरनाक खिलौना कभी न दूँ पर तुम तो अकलमंद लड़के हो। मैं यह जानता हूँ कि तुम ध्यान रखोगे। अगले सप्ताह छुट्टियाँ शुरू होती हैं। मैं तुम्हें अपने साथ शिकार के लिये ले चलूँगा।

चमकती हुई राईफल की बैरल को देखकर खुशी से राजन का चेहरा लाल हो गया। वह सच था कि वह बहुत अच्छा निशानेबाज था, लेकिन यह सब उसके पिता के साहस का ही नतीजा था। उसके पिता भी एक कुशल शिकारी थे। उसके घर के हरेक कमरे में सजे हुए जानवरों की खाल और सिर इस बात के सबूत थे।

इस से पहले राजन को उसके पिता ने कभी भी शिकार के समय साथ जाने को नहीं कहा था। यह सोचकर कि वह भी पिता के साथ शिकार करने जायेगा, राजन बहुत खुश था। किंतु वह जानवरों को मारना नहीं चाहता था।

राजन ने पहले कभी भी जानवर नहीं मारा था, खाली निशाने पर शूटिंग और मिट्टी के कबूतर पर गोली चलाई थी। यह सच है कि एक बार उसने कौवे पर गोली चलाई थी, जो मुर्गियों को सता रहा था। कौवा उसी समय मर गया था। उसकी मौत से राजन पर कुछ असर नहीं हुआ था। अब बात कुछ अलग थी।

राजन ने जल्दी इस खयाल को छोड़ा और जन्म-दिन पर मिले हुए

तोहफे की बड़ाई करने लगा । “स्कूल का हर एक बच्चा उसकी राईफल देखकर जलन करेगा” यह सोच कर राजन को बहुत तसल्ली हुई । राईफल की खुशी में और जन्म-दिन मनाने की खुशी में उसकी बेचैनी दूर हो गई ।

स्कूल बंद होने के नजदीक के दिन जल्द बीत गये और एक सप्ताह बाद राजन अपने माँ-बाप और छोटी बहन के साथ छुट्टियों में सैर करने कश्मीर पहुँचा । तीसरे दिन उसके पिता ने उससे कहा- “कल सुबह हम लोग शिकार करने चलेंगे ।” “तुम्हारी माँ और कमला कैम्प में रहेगी” उसने राजन को बताया । “शिकार केवल मर्दों का खेल है । केवल तुम ही मेरे साथ चलोगे ।”

राजन बहुत खुश होता, मगर जानवरों को मारने का खयाल ही उसे बेचैन करने लगा । फिर भी वह चुप रहा । वह अपने पिता को, जो इतने माने हुए शिकारी और निशानेबाज थे, यह नहीं बताना चाहता था कि वह जानवरों को नहीं मारना चाहता ।

बहुत-सुबह, सूरज निकलने से पहले ही, राजन और उसके पिता, एक शिकारी और कुछ कुली साथ लेकर पहाड़ की पगडंडी पर चढ़ने लगे, कुली लोग उनका खाना और बंदूकें उठाये हुए थे । जैसे-जैसे सूरज चढ़ता गया, राजन आवाजें और नजारे देखकर इतना खुश हुआ कि अपनी बेचैनी भूल गया । चारों ओर चीड़ के पेड़ थे और उनकी साफ खुशबूदार हवा से राजन आनन्दित था । पेड़ों के बीच पहाड़ों की चोटियां बर्फ से चमक रही थी । प्रकृति के सुन्दर दृश्य जिसमें हवा संगीत से भरी, जल का बहाव, चिड़ियों का चह-चहाना, बुल-बुल का गाना और गोल्डन ओरीयल का संगीत राजन के मन को भा रहा था । राजन का दिल खुशी से फूला न समाया, मानो वह भी गाना चाहता हो ।

अचानक शिकारी ने रुकने को कहा । “साहब ! इसी जगह जानवर

पानी पीने आते हैं। हम यहाँ उनका इंतजार करेंगे। राजन को एक झटका सा लगा कि किस काम के लिये वह यहाँ आया था। इतने में उसके पिता ने उसके हाथ में राईफल दी और कहने लगा- “बेटा, बस हमें थोड़ी ही देर इंतजार करना पड़ेगा, लेकिन मुझे मालूम है कि जब वक्त आयेगा तो तुम मेरी इज्जत रखोगे।

राजन ने अपने पिता के हाथ से राईफल ले ली। उसने झिझक के साथ पिता से पूछा- “हम किसका शिकार कर रहे हैं?” “हिरन! यह एक छोटे किस्म का हिरन है। इसकी खाल से सुंदर कोमल दस्ताने और बटुवे बनते हैं। हम तुम्हारी माँ के लिये श्रीनगर में बनवायेंगे।” राजन का दिल बैठ गया। अगर वह आक्रमण करने वाली चिड़ियों को मारता तो उसे बुरा न लगता, किन्तु छोटे हिरन को मारना, उसे पसंद नहीं था।

उसके पिता ने राईफल में गोली भरी और समझाया- “ये लो, अब तुम्हारे हाथ में है कि तुम अपने पिता का गुण अपनाते हो कि नहीं।” पिता ने तो हँसकर कह दिया। राजन के लिये यह बहुत बड़ी बात थी। उनको अधिक देर इंतजार नहीं करना पड़ा। अचानक पेड़ों के बीच में से एक हिरन बहुत सुन्दर चाल से उथल-पुथल जमीन से पहाड़ी तालाब की तरफ चलता हुआ सामने आया। एक पल के लिये वह रुक़ा। दोनों की ओर घूरकर देखते हुए, हवा के उल्टे रुख के कारण उसके मन में कोई संशय नहीं था।

जिसके इंतजार में राजन खड़ा था, उसी सुन्दर कोमल नादान जानवर को देखकर उसका दिल भर आया। अचानक जोर का धमाका हुआ और हिरन जमीन पर गिर पड़ा। जल्दी से भीड़ इकट्ठी हो गई। राजन जानवर के पास सबसे पहले पहुँचा। वह चुपचाप पड़ा था, और उसकी बुझती हुई आँखों ने राजन की आँखों को देखा, जिससे राजन के दिल में एक गहरी सी चोट पहुँची।



“शाबाश ! तुम्हारी माताजी के बटुवे के लिये बहुत अच्छी खाल है । अब उसके दस्तानों के लिये प्रबंध करना तुम्हारे हाथ में है ।” इस सन्नाटे में पिता की आवाज गूंज उठी । राजन ने कुछ नहीं सुना ।

राजन को हिरन की बुझती हुई आँखों ने एक दृश्य की याद दिलाई, जो उसने बचपन में देखा था । हाँ ! एक फिल्म थी, जिसका नाम बेम्बी था । जब वह आठ साल का था तो उसकी माँ ने उसको दिखायी थी । इस सिनेमा में बेम्बी की माँ की आँखें मरते समय वैसी ही थी, जैसी कि कोमल खाल वाले हिरन की ।

राजन की आँखों में दर्द हो रहा था । उसने आँसू रोकने की कोशिश की क्योंकि वह चाहता था, कि उसका पिता इस कमजोरी को देख न सके । उसके पिता ने उसको बहादुर कहकर बुलाया और वह डरपोक बच्चा नहीं बनना चाहता था ।

राजन फिर छुप गया । इस बार भी उन्हें अधिक देर इंतजार नहीं करना पड़ा । एक दूसरा हिरन जो पहले से भी छोटा था, उन्हीं पेड़ों के बीच से पानी की तरफ जाता दिखाई दिया । वह पास आता गया ।

राजन ने पिता की आवाज सुनी- “तैयार हो जाओ ।”

उसने राईफल कंधे पर उठाई । “अब गोली चलाओ ।”

पल भर के लिए राजन झिझका । फिर राईफल उठाई और ट्रिगर को दबाया । जोर की आवाज हुई । हिरन के सिर से बचकर गोली निकल गई । डरा हुआ जानवर जंगल की तरफ भाग निकला ।

“राजन !” उसका पिता गुस्से भरी आवाज से बोला- “इतना आसान निशाना कैसे चूक गये । तुम्हें क्या हो गया ?”

पिता की मायूसी को न सहन करके राजन ने नजर नीचे कर दी । फिर उसने अचानक राईफल नीचे फेंक दी और जिस रास्ते वे आये थे, उसी ओर नीचे भाग गया ।

तीन घंटे के बाद उसकी माँ ने देखा कि राजन कैप के बाहर पेड़ों के नीचे बड़ा घबराया हुआ खड़ा था ।

बड़ी उत्सुकता के साथ चिल्लाकर माँ बोली- “राजन् क्या हुआ ? तुम्हारे पिताजी कहाँ है ?”

राजन् ने जवाब दिया- “उधर ही कहीं,” इशारा करते हुए घृणा से बोला- “जानवर मार रहे हैं ।”

“उसका दुःखी चेहरा देखकर माँ बोली, “क्या बात हो गई है ?”

माँ ने उसको गले लगाया और राजन की आँखों से आंसू बहने लगे । उसने सिसकते हुए कहा- “माँ, मैंने पिताजी को बुरी तरह से मायूस किया है । वह चाहते थे कि मैं तुम्हारे दस्ताने के लिए हिरन को मार दूँ ।

जब वह सामने आया तो मुझे बैम्बी की याद आ गई । मैं उसे नहीं मारना चाहता था, और मैं जानबूझ कर निशाना चूक गया । मैं अपने पिता की तरह जानवरों को मारना नहीं चाहता ।

मुझे दीवारों के ऊपर के सिर, शेर की खाल और बनाये हुए भालू रखे हुए बिल्कुल पसन्द नहीं । मुझे जिन्दा जानवर अच्छे लगते हैं, उनको पालना अच्छा लगता है, और उनकी तस्वीरें अच्छी लगती हैं । मुझे मालूम है, इसके लिए पिताजी बहुत नाराज हैं, परन्तु मैं उन्हें कभी समझा नहीं सकूंगा ।

माँ ने हमदर्दी से राजन को गले लगाया और कहा- “प्यारे बेटे ! चिंता मत करो । मैं तुम्हारे पिता को समझा दूंगी ।”

काफी रात होने के बाद राजन के पिता कैम्प में वापस आये । राजन अपने बिस्तर में सो चुका था । सारे दिन की थकावट से वह चूर हो गया था । उसके माता-पिता बाहर बैठकर लम्बी बातचीत करते रहे । जो कुछ उसकी माँ ने कहा, उसका पिता उसके बारे में बैठा सोचता रहा । धीरे से उठा और कहने लगा- “मैं जाकर देखता हूँ कि राजन अभी सोया है कि नहीं । मैं उसे ‘गुड नाईट’ कहना चाहता हूँ ।” मगर राजन सोया नहीं था । उसने लज्जा भरी आँखों से अपने पिता को टैन्ट में आते देखा ।

“पिताजी मुझे माफ कर दो ।”

उसके पिता ने प्यार से अपने दोनों हाथ बेटे के गालों पर रखे और उसके पास बैठ गया ।

“नहीं राजन ! माफ़ी मुझे मांगनी चाहिए । मैं चाहता था कि तुम भी मेरी तरह शिकारी बनते, मगर हर मनुष्य अलग स्वभाव का होता है और हरेक को अपनी बुद्धि और पसंद का काम करना चाहिये ।

तुम्हारी माँ ने कहा है कि तुम डरते हो कि मैं तुमसे नाराज हो जाऊंगा । मैं थोड़ा मायूस जरूर हूँ कि तुममें अपनी बुद्धि से काम लेने की

हिम्मत है ।”

“पिताजी इसका मतलब आप मुझ से नाराज नहीं है ?” राजन ने पूछा ।

“नहीं बेटा । तुमने मुझे बहुत कुछ समझने में सहायता की । मैंने जिस दुकान से राईफल खरीदी थी, उस दुकान में कैमरा भी है । राईफल वापस देकर कैमरा खरीद लूंगा । क्या तुम खुश हो ?”

“ओ हो ! पिताजी मैंने आपको गलत समझा कि आप उस निशाना चूकने के बाद मेरे साथ बहुत क्रोधित होंगे ।”

उसके पिता ने राजन को गले लगाया और कहा- “हम दूसरों को अपनी इच्छा के अनुसार नहीं बना सकते । जैसे भी तुम हो, मुझे अच्छे लगते हो ।” पिता ने खड़े होकर लैम्प बुझा दी ।

“गुड नाइट राजन ! अच्छी तरह सो जाओ । तुम वैसे शिकारी नहीं बन सकते, जैसा मैंने सोचा था । अगर दूसरी तरह सोचो तो तुम अधिक अच्छे खिलाड़ी हो ।”

राजन को अपने पिता की बात अच्छी तरह समझ में नहीं आई । फिर भी वह समझ गया कि वह इतना असफल नहीं रहा है ।

प्रश्नावली

उत्तर लिखिए -

1. राजन को अपने तेरहवें जन्मदिन पर पिता से क्या तोहफा मिला ?
2. राजन किस-किस के साथ सैर करने कश्मीर गया ?
3. उन्होंने जंगल में किस जानवर का शिकार किया ?
4. राईफल को लौटाकर दुकान से क्या खरीदने की बात हुई ?

पाठ बोध : अपने दिल की आवाज, ईश्वर की आवाज है, उसे दबाना उचित नहीं ।

आजादी

अर्जुन खन्ना को जानवर बहुत प्यारे लगते थे। वह हमेशा हर दुःखी जानवर की मदद करता था। जो भी बैलगाड़ी वाला, तांगे वाला जानवर को मारता हुआ दिखाई देता, उसकी रपट जीव दया मंडल में लिखाता और इसी काम में अपना आधा समय व्यतीत करता।

वह अपने माता-पिता और छोटी बहन के साथ दिल्ली में रहता था। उसको बहुत दुःख था कि उसके माता-पिता उसको एक कुत्ता नहीं पालने देते थे क्योंकि वे एक फ्लेट में रहते थे।

अपनी खुशी के लिये अर्जुन ने कुछ कबूतर पाल रखे थे, जो एक पिंजड़े में रहते थे, क्योंकि खुला छोड़ने से घर की छत पर घूमने वाली बिल्लियां उन्हें मार देती। अर्जुन अपने कबूतरों को बहुत प्यार करता था। हर रोज वह उनको नहलाता, उनके साथ खेलता, उनको साफ पानी पिलाता और उनके पिंजरे में सूखी रेत डालकर रखता था।

एक दिन उसके पिता ने अर्जुन से कहा- “तुम्हारी माँ के साथ मैं कोने वाले घर के लोगों के साथ चाय पीने जा रहा हूँ। तुम्हारे चाचा उनको जानते हैं। उनके दो बच्चे हैं, मेरे खयाल में तुम भी हमारे साथ आओ।”

अर्जुन ने साफ कपड़े पहने और बालों की कंघी की। वह माता-पिता के साथ चल पड़ा। दोनों बच्चों को देखकर अर्जुन मायूस हुआ, क्योंकि एक बच्चा दो साल का था, और दूसरा बच्चा जो उसकी उम्र का था, वह लड़की थी। उसको और भी बुरा लगा कि लड़की पंगु होने के कारण एक लंबी कुर्सी पर लेटी थी, जो न दौड़ सकती थी, न खेल सकती थी।

मौका मिलने पर उसकी माँ ने उसके कान में कहा- “तुम अच्छे लड़के हो। जाओ उससे बात करो। इतनी उम्र के बच्चे के लिये कुर्सी में बंधे रहना, एक कैदी की तरह बड़ा कठिन है।

अर्जुन एक दयालु लड़का था, किन्तु वह अभी समझ नहीं सकता था कि उस पंगु लड़की से क्या बात करें। वह खुश हो गया कि लड़की ने स्वयं ही अपने बचपन के फोटो दिखाना शुरू कर दिया और अर्जुन बातचीत शुरू करने से बच गया।

अर्जुन यह जानकर हैरान हो गया कि एक साल पहले, जब उसे पोलियो नहीं हुआ था, नीलम बड़ी ताकतवर और चुलबुली लड़की थी। अधिकतर चित्रों में वह घोड़े पर सवार और हरडल से कूदती हुई दिखाई दी। इन फोटो में एक सुनहरे रंग का लैबरडोर कुत्ता जिसका नाम रैक्स था, उसके साथ हमेशा रहता था।

अर्जुन ने प्रशंसा करते हुए कहा- “कितना प्यारा कुत्ता है। अब वह कहाँ है?”

नीलम ने उदासी से कहा- “मैंने उसे एक अच्छे घर में दे दिया।”

“क्या, दे दिया?” हैरानी से एकदम बोला, “किंतु क्यों? तुम उसे नहीं रखना चाहती थी।”

“बेशक” नीलम की आवाज में गुस्सा भरा था। जब से मैं इस हालत में हूँ मैं उसे घुमा नहीं सकती थी। इसलिये मुझे दे देना पड़ा। अगर मैं उसे खुश नहीं रख सकती थी तो मेरे लिये उसको रखना ठीक नहीं था।

अर्जुन ने शक की नजर से उसको देखा, “तुम तो उसको प्यार करती थी। सचमुच वह तुम्हारे पास रह कर खुश रहता।”

नीलम ने गुस्से से जवाब दिया, “तुम नहीं समझते। मैं उसे प्यार अवश्य करती थी किंतु मैं उसको एक कैदी की तरह नहीं रखना चाहती थी। तुम कभी कैदी नहीं रहे। इसलिए तुम्हें क्या मालूम कि खुली जगह में मीलों भागना, नदी में पानी से खेलना, धूप में इधर-उधर भागदौड़ करना और इस सबके बाद एक कमरे में सारा समय बंद रहना कितना कठिन

है । शायद तुम इसको समझ नहीं सकते क्योंकि तुमने इसकी कोशिश नहीं की । मैं जानती हूँ क्योंकि मैंने यह सब देखा है ।

अर्जुन ने माफ़ी मांगते हुए कहा, “मैं अब समझ गया हूँ कि तुम्हारे कहने क्या मतलब है । तुम उसको इतना प्यार करती थी कि तुम चाहती थी कि तुम उसकी अच्छी तरह देखभाल करती । जब तुमने यह महसूस किया कि तुम यह नहीं कर सकती, तुमने उसको दे दिया ।

“बस यही बात थी” कहते हुए नीलम ने एक लम्बी सांस ली और एलबम बन्द कर दिया ।

उसी रात अर्जुन ने एक अजीब सपना देखा । उसने देखा कि वह चमकते हुए नीले आकाश में हवा की तरह उड़ता चला जा रहा है । उड़ते हुए उसने पेड़ों और घरों की छतों को देखा और खुशी से चक्कर काटता रहा । यह बेशक जीवन की आजादी थी । अचानक वह दृश्य बदल गया । अब वह एक पिंजरे की फर्श पर जिस पर रेत पड़ी थी, बैठा हुआ था । जिस पक्षी के बारे में वह सोच रहा था, उसकी शकल उससे मिलती थी, जो उसके पास बैठा था ।

अपने पंख खोलते हुए उसने फिर ऊपर उड़ने की कोशिश की किंतु पिंजरे ने नीचे ढकेल दिया । वह हैरान हुआ । कुछ देर से वह समझा कि वह कहाँ था । अर्जुन अपने ही कमरे में था और एक लड़का जिसकी शकल उसके साथ बहुत मिलती थी पिंजरे की ओर झुक रहा था । वह लड़का कहने लगा, “देखो मैं कितना अच्छा पिंजरा लाया हूँ । तुम्हारे पुराने पिंजरे से यह दुगना बड़ा है । तुम्हें इसमें खुश होना चाहिये ।”

“क्या इतनी खुशी एक पिंजरे में ?” अर्जुन खीझकर बोला ।

उदास होकर उसने अपने पंख छटपटाये । उसकी आँखें खुली और उसने देखा कि वह तो अपने बिस्तर के कपड़ों से ही उलझा हुआ है ।



अर्जुन जल्दी से बिस्तर से कूदा और सीधा बरामदे की ओर भागा । कबूतर के पिंजरे के पास पहुंचकर उसने देखा कि कबूतर काफी देर बंद रहने के कारण थके हुए एक कोने में ऊंघ रहे थे ।

अर्जुन उनकी ओर झुका और कोमलता से बोला, “बेचारे, मैं अभी तक यह समझ न सका कि पिंजरे में बंद रहना कैसा होता है । लेकिन अब मैं तुम्हारे लिये सब ठीक कर दूंगा ।”

वह फोन के पास पहुँचा और एक नंबर मिलाया । एक लड़के ने जवाब दिया । अर्जुन ने जल्दी से कहा- “एक दिन तुम मुझसे कह रहे थे

कि तुम मेरे कबूतर दौड़ के लिये अपने कबूतरों के पास रखना चाहते हो। तुम उन्हें ले सकते हो। मुझे जल्दी से जवाब दो, क्योंकि कहीं मैं इरादा न बदल दूँ।”

दूसरी तरफ से जवाब मिला- “मैं ले लूँगा” और कबूतरों को लेने के लिये उसी समय प्रबंध किया गया।

अर्जुन जैसे ही रिसीवर रख रहा था, उसकी माँ अंदर आ गई।

“यह मैं क्या सुन रही हूँ? तुम अपने कबूतर दे रहे हो?” माँ ने हैरानी से पूछा। “सचमुच क्या तुम इनसे तंग आ गये हो। मैंने तो समझा था कि तुम इनको बहुत प्यार करते हो।”

“इसी कारण दे रहा हूँ।” अर्जुन ने उदास भरी आवाज में जवाब दिया। “मैं उन्हें बहुत प्यार करता हूँ। इस कारण मैं उन्हें सारी जिंदगी कैदी की तरह नहीं रखना चाहता। मैं अभी समझा हूँ कि कैदी बनना कैसा होता है। विनोद के यहाँ यह सब आजादी से रहेंगे, जैसे बाकी चिड़ियाँ रहती हैं। मैं अब इनका जेलर नहीं बना रहना चाहता।

प्रश्नावली

(क) उत्तर लिखिए -

1. पोलियो होने से पूर्व की नीलम के बारे में कुछ वाक्य लिखो।
2. अर्जुन ने अपने कबूतरों को क्यों दे दिया?
3. नीलम ने अपने कुत्ते को क्यों दे दिया?

(ख) रिक्त स्थान भरिए -

1. अर्जुन ने सपने में अपने आप को में कैद देखा।
2. अर्जुन ने कुछ पाल रखे थे।
3. नीलम के पास कभी रैक्स नाम का लैबरडोर हुआ करता था।

पाठ बोध : यदि आप किसी से प्यार करते हैं तो आपको अपनी खुशी से ज्यादा उसकी खुशी का ध्यान रखना चाहिए।

सिल्वर मेडल

“दलीप ! दलीप ! चिल्लाता हुआ श्रीप्रकाश टेलीफोन रखकर बगीचे में बेटे को ढूँढने निकला ।

“पिताजी मैं आ रहा हूँ” दलीप बोला और घास के ऊपर से भागकर पिता के पास पहुँचा ।

प्रकाश बोला- “मैं तुम्हें एक खुश खबरी सुनाना चाहता हूँ, मैंने अभी सुना है कि तुम अपनी सभी परीक्षाओं में पास हो गये हो । मैंने एक पिल्ले के लिये वादा किया था, वह तुम्हें मिल जायेगा । मैंने पशु दया मंडल (S.P.C.A.) के डॉ. सिंह को फोन कर दिया है । वे कहते हैं कि पिल्ला अपनी माँ के बिना रहने के काबिल हो गया है और तुम उसे अभी जाकर ला सकते हो ।”

दलीप की खुशी का ठिकाना न रहा और पिताजी को धन्यवाद करके कहने लगा, “मैं अभी जाकर ले आता हूँ ।”

बिना देर किये दलीप बगीचे से कूदा और एक मिनट में गेट के बाहर चला गया । सड़क के किनारे उसकी अपने चचेरे भाई मोहन के साथ टक्कर हुई, जो अपने गेट से बाहर आ रहा था ।

“ठहरो ! देखो ! तुम कहाँ जा रहे हो ? इतनी जल्दी क्या पड़ी है ?”

दलीप बोला- “मैं परीक्षा में पास हो गया हूँ और पिताजी मुझे एक पिल्ला दे रहे हैं, जो जीव दया मण्डल के अस्पताल में हैं ।

इसमें इतना ज्यादा खुश होने की कोई बात नहीं है । मैं भी तो वहीं जा रहा हूँ । वहाँ एक और पिल्ला बचा है । मेरे पिताजी मुझे कब से कह रहे हैं कि हमें चोरों से बचने के लिये एक कुत्ता रखना चाहिये । मैं भी उसे लेने जा रहा हूँ । मोहन ने अपने रास्ते में पड़े पत्थर को गुस्से से पीछे

हटाया । “यह बेकार ही मुसीबत है । मैं तो सुबह टारजन की फिल्म देखने जा रहा था । अब वह भी रह गई ।”

दलीप ने मदद करने की कोशिश की और कहा- “मैं तुम्हारे लिये पिल्ला ले आऊँगा ।”

“नहीं । मैं खुद ही जाता हूँ, क्योंकि पिताजी नाराज होंगे ।” मोहन ने जवाब दिया और जलाभुना साथ चल पड़ा ।

अस्पताल पहुँचकर दलीप दोनों पिल्लों को देखकर फूला न समाया ।

इशारा करते हुए डॉ. सिंह ने दलीप को बताया- “यह स्लेटी बालों वाला पिल्ला तुम्हारे पिता ने चुन रखा है । देखने में यह बहुत अच्छा कुत्ता है ।”

“और मेरा क्या अच्छा नहीं है ? ” मोहन ने कुढ़ते हुए पूछा । “क्या हमें कम अच्छा मिलेगा ?”

डॉ. सिंह ने तेजी से जवाब दिया- “बिल्कुल नहीं । तुम्हारा पिल्ला भी उतना ही अच्छा है । सिर्फ रंग अलग है ।” और उसने कुछ निशानों वाला काला पिल्ला दिखाया । “जैसे ही यह बड़ा होगा यह निशान और गहरे हो जायेंगे ।”

उसने दोनों लड़कों को एक-एक पिल्ला दे दिया और कहने लगा- “क्योंकि तुम दोनों ने कभी पहले पिल्ला नहीं पाला है । मैं इसके बारे में बताना चाहता हूँ, कि इसको किस तरह रखना चाहिये । सबसे पहले हर एक कुत्ते के लिए एक टोकरी होनी चाहिए जिसमें वह हर वक्त घुस सके । सर्दी में इसमें एक कम्बल होना चाहिए । उस कम्बल को धूप लगाना जरूरी है ।”

“मेरे पास टोकरी और कम्बल बिल्कुल तैयार है” दलीप ने शौक से कहा ।

“बहुत अच्छा” डॉ. सिंह ने कहा । “हर एक कुत्ते को व्यायाम के

लिये दिन में एक या दो बार घुमाना चाहिये । वह अकेला कभी बाहर नहीं जायेगा और न ही उसे सारा दिन बाँधने की सख्त गलती करना । कुत्ता भी हमारी तरह अकेलेपन से घबराता है और उसकी सेहत के लिये भी खराब है ।”

“मेरा कुत्ता कभी भी सारा समय बंधा नहीं रहेगा” दलीप ने जल्दी से कहा । “मेरे पिता को बांधना अच्छा नहीं लगता । जब मैं स्कूल में रहूँगा वह मेरे परिवार के साथ होगा । जब मैं घर आ जाऊँगा तब मैं उसे अपने पास रखूँगा ।”

“बहुत खूब ।” डॉ. सिंह ने अब उसके खाने के बारे में बताया— “उसे वक्त पर और पौष्टिक खाना देना चाहिए । इन उम्र के पिल्लों को दिन में कम से कम पाँच बार खाना मिलना चाहिये । यह सिलसिला जारी रखो जब तक कि वह तीन महीने के नहीं हो जाते । तुम्हारे कुत्ते के लिये खाने और पानी पीने के लिये एक अच्छी प्लेट होनी चाहिये । कोई फायदा नहीं कि उसे रोटी का टुकड़ा और बचा हुआ खाना फेंकते रहो । मेरे पास छोटी-छोटी किताबें हैं जिनमें पिल्लों की देखभाल के बारे में बताया गया है ।

उसने दोनों को एक-एक किताब दे दी । दलीप ने तो बड़े शौक से ली, पर मोहन ने कुढ़ते हुए ।

जैसे ही दोनों लड़के गये, डॉ. सिंह ने लम्बी साँस ली । वह फुसफुसाये, “प्रकाश का बेटा कितना अच्छा लड़का है किंतु वह दूसरा लड़का जिस पिल्ले को ले गया है, न जाने उसे कैसे पालेगा और काला चितकबरा पिल्ला भी लम्बी साँस लेता अगर वह जानता कि उसके साथ क्या होगा ।

छह महीनों के बाद दोनों पिल्लों को कोई भी नहीं पहचान पाता था । दलीप का कुत्ता जिसका नाम सिल्वर था, बहुत होनहार और चुस्त

नजर आता था । उसकी चमकती हुई घनी खाल थी, चमकती हुई बुद्धि से भरी हुई आँखें थी ।

मोहन अपने कुत्ते को बगीचे में एक खम्बे के साथ बांधे रखता था । उसने पिल्ले का कोई नाम नहीं रखा था और न ही उसका कोई ध्यान रखता था । उसकी खाल पतली, गंदी, कीड़ों से भरी, पूंछ दुबकी हुई और उसके मुँह पर एक उदासी की झलक थी, मानों उसे किसी ने कभी प्यार न किया हो, उस पत्थर से बंधा हुआ वह कुत्ता अपने भाई को कभी-कभी देखता कि उसकी देखभाल कितनी अच्छी होती है, वह खुशी से घूमने जाता था और भरपेट पौष्टिक आहार दिया जाता था । अपनी जंजीर को खींचते हुए वह दूसरे कुत्ते के पास जाना चाहता था किंतु उसके दुःख भरे रोने का कोई ध्यान नहीं करता था ।

“तुम अपने कुत्ते को कभी बाहर घुमाने क्यों नहीं ले जाते ? एक दिन दलीप ने अपने भाई से पूछा ।

“मुझे परवाह नहीं” जवाब मिला । “वह तो गाय और भेड़ को भगाता फिरता है ।”

“तब तुमने उसको अच्छी तरह नहीं सिखाया” दलीप ने जवाब दिया । “सिल्वर कभी भी ऐसी बात नहीं करेगा” दलीप ने कहा ।

साथ ही साथ दोनों लड़के नदी के किनारे चलते हुए अपने घर आ रहे थे । सिल्वर खुशी से पानी में कभी कूदता, कभी बाहर निकलता ।

थोड़ी दूर पर कुछ जंगली बतखें उड़ती हुई नीचे आई । पानी के किनारे-किनारे नीचे उतरी । मोहन ने स्वाभाविक ही एक पत्थर उठाया और बाजू उठाई उनको मारने के लिये ।

“नहीं मोहन ! नहीं ! दलीप चिल्लाया और आगे बढ़ते हुए उसने अपने भाई की बाजू पकड़ ली ।

मोहन ने गुस्से से मुड़कर उसकी बाजू को धक्के से पीछे हटा दिया ।

दलीप इतनी तेजी से हिला था कि उस फिसलने वाली जमीन पर गिर पड़ा और मोहन पानी के साथ जा टकराया ।

दलीप एक पल के लिये हक्का-बक्का रह गया । मोहन पानी के नीचे गायब हो गया था । अचानक दलीप को याद आया कि उसका भाई तैरना नहीं जानता । यह सिल्वर ही था, जो जल्दी से नदी में कूदा । वह मोहन की जान बचाने के लिये तड़प रहा था ।

“शाबाश सिल्वर ! उसको पकड़े रहो । मैं आ रहा हूँ” दलीप हौसले से ओत-प्रोत नदी के किनारे की ओर भागता हुआ चिल्लाया ।

आखिर उसने अपने भाई की हिलती हुई बाजू को पकड़ लिया ।



“ठहरो ! चुपचाप रहो ! मुझे पकड़े रखो !” दलीप ने आज्ञा दी । किसी तरह उसने और सिल्वर ने मिलकर भीगे हुए लड़के को किनारे

लगाया । मोहन डर के मारे कुछ भी न कह सका । वह बिना कुछ कहे एक गंदे पानी की लकीर छोड़ते हुए घर की ओर भाग गया ।

दलीप ने अपने गीले और कीचड़ से भरे हुए कपड़ों को और सिल्वर के चूते हुए कोट को देखा । “हमें थोड़ी देर रुक जाना चाहिए ताकि हम सूख जायें” उसने सिल्वर से कहा- “ अगर इसी तरह वापस गये तो हम घर को बुरी तरह गन्दा कर देंगे ।”

वह घास के ऊपर सिल्वर के साथ बैठ गया । वह दोनों सूख गये तो एक छाया दिखाई दी । उसने उठकर देखा कि मोहन का पिता खड़ा उनकी तरफ देख रहा था ।

दलीप उठा और डरने लगा कि उसे डांट न पड़ जाये । उसके चाचा हँसने लगे, “मैंने सुना है कि तुमने और तुम्हारे कुत्ते ने मिलकर मेरे शैतान बेटे को डूबने से बचाया । वह एक बहुत सुस्त लड़का है । अब तक उसे तैरना सीखना चाहिये था । थोड़ा सा गीलापन उसे कोई नुकसान नहीं करेगा । दलीप यह तुम्हारी ही हिम्मत है, नहीं तो अब तक वह नीचे मिट्टी में पड़ा हुआ होता । मुझे तुम्हें कुछ पुरस्कार देना चाहिये । तुम्हारे इस काम के लिये और उस कुत्ते को भी । उसे क्या अच्छा लगेगा ?

“हमें कोई पुरस्कार नहीं चाहिये दलीप कहने ही वाला था कि अचानक उसके दिमाग में एक बात आई कि क्या सचमुच ही उसके चाचा हम दोनों को कुछ देना चाहते हैं ।

उसने झिझकते हुए कहा- “चाचाजी आपकी बहुत कृपा है । हमें कुछ पुरस्कार नहीं चाहिये ।” वह चुप ही हो गया क्योंकि वह यह नहीं जानता था कि अब क्या कहूँ ।

“बोलो बेटा ! शर्माओ मत । अगर तुम ऐसी कोई चीज चाहते हो, तुम बिना हिचके बता दो ।”

“अच्छा, इस सिल्वर का भाई मांगता हूँ” दलीप ने सांस रोकते हुए कहा। “आप का कुत्ता, मोहन उसको नहीं रखना चाहता और मैं जानता हूँ, कि चाची को भी कुत्ता पसंद नहीं है। इसीलिए मैंने सोचा कि शायद आप दे दें।” उसका चाचा हँसा और बोला- “मैं नहीं भी दे सकता था किंतु तुमने मेरे लिये जो कुछ किया है, उसके बाद मैं इंकार नहीं करूँगा। तुम इसको जरूर ले लो दलीप। मेरे पास समय नहीं कि मैं उसकी देखभाल करूँ और जैसा तुम्हें मालूम है कि बाकी परिवार कुत्तों को पसंद नहीं करता। तुम अभी आकर सीधे उसे ले जाओ।”

“मैं उसे मेडल बुलाऊँगा” दलीप ने खुशी से अपने चाचा के पीछे-पीछे जाते हुए कहा।

“मेडल ! यह तो कुत्ते के लिए बड़ा अजीब सा नाम है। मेडल क्यों ?

“क्योंकि मुझे अपने भाई का जीवन बचाने के लिए यह मेडल दिया गया है” दलीप ने समझाया। “इस के अलावा सिल्वर और मेडल दोनों मिलते-जुलते हैं।” दस मिनट के बाद सिल्वर और मेडल ने सड़क पर दौड़ लगाई। मेडल जान गया कि आखिरकार उसके सपने पूरे हो गये हैं।

प्रश्नावली

(क) SPCA का हिंदी में पूरा नाम लिखिए।

(ख) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये-

1. कुछ निशानों वाला पिल्ला मोहन को मिला।
2. दलीप उत्साह के साथ पिल्ला लेने गया जबकि..... मजबूरी में।
3. कुत्ते को सारे दिन बाँधे रखना है।

(ग) यदि आपको पिल्ला मिले तो आप उसकी देखभाल किस तरह करेंगे।

पाठबोध :

हमें अपना कर्तव्य मन लगाकर भलीभाँति पूर्ण करना चाहिए।

कुन्दन की दया

धूप चमक रही थी। पेड़ की टहनी पर एक बुलबुल, जिसका नाम बिलीबु था, चह-चहा रही थी। उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। उसके घोंसले में जो चार अंडे थे, अब उनमें से बच्चे निकल आये थे।



बिलीबु, जो पिता बन चुका था, खुशी-खुशी बच्चों के लिए खाना ढूँढने के लिए घर से निकला। माँ बिलीबु भी बहुत प्रसन्न थी। उसकी इतने दिनों की मेहनत सफल हुई। दोनों सारा दिन अपने बच्चों के लिए इधर-उधर से खाना लाते रहे। वे इतने खुश थे कि उन्हें कोई थकान महसूस नहीं हुई। जैसे ही शाम हुई माँ-बाप नदी के किनारे पेड़ पर बैठकर खुशी से गाना गाने लगे। उसी समय शिवराम जो कि बिस्कुट बनाने वाले का बेटा था,

अपनी गुलेल के साथ आ पहुँचा। जैसे ही उसने बुलबुल की आवाज सुनी, अपनी गुलेल से कसकर पत्थर मारा। पापा बिलीबु को पत्थर लगा और वह नीचे गिर पड़ा।

माँ बिलीबु ने यह सब तमाशा देखा किन्तु वह कुछ भी न कर सकी। कोई और भी यह सब देख रहा था। वे थे कुन्दन और उसका मित्र विनोद जो स्कूल से विनोद के घर उसके जन्म-दिन के उत्सव पर जा रहे थे। शिवराम गिरी हुई बिलीबु को उठाने आ रहा था तब कुन्दन ने गुस्से में चिल्लाकर उसे रोका और जख्मी चिड़िया को उठा लिया।

“यह तुम क्या कर रहे हो ? यह तो मेरी चिड़िया है, मैंने इसे मारा है।” शिवराम ने गुस्से से कहा और चिड़िया को उसके हाथ से छीनने की कोशिश की। कुन्दन ने शीघ्रता से बिलीबु को विनोद के हाथ में दे दिया और फिर शिवराम के सामने मुकाबले के लिए खड़ा हो गया। “यह एक जंगली चिड़िया है। तुम्हारा इसके ऊपर कोई अधिकार नहीं, कुन्दन ने कहा। “तुमने इसको क्यों मारा ?” “हाँ, मैंने मारा है क्योंकि यह मेरे पिता का आटा चुराता है।”

“अच्छा ! क्या तुम्हें पक्का यकीन है कि इसी बुलबुल ने तुम्हारा आटा चुराया है” कुन्दन ने ताने से कहा- क्या तुम्हारे पिता इतने गरीब हैं कि एक बुलबुल को भी जरा-सा आटा नहीं खिला सकते ? इसने कितने किलो आटा खा लिया ? शिवराम का चेहरा गुस्से से लाल हो गया और बोला- बकवास बंद करो और चिड़िया लौटा दो।

उसने कुन्दन की बाजू मरोड़ दी और कहा- “वही करो, जो मैं कहता हूँ।”

कुन्दन ने उसे धक्का देकर अपने आप को बचा लिया। विनोद ने जब यह देखा कि लड़ाई शुरू होने वाली है तो उसने कुन्दन से पूछा- “मेरी सहायता चाहिये ?”

अपनी गुलेल के साथ आ पहुँचा । जैसे ही उसने बुलबुल की आवाज सुनी, अपनी गुलेल से कसकर पत्थर मारा । पापा बिलीबु को पत्थर लगा और वह नीचे गिर पड़ा ।

माँ बिलीबु ने यह सब तमाशा देखा किन्तु वह कुछ भी न कर सकी । कोई और भी यह सब देख रहा था । वे थे कुन्दन और उसका मित्र विनोद जो स्कूल से विनोद के घर उसके जन्म-दिन के उत्सव पर जा रहे थे । शिवराम गिरी हुई बिलीबु को उठाने आ रहा था तब कुन्दन ने गुस्से में चिल्लाकर उसे रोका और जख्मी चिड़िया को उठा लिया ।

“यह तुम क्या कर रहे हो ? यह तो मेरी चिड़िया है, मैंने इसे मारा है ।” शिवराम ने गुस्से से कहा और चिड़िया को उसके हाथ से छीनने की कोशिश की । कुन्दन ने शीघ्रता से बिलीबु को विनोद के हाथ में दे दिया और फिर शिवराम के सामने मुकाबले के लिए खड़ा हो गया । “यह एक जंगली चिड़िया है । तुम्हारा इसके ऊपर कोई अधिकार नहीं, कुन्दन ने कहा । “तुमने इसको क्यों मारा ?” “हाँ, मैंने मारा है क्योंकि यह मेरे पिता का आटा चुराता है ।”

“अच्छा ! क्या तुम्हें पक्का यकीन है कि इसी बुलबुल ने तुम्हारा आटा चुराया है” कुन्दन ने ताने से कहा- क्या तुम्हारे पिता इतने गरीब हैं कि एक बुलबुल को भी जरा-सा आटा नहीं खिला सकते ? इसने कितने किलो आटा खा लिया ? शिवराम का चेहरा गुस्से से लाल हो गया और बोला- बकवास बंद करो और चिड़िया लौटा दो ।

उसने कुन्दन की बाजू मरोड़ दी और कहा- “वही करो, जो मैं कहता हूँ ।”

कुन्दन ने उसे धक्का देकर अपने आप को बचा लिया । विनोद ने जब यह देखा कि लड़ाई शुरू होने वाली है तो उसने कुन्दन से पूछा- “मेरी सहायता चाहिये ?”

टोकरी में रात के लिए रख दिया । प्रातः जब टोकरी खुलने की आवाज हुई बिलीबु ने आँखें खोली किंतु उसे कुछ समझ में नहीं आया कि वह कहाँ था ।

“मेरे दोस्त ! तुम ठीक हो गये हो । मैं तुम्हें वहीं पहुँचा दूँगा, जहाँ तुम रहते हो ।”

इधर माँ बिलीबु थकी और उदास अपने बच्चों का काम करने के बाद, एक पल के लिए उसी पेड़ की टहनी पर जा बैठी । इतने में वही डॉक्टर टोकरी पकड़े हुए उधर आया और ऊपर टहनी पर माँ बिलीबु को बैठे देखा ।

“मुझे लगता है कि मैं ठीक ठिकाने पहुँच गया हूँ ।” उसने टोकरी खोली और बिलीबु उड़कर उसी पेड़ पर अपनी पत्नी के साथ जा बैठा । माँ बिलीबु को विश्वास नहीं हुआ कि पापा बिलीबु उसके पास बैठा है । फिर दोनों खुशी से चहचहाने लगे । अचानक उसे अपने बच्चों की याद आई कि उनके लिये खाना लाना है । दोनों पंख फैलाते हुए भोजन की खोज में जा निकले ।

प्रश्नावली

(क) उत्तर लिखिए-

1. बिलीबु कौन था ? वह क्यों खुश था ?
2. कुंदन जख्मी चिड़िया को कहाँ ले गया ?

(ख) रिक्त स्थान भरिए -

1. ने पापा बिलीबु को पत्थर मारा ?
2. कुंदन एक लड़का था जब कि शिवराम निर्दयी ।
3. बिलीबु उड़कर उसी पेड़ पर अपनी के साथ जा बैठा ।

(ग) कुंदन की करुणा के बारे में कुछ वाक्य लिखो ।

पाठ बोध :

मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है ।

टोकरी में रात के लिए रख दिया । प्रातः जब टोकरी खुलने की आवाज हुई बिलीबु ने आँखें खोली किंतु उसे कुछ समझ में नहीं आया कि वह कहाँ था ।

“मेरे दोस्त ! तुम ठीक हो गये हो । मैं तुम्हें वहीं पहुँचा दूँगा, जहाँ तुम रहते हो ।”

इधर माँ बिलीबु थकी और उदास अपने बच्चों का काम करने के बाद, एक पल के लिए उसी पेड़ की टहनी पर जा बैठी । इतने में वही डॉक्टर टोकरी पकड़े हुए उधर आया और ऊपर टहनी पर माँ बिलीबु को बैठे देखा ।

“मुझे लगता है कि मैं ठीक ठिकाने पहुँच गया हूँ ।” उसने टोकरी खोली और बिलीबु उड़कर उसी पेड़ पर अपनी पत्नी के साथ जा बैठा । माँ बिलीबु को विश्वास नहीं हुआ कि पापा बिलीबु उसके पास बैठा है । फिर दोनों खुशी से चहचहाने लगे । अचानक उसे अपने बच्चों की याद आई कि उनके लिये खाना लाना है । दोनों पंख फैलाते हुए भोजन की खोज में जा निकले ।

प्रश्नावली

(क) उत्तर लिखिए-

1. बिलीबु कौन था ? वह क्यों खुश था ?
2. कुंदन जख्मी चिड़िया को कहाँ ले गया ?

(ख) रिक्त स्थान भरिए -

1. ने पापा बिलीबु को पत्थर मारा ?
2. कुंदन एक लड़का था जब कि शिवराम निर्दयी ।
3. बिलीबु उड़कर उसी पेड़ पर अपनी के साथ जा बैठा ।

(ग) कुंदन की करुणा के बारे में कुछ वाक्य लिखो ।

पाठ बोध :

मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है ।

करुणा भाव से भागा भय

कृष्णकुमार ने खिड़की से बाहर देखा, वर्षा हो रही थी। वह एक दिन पहले ही अपने चाचा के यहाँ पहुँचा था, जिनका घर मसूरी से कुछ मील की दूरी पर था। उसे यह दुःख था कि उसकी माँ और उसका छोटा भाई साथ नहीं आये थे।

डॉक्टर ने कृष्णकुमार के भाई को मौसम के कारण बाहर जाने से मना कर दिया था। उसकी माँ चाहती थी कि अपने देवर को पहले से ही संदेश भेज देती जिससे उसे आना न पड़ता। कृष्ण को पहले ही भेज दिया क्योंकि कृष्ण पीलिये की बीमारी से उठा था।

खिड़की में बैठा हुआ कृष्ण अकेला सोचने लगा कि वर्षा कब बंद होगी। कहीं सारे सप्ताह तो नहीं होती रहेगी।

आधे घंटे के बाद ही सूरज निकल आया। कृष्ण ने भागकर अपने बाहर जाने वाले जूते पहन लिये। अंधेरा होने में अभी समय था। एक दिन पहले ही उसने अपने जेब खर्च से टॉर्च खरीदी उसे हाथ में लिये वह घूमने निकला।

कृष्ण अंधेरे से बहुत डरता था। इसका कारण उसकी बूढ़ी आमा थी जिसने कृष्ण को, जब वह तीन साल का था, आधे घंटे के लिए एक अंधेरी अल्मारी में बंद कर दिया था। आमा को नौकरी से निकाल दिया गया था किंतु कृष्ण का डर नहीं गया। टॉर्च उसकी रक्षक जो उसे रोशनी दिखाती थी।

बाहर सब गीला था। जिस रास्ते से वह जा रहा था, पानी की बूंदें पत्तों से गिरती दिखाई दीं। यह पहला समय था, जब वह चाचा के पास आया था और वह पहाड़ी दृश्यों को देखकर बहुत खुश हुआ। थोड़ी देर बाद लंगूरों की आवाज सुनाई दी और कृष्ण उनके पीछे चल पड़ा। एक छोटा

बच्चा माँ के गले में लिपटा था । थोड़ी देर पीछा करने के बाद उसने महसूस किया कि अब मुझे घर जाना चाहिए ।

उसी समय उसने एक रोने की आवाज सुनी । वही हल्की-सी आवाज दोबारा सुनाई दी । मुड़ते हुए वह उसी ओर गया और क्या देखता है कि एक छोटा सा बकरी का बच्चा गिरा पड़ा है । उसने उसे गोदी में उठा लिया और अचानक देखा कि वह क्यों वहाँ पर है । एक बड़ी बकरी चट्टान से टकराकर गिर गई थी और उसकी टांग टूट गई थी ।

“ओह बेचारी बकरी” कृष्ण ने कहा और जाकर ध्यान से टांग को देखा । जल्दी से थोड़े से पत्ते और घास उठाकर उसके आगे रख दिये । उसने सोचा बच्चे को अपने साथ ले जाऊँ और सुबह ही किसी को साथ लेकर उसकी माँ के पास वापस छोड़ दूंगा । माँ नहीं चाहती थी कि उसका बच्चा उससे अलग हो । उसने बच्चे को पास रखने की बहुत कोशिश की । कई बार उठी और कई बार गिरी । यह बात ठीक नहीं, कृष्ण ने उदास होकर सोचा । मैं बच्चे को माँ से अलग नहीं कर सकता । इसको यहीं रहने दूंगा ।

जैसे ही कृष्ण चलने लगा, उसे एक बुरी आशंका हुई । रात को गीदड़ माँ-बच्चे दोनों पर हमला कर सकते हैं ।

यह सोचकर कृष्ण कांप उठा । क्या वह मुकाबला कर सकेगी ? अगर वह उनको कहीं छिपा देता तो वे दोनों बच सकती थी । उसने माँ को उठाने की कोशिश की किंतु वह बहुत ही भारी थी । उसने दो बड़ी चट्टानें ढकेलकर उनके आगे रख दीं । साथ में भारी टहनियां लगा दीं, जिससे तीनों ओर दीवार-सी बन गई ।

उसे ध्यान ही नहीं रहा कि अंधेरा होने वाला है । उसे अब जल्दी करना चाहिए । जैसे ही वह पगडंडी के रास्ते जाने लगा । बच्चे का रोना

सुनकर उसके पांव रुक गये । “हमें छोड़ कर मत जाओ” उसे ऐसा सुनाई दिया, “नहीं तो हम सुबह होने तक मारे जायेंगे ।”

कृष्ण खड़ा हो गया । वह धीरे से माँ और बच्चे के पास वापस गया । अंधेरा बढ़ने लगा था और ठंड भी हो गई थी । कृष्ण, माँ-बच्चे के पास गरमाई के लिए घुस गया । बच्चा अब बहुत खुश दिखाई देने लगा ।

कृष्ण ने टॉर्च नहीं जलाई । अचानक एक आवाज आई तो उसने घबराकर टॉर्च जला दी और देखा कि एक बड़ा-सा बंदर भागा जा रहा है । उसने टॉर्च फिर बंद की और चुपचाप बैठ गया । दूसरे ही पल कुछ चीखें सुनकर वह चौंक गया । कुछ देर में उसकी समझ में आया कि उल्लू बोल रहा था ।

धीरे-धीरे समय बीत गया । दो-तीन बार कृष्ण डर से कांप उठा था क्योंकि किसी के कदम और चमकती हुई आँखें नजदीक आती हुई दिखाई दी । कृष्ण ने मुठ्ठी दबाई और अपने आपको तसल्ली दी कि मुझे डरना नहीं चाहिए ।



कृष्ण को नींद आने लगी । नींद का झोंका लिया ही था कि इतने में गीदड़ के चिल्लाने की आवाज से उठ गया । गीदड़ों का झुंड उनके पास आ पहुंचा । कृष्ण ने टॉर्च जलाई और देखा कि वह तो किसी छाया से घिर गया है । उसको चाचा का कहना याद आया कि जिसके पास बचने का कोई साधन नहीं, उसे गीदड़ मिलकर मार सकते हैं । बकरी और बच्चा भी डर से चिल्लाये । कृष्ण नहीं चाहता था कि बकरी और बच्चा मारे जायें ।

दूसरों की चिंता में उसका अपना डर भाग गया । उसने उठकर एक पत्थर मारा ।

“जाओ ! जाओ ! इससे पहले कि मैं तुम सबको मार दूं । भाग जाओ ।” वह चिल्लाकर बोला ।

गीदड़ डर कर भाग गये । दूर से उसको “कृष्ण ! कृष्ण ! कर पुकारने की आवाज सुनाई दी । “क्या तुम ठीक हो ?”

“चाचाजी ! चाचाजी !” कृष्ण ने खुशी से जवाब दिया ।

कुछ क्षण के बाद कृष्ण का चाचा और एक नौकर लैम्प हाथ में लिए सामने दिखाई दिये ।

“लो कुछ पीओ’ चाचा ने थरमस पकड़ा दिया । चाय पीने के बाद कृष्ण ने सारा हाल बताया ।

“क्या तुम यही बताना चाहते हो कि इन बकरियों को बचाने के लिये सारी रात जंगल में रहे ।

“हां ! मैं इन्हें अकेले नहीं छोड़ सकता था ।”

“दस में से नौ ऐसा ही करते” जवाब मिला । “कृपाराम इनकी देखभाल करेगा । तुम घर चलो और अपने बिस्तर में आराम करो । तुम चिंता मत करो । मैं जीप में नौकरों के साथ इनको ले आऊँगा । सचमुच

तुम एक निराले लड़के हो। एक बात बताओ, तुम्हें इस अंधेरे जंगल में डर नहीं लगा।”

“हाँ चाचा,” उसने झिझकते हुए कहा। “मुझे यह कहते शर्म आती है कि मैं डर रहा था।”

उसके चाचा ने उसकी पीठ पर थपकी दी और कहा- शाबाश ! यही सच्ची वीरता है कि डरते भी रहो और भागो भी न।”

कृष्ण बहुत खुश हुआ।

“पहले मैं अंधेरे से डरता था किंतु अब कभी भी नहीं डरूंगा।” जो कुछ भी उसने कहा, वह सच था।

प्रश्नावली

(क) उत्तर लिखो-

1. कृष्ण का अन्धेरे से डरने के पीछे क्या कारण था ?
2. इस कहानी में आए जानवरों के बारे में दो-दो पंक्तियाँ लिखिए ?
3. कृष्ण को लेने जंगल में कौन आया ?

(ख) वाक्य पढ़कर सही या गलत बताइए -

1. बड़ी बकरी की टांग टूट गई थी। ()
2. कृष्ण ने लंगूर को पत्थर मारा। ()
3. गीदड़ बकरी के बच्चे को खा गया। ()
4. कृष्ण ने अपने जेब खर्च से टॉर्च खरीदी। ()

(ग) कहानी के आधार पर स्पष्ट करिए -

“दूसरों की चिंता में उसका अपना डर भाग गया।”

पाठ बोध :

कर भला तो हो भला !

परिवर्तन का वह दिन

सीता घर की दीवार पर टाँगे झुला रही थी और अपने भाई आनन्द की प्रतीक्षा कर रही थी, जो मछली के शिकार के लिये कीड़े इकट्ठे कर रहा था। सीता को मछली पकड़ना पसन्द नहीं था; किन्तु अपने भाई के साथ बाहर जाने की बहुत शौकीन थी। उसे पानी बहने की आवाज और चिड़ियों का गाना बहुत अच्छा लगता था। उसका ध्यान अचानक भंग हो गया, जब उसने अपनी चचेरी बहन सावित्री की आवाज सुनी, अरे तुम यहाँ क्या कर रही हो ? आनन्द ने कहा, “हम मछली पकड़ने जा रहे हैं। तुम हमारे साथ क्यों नहीं चलती।” सावित्री का चेहरा बदल गया और पूछने लगी, इन कीड़ों से क्या करोगे ?

“इनको हुक के साथ लगाते हैं, जब मछली इनको खाने आयेगी तो वह हुक में फँस जायेगी और उसे निकाल लूंगा।”

“कितनी बुरी बात है ! सावित्री ने दुःखी होकर कहा।

“ऐसा क्यों ? सीता ने पूछा।

“क्योंकि इससे इन्हें बहुत चोट लगती है।”

“क्या बकवास करती हो ” आनन्द ने हँसते हुए कहा।

“कीड़ों के कोई दिमाग नहीं होता।”

अगर ऐसा नहीं है तो जब तुम इन्हें पकड़ते हो तो ये इधर-उधर क्यों भागते हैं ? मछली को भी ऐसी ही पीड़ा होती होगी। सीता और आनन्द को यह बात अच्छी नहीं लगी। आनन्द ने तंग होकर पूछा, सावित्री क्या तुम हमारे साथ चलोगी ? सावित्री ने धीरे से जवाब दिया- “नहीं, क्योंकि मैं किसी का दुःख नहीं देख सकती।”

क्या पगली की तरह बात कर रही हो ? आनन्द ने गुस्से से जवाब दिया। दूसरों का मजा किरकिरा करना चाहती हो। किन्तु उसे मन में सन्देह हुआ कि क्या सचमुच मछली को पीड़ा होती है। उसने पहले कभी

भी यह नहीं सोचा था । उसने अपने रॉड और कीड़े उठाये और चलने के इरादे से सीता की ओर देखा । सीता ने कहा- “मेरा ख्याल है कि मैं आज न आऊँ । फिर आनन्द से पूछने लगी, क्या तुम्हें पक्की जानकारी है कि उन्हें दर्द नहीं होता ?

“हां, नहीं होता” आनन्द ने बेचैनी से कहा । मगर तुम यह सब नखरे करोगी तो मैं अकेले ही चला जाऊँगा, यह कहकर वह चला गया । वह दिन आनन्द के लिए अच्छा नहीं था । वह रॉड लिए तीन घंटे बैठा रहा, कोई मछली हाथ नहीं आई । अचानक एक बड़ी मछली उसके सामने आई जो 18 इंच लम्बी थी और कीड़ा खाने के लिए आ रही थी । आनन्द ने प्रतीक्षा की किन्तु मछली कीड़ों को सूँघ कर फिर दूर चली गई । आनन्द मायूस हो गया । ध्यान था कि एक बार कीड़े को निकाल कर दुबारा पानी में फेंकने से मछली आ जायगी । दुर्भाग्य से कीड़े पानी में न गिरकर वापस उसके मुँह पर आ पड़े । हुक उसके गाल में फँस गया । जितना उसे निकालने की कोशिश की, उसे उतना ही दर्द हुआ । अब उसके मुँह से खून बहने लगा । उसने अपने चाकू से हुक की तार काट दी और फिर निकालने की कोशिश की किन्तु वह और भी फँस गया । आनन्द समझ नहीं सका कि वह क्या करे । मुँह से बहते खून को कैसे रोके ? न वह बस में जा सकता था । न ही पास किसी डॉक्टर को जानता था । अचानक उसने दो लड़कों की आवाज सुनी, जो उसके स्कूल में पढ़ते थे । वे दोनों लड़के हैरानी से आनन्द को देखने लगे ।

यह तुम्हें क्या हो गया ? यह कैसे हुआ ? हरीपाल ने पूछा । यह मछली पकड़ने का हुक है, आनन्द ने धीरे से कहा । उसका मुँह इतना सूज गया था कि वह खोल भी नहीं सकता था । बड़ा लड़का अनुप जोर से हँसा, “अरे यह बड़ी अजीब बात है” उसने कहा । हमारे चतुर दोस्त आनन्द ने मछली की बजाय अपने आप को निशाना लगाया । यह कहकर वह और भी जोर से हँसा । हरीपाल ने हमदर्दी से कहा- मेरे पिता हमारे साथ है । मैं जल्दी से उन्हें बुला लाता हूँ ।

जरा हुक के लिए इतना बड़ा तमाशा, अनूप ने कहा। लाओ मैं इसे निकलता हूँ। इससे पहले आनन्द उसे रोकता अनूप ने हुक को जोर से खींचा। आनन्द को इतना दर्द हुआ कि उसके सामने कि दुनियाँ घूम गई। हरीपाल अपने पिता को अपने साथ लिये आ रहा था, उसका पिता मुस्करा रहा था और यह कह रहा था, पागल मत बनो हरीपाल। तुम्हें नहीं पता लड़को को दर्द नहीं होता। ऐसी ही बात उसने पहले कहाँ सुनी थी? इसी तरह मछली को भी हुक लगने से दर्द होता है। आनन्द पीड़ा के कारण बेहोश हो गया।

आनन्द की आँखें जब खुली तो देखा कि हरीपाल के पिता डाक्टर कपूर उसे हमदर्दी की नजर से देख रहा था। अब सब ठीक हो गया है। मैंने हुक निकाल दिया और मुँह की सिलाई कर दी। मैं तुम्हें अपनी गाड़ी में अस्पताल ले गया था, उस गधे हरीपाल ने हुक को निकालते समय तुम्हें बहुत दुःख दिया। आनन्द ने अपने हाथ से दर्द करती हुई गाल को मला। अच्छा हुआ इसने मुझे एक शिक्षा दे दी, उसने धीरे से कहा। वह क्या बात है? डाक्टर ने पूछा। हुक में तड़फना मछली ही जान सकती है, आनन्द ने अकलमन्दी से कहा। आप मेरा मछली पकड़ने का रोंड ले सकते हैं। मैं अब कभी भी मछली पकड़ने नहीं जाऊँगा।

प्रश्नावली

उत्तर लिखिए -

1. सावित्री कौन थी ?
2. किसने कहा- “मैं किसी का दुःख नहीं देख सकती।”
3. आनन्द के गाल में हुक फँसा देखकर किसने उसकी हँसी उड़ाई ?
4. हरीपाल ने आनन्द के साथ कैसा व्यवहार किया ?
5. उस दिन आनन्द ने क्या प्रण किया ?

पाठ बोध :

नादानी/अनजाने में की गई गलती के लिए माफी मिल सकती है, परन्तु जान बूझ कर किए गए गलत कार्य का दंड अवश्य मिलता है।

पासपोर्ट की कीमत

कमल और रवि चचेरे भाई थे । दोनों की आदतें बिल्कुल अलग थीं । रवि बहुत बलवान और खेलों में अच्छा था, कमल छोटा और दुबला सा था, जहाँ भी खेल होते उसका चश्मा उसे पीछे कर देता था । जब भी ये दोनों इकट्ठे होते तो रवि को बहुत प्रसन्नता होती थी । दूसरों की दृष्टि में कमल इतना ऊँचा नहीं था ।

कमल एक अनाथ लड़का था । उसके पैदा होते ही उसकी माँ मर गई थी और उसके पिता भी दो साल पहले हवाई जहाज की टक्कर में मर गये थे । तब से कमल अपने चाचा-चाची के पास रह रहा था । आज वह पहली बार अपने दूसरे चाचा से मिलने वाला था, जो अमेरिका से आ रहा था । दोनों अपने चाचा को चिट्ठी लिखते रहते थे और वे उनको अमेरिका से तोहफे भेजते रहते थे ।

वह दीवार पर बैठा चाचा का इन्तजार कर रहा था । रवि का पिता अपने भाई को लेने हवाई अड्डे गया था । लड़कों ने बहुत मिन्नतें की थीं कि उन्हें भी ले जाय किन्तु पिता ने मना कर दिया था ।

“तुम लोग शान्ति से बैठे रहो” पिता ने कहा । ‘तुम्हारा चाचा तुम दोनों के लिए बहुत कुछ कर सकता है । तुम दोनों उनसे अच्छी तरह मिलना ।’

“भगवान जाने वह कैसा है ।” रवि ने पन्द्रहवीं बार कहा । “वह जरूर अमेरिकन की तरह बोलता होगा । पिताजी कहते हैं, वह बहुत अमीर है । देखो हमारे लिये क्या लाता है ?”

कमल ने कुछ नहीं कहा । वह तो केवल चाचा से मिलना चाहता था क्योंकि उसने फोटो देख रखी थी, उनकी शकल उसके पिताजी से बहुत मिलती थी और उसे कोई लोभ नहीं था कि उसे कुछ तोहफा मिले ।

“रवि ! रवि !” उसकी माँ ने चौके से पुकारा । “जल्दी आओ और मुझे बाजार से कुछ सामान ला दो । अभी मैंने देखा है कि चीनी खतम हो गई है और तुम्हारे चाचा को आते ही चाय चाहिये होगी ।”

रवि ने मुँह बनाया । “मेरी समझ में नहीं आता कि मैं ही क्यों जाऊँ । नौकर को क्यों नहीं भेजती ?”

माँ ने कहा, “छोकरा बाहर गया है, खानसामा खाना बना रहा है । रवि जल्दी, ये पैसे लो ।”

“कमल को क्यों नहीं भेजती ?” रवि ने कहा ।

उसकी माँ ने कहा, “रवि तुम तो सचमुच बड़े मतलबी और सुस्त हो । मेरा ख्याल है, मैंने और तुम्हारे पिता ने तुम्हें बिगाड़ दिया है ।”

कमल ने कहा, “चाची जी, मैं चला जाता हूँ । मुझे पैसे और थैला दे दो ।”

इस बार रवि की माँ ने सख्ती दिखाई, “नहीं कमल ! रवि को कहा जायेगा तो वही जायेगा । अगर तुम्हें भी साथ जाना है तो चले जाओ ।”

“चलो” रवि ने मुँह बनाकर कहा । “कमल तुम भी मेरे साथ आ जाओ । मैं नहीं चाहता कि तुम अकेले चाचा से मिलो ।”

रवि तो भाग गया और कमल पीछे-पीछे जाने लगा । रवि ने जल्दी से चीनी खरीदी और दुकान से बाहर भागा । थोड़ा रास्ता आए तो देखा कि चार-पाँच बड़े कुत्ते एक कार को घेरे हुए थे, शायद कार के नीचे कोई प्राणी था, जिसे भौंक रहे थे । कमल ने सोचा कि जरूर किसी छोटे से पिल्ले को भौंक रहे होंगे ।

“रवि ! ठहरो” कमल चिल्लाया, किन्तु रवि ने ध्यान नहीं दिया ।

कमल थोड़ी देर के लिए झिझका । वह नहीं चाहता था कि उसका

चाचा उसके बारे में बुरा सोचे । दूसरी ओर वह कुत्तों को भौंकते छोड़ कर नहीं जाना चाहता था । कुत्ते बहुत गर्म हो रहे थे और कार के नीचे जाने की कोशिश कर रहे थे ।

कमल ने झुककर कार के नीचे देखा । एक छोटा सा बिल्ली का बच्चा छिप कर बैठा था । उसकी पीठ मुड़ी हुई, बाल और पूँछ डर के मारे उठे हुए थे ।

कमल को उन कुत्तों को मारने के लिये न पत्थर मिला, न लाठी मिली । उसने तंग आकर अपना कोट उतारा और कुत्तों की टांगों पर मारा । कुत्ते पीछे हट गये किन्तु एक सबसे बड़ा अलसेसियन कुत्ता कमल को दाँत दिखाने लगा । कमल घबरा गया । उसी समय उसने देखा कि एक पानी की भरी हुई बाल्टी कार के पास रखी है । कमल ने उसको उठा कर पानी कुत्तों पर फेंका । कुत्ते सब भाग गये । कमल ने जल्दी से कार के नीचे से बिल्ली के बच्चे को निकाल दिया ।

अलसेसियन कुत्ता छिप कर अब कमल की प्रतीक्षा में खड़ा था । जैसे ही वह कार के नीचे से निकल कर खड़ा हुआ कुत्ता उसके ऊपर झपटा, उसको कीचड़ में गिरा दिया । कमल एक हाथ से बिल्ली का बच्चा छिपाया हुआ था, दूसरे हाथ में कोट । कुत्ते ने उसका कोट खींचा और काटने की कोशिश की । इतने में टैक्सी से एक आदमी उतरा और अपनी छड़ी से कुत्ते को मार भगाया । इससे कमल और बिल्ली का बच्चा दोनों बच गये ।

कमल बड़ी परेशानी से अपने पाँव पर खड़ा हुआ । वह कीचड़ से भरा था, उसका कोट फट गया था और मुँह और हाथ पर खून के धब्बे लगे हुए थे ।

“बहादुर लड़के, तुम बुरी तरह कीचड़ में लथपथ हो गये हो,” बचाने वाले ने कहा । “अगर मैं न आता तो तुम क्या करते ?”

कमल ने अपना कोट हटाया और डरा हुआ बिल्ली का बच्चा बाहर निकल गया ।

“मैंने इसको पाँच कुत्तों से बचाया है ।”

“तुम बहुत बहादुर हो । तुमने पाँच कुत्तों के साथ मुकाबला किया ।” उस आदमी ने कमल को शाबाशी दी और उसे अपनी टैक्सी में उसके घर तक ले चला ।

“तुम्हारे घर का पता क्या है ?” उसने पूछा ।

घर के पते को सुन कर वह हैरान हो गया और कहने लगा, “इसी घर में तो मैं भी जा रहा हूँ । मुझे लगता है कि तुम मेरे भतीजे हो । तुम कमल हो या रवि ?”

“कमल” डर से उस लड़के ने माफी माँगी । यह सोचकर कि रवि तो बहुत बना ठना है और मैं गन्दा हूँ । निःसन्देह रवि का अपने चाचा के दिल में अच्छा स्थान होगा । यह बात कमल के मन में पक्की हो गई थी ।

“इसमें माफी माँगने की कोई आवश्यकता नहीं । मुझे लगता है कि मेरे दोनों भतीजे बहुत दिलेर हैं ।”

हवाई जहाज पहले पहुँचने के कारण वह रवि के पिता को हवाई अड्डे पर नहीं मिल सका । कमल को पहले से चाचा से मिलते देखकर, नये कपड़े पहने रवि को गुस्सा आ गया ।

“तुम क्या बने हुए हो ? क्या कर रहे थे ? अभी तुम्हें कसकर डाँट पड़ेगी ।” रवि ने कहा ।

उसके चाचा ने यह सब सुन लिया और बोले, “हां, उसे डाँट नहीं, कुछ न कुछ इनाम अवश्य मिलेगा, यह मेरे साथ अमेरिका जायेगा । मैंने

पहले ही सोच रखा था कि एक को मैं अपने साथ ले जाऊँगा । मुझे उम्मीद न थी कि मैं इतनी जल्दी फैसला कर लूँगा ।” जैसे ही दोनों लड़कों ने अपने चाचा की ओर देखा, चाचा ने कमल से कहा, “तुम जाओ कपड़े बदलो, तब तक मैं तुम्हारी चाची को सब बतलाता हूँ । बिल्ली के बच्चे का ध्यान रखना । हम इसे भी अपने साथ अमेरिका ले जायेंगे ।”

प्रश्नावली

(क) उत्तर लिखो-

1. कमल कौन था ? वह चाचा के पास क्यों रहता था ?
2. कमल किस कारण से खेलों में रवि से पीछे रह जाता था ?
3. कमल ने कुत्तों को क्यों मारा ?
4. बिल्ली के बच्चे के पीछे कौन पड़ गए ?

(ख) रवि के बारे में कुछ वाक्य लिखिए ।

(ग) अमेरिका से आए चाचा ने क्या देखकर कमल को अपने साथ अमेरिका ले जाने का निर्णय लिया ? विस्तार से लिखिए ।

पाठ बोध :

व्यक्ति की असली पहचान उसके व्यवहार से होती है ।

जादू का खेल

धूप तेज चमक रही थी, बाजार के कुत्ते गर्मी के कारण सोये हुए थे, मक्खियाँ भी सुस्ती के मारे भिन-भिना रही थीं। अचानक ही एक डुगडुगी की आवाज सुनाई दी, जिससे यह मालूम हुआ कि एक जादूगर आ रहा है। बच्चे अपने घरों से उसे देखने के लिए बाहर निकले। जादूगर अकेला नहीं था। उसके साथ एक छोटा-सा लड़का भी था, जो खेलों में हिस्सा लेता था। साथ में एक पतली टांगों वाला नौकर सिर पर टोकरी उठाये चल रहा था। उसने टोकरी को नीचे रखा।

“अच्छा ... बहुत अच्छा। हमें अपने खेल दिखाओ” प्रकाश ने कहा, जिसने यह सब खेल कई बार देख रखे थे।

“हाँ ! हाँ” सीता ताली बजाती हुई बोली, “हमें भी खेल दिखाओ।”

सब बच्चे इन खेलों को देखकर खूब हंसे, सब को खूब मजा आया, कभी भी किसी ने यह नहीं सोचा कि चिड़ियों तथा जानवरों को यह जादू सिखाने में कितना कष्ट होता है। अगर ये सब इन बच्चों को करना पड़ता तो मालूम होता।

चिड़िया का टोकरी में दम घुटता है। देखने वाले की नजर बचाने के लिये टोकरी को कम्बल से ढक देते हैं जिससे और भी अंधेरा हो जाता है। कबूतर अपने पंख भी नहीं फैला सकता और गर्मी के कारण टोकरी में उसका दम भी घुटता है। जानवर होने के कारण उसे समझ ही नहीं कि कितनी देर तक यह दुःख सहना पड़ेगा। कबूतर को अपने पिछले दिन याद आते हैं, जब वह खुशी से दूसरे साथियों के साथ हवा में उड़ता था। अब उसके पंख कट चुके हैं और अपनी सब खुशी भूल चुका है।

अचानक टोकरी का ढक्कन उठाया गया और सब बच्चे हैरानी से देखने लगे।

“देखो ! वह नाच रहा है ।” एक बच्चे ने कहा ।

दर्द के मारे, डरा हुआ कबूतर मुड़ कर टोकरी के अन्दर चला गया ।

“सुस्त मनहूस ! यह कुछ काम नहीं करना चाहता, यह सिर्फ सोना ही जानता है ” दूसरा लड़का चिल्लाया ।

“नहीं ! नहीं ! तुम देखो इसको चोट लगी है” सीता ने बड़ी हमदर्दी से कहा । उसने झुक कर उस दुःखी कबूतर को उठाया, जिससे कबूतर को आराम महसूस हुआ । “इसके पंख काटे हुए हैं” सीता ने कहा । कितने दुःख की बात है कि इसके पंख काटे गये हैं और यह उड़ नहीं सकता ।”

दूसरे बच्चों ने भी हैरानी से देखा । किसी ने भी पहले ऐसा नहीं सोचा था । कबूतर को दया की आवश्यकता थी ।

जादूगर अधिक प्रतीक्षा न कर सका । “मेरा कबूतर मुझे वापस दे दो ।” उसने गुस्से से कबूतर छीनने की कोशिश की “यह मेरा सिखाया हुआ कबूतर है और मैंने इस पर बहुत पैसे खर्च किये हैं ।”

“बेशक ! ” अब यह आवाज एक आदमी की थी । “अच्छा, इसकी तुम्हें बहुत कीमत देनी पड़ेगी । मैं जीव दया मण्डल (S.P.C.A) का सदस्य हूँ । मैं तुम्हारी इसे ठीक ढंग से न रखने के कारण शिकायत करूँगा ।”

“ओह ! मामाजी ! आप अच्छे समय पर पहुँचे ” सीता ने खुशी से कहा ।” कबूतर के लिए इस बन्द टोकरी में रहना बहुत दुःखदायी है । आप न आते तो मैं क्या करती ।”

“तुम्हारी मदद करके मुझे प्रसन्नता हुई है ” मामाजी ने मुस्कराते हुए कहा । “अगर मेरे हाथ में होता तो मैं किसी भी जानवर या चिड़िया

को इस काम के लिए न देता ।” जैसे ही मामाजी जादूगर को कुछ कहने लगे, वह सब भाग गये थे । चिन्ता मत करो, हम उसे पकड़ लेंगे । मेरा ख्याल है कि मुझे मालूम है, वह कहाँ रहता है ।”

“इस चिड़िया का क्या करोगी ?” मामा ने सीता से पूछा ।

“अगर मेरे माता-पिता मुझे आज्ञा देंगे तो मैं इसे तब तक रखूँगी जब तक इसके पंख बढ़ेंगे ।”

“तुम्हारे माता-पिता मना नहीं करेंगे” मामा ने कहा । “जब यह उड़ने लायक हो जाएगा फिर क्या करोगी ?”

“इसे छोड़ दूँगी” सीता ने जल्दी से कहा । “मैं इसे कैद में नहीं रखना चाहती ।”

“अच्छा” मामा ने हां करते हुए कहा, “किन्तु यह तुम्हें नहीं छोड़ेगा । क्योंकि तुम इसे इतना प्यार करती हो हर रात को तुम्हारे पास आ जाएगा ।”

“मैं बहुत खुश हूँ” सीता ने अपना मुँह पंखों के पीछे छिपाते हुए कहा । कबूतर नये मालिक के नरम हाथों में आकर बहुत खुश हुआ ।

प्रश्नावली

(क) उत्तर लिखो-

1. जादूगर क्या बजाता हुआ आता है ?
2. कबूतर के पंख किसने काटे ? चोट लगे दुखी कबूतर को किसने उठाया ?
3. जीव दया मंडल का अंग्रेजी में संक्षिप्त रूप लिखिए ?
4. सीता किसे कैद में नहीं रखना चाहती थी ?

(ख) यदि सीता के मामाजी नहीं आते तो सीता क्या करती ? कल्पना करके लिखिए ।

पाठ बोध : किसी भी प्राणी को सताना बहुत गलत बात है ।

अच्छे काम करो और अच्छे बच्चे बनो ।

प्रेमनाथ का बलिदान

धूप खूब तेज थी । प्रेमनाथ अपने अच्छे कपड़े पहन कर बाहर निकला । आज वह बहुत खुश था । क्योंकि बहुत बड़े परिवार में काम करते-करते थक जाता था । कभी तो वह बाजार जाता, कभी खाना बनाता, कभी कपड़े धोता और कभी बच्चों के धन्धों में लगा रहता । उसका दिन सुबह पाँच बजे आरम्भ होता था और किसी-किसी दिन उसे आधी रात को सोने को मिलता । आज सारा परिवार दो दिन के लिए कहीं छुट्टी पर गया था । प्रेमनाथ को बाहर निकलने का मौका मिल गया । अपना बचा-खुचा काम समाप्त करके पड़ोसी माली को समझा कर कि उसके घर पर नजर रखें, प्रेमनाथ अपने भाई से, जो दस मील की दूरी पर रहता था, मिलने चला गया ।

उसकी जेब में केवल एक ही रूपया बस के किराये के लिए था । किन्तु उसको इतने पैसे भी बहुत लग रहे थे क्योंकि वह आजाद था ।

जैसे ही थोड़ी दूर गया तो प्रेमनाथ क्या देखता है कि इम्पीरियल होटल के सामने काफी लोग इकट्ठे हुए बन्दर का तमाशा देख रहे हैं । बन्दरिया साड़ी और स्कर्ट पहने नाच रही थी, साथ-साथ उसकी आँखें उस लाठी पर थीं, जो उसके सिर पर सवार थी । तमाशा खतम होते ही लोगों ने ताली बजाई ।

“देखो यह कितनी प्यारी है” एक अमेरिकन आदमी ने कहा ।
“मेरे ख्याल में अगर हम इसे घर ले जायें तो बच्चे बहुत खुश होंगे ।”

“ओह जार्ज ! कैसी बात कर रहे हो” उसकी पत्नी ने कहा ।
“हम इसे सफर में कैसे ले जायेंगे ।”

“छोटी सी बेचारी बन्दरिया ।” दूसरे परदेशी की आवाज आई ।

“इतनी गर्मी में उसे सब कपड़े पहना कर नचाना ठीक नहीं । इस की जिन्दगी बहुत दुःखी है ।”

“हां ! और देखो बेचारी लाठी से कितना डर रही है ” यह एक अंग्रेज की आवाज थी । “मेरे खयाल में यह सब करने की आज्ञा नहीं देनी चाहिये ।”



एक-एक कर के सब चले गये । बन्दर वाले ने सारे पैसे इकट्ठे किये और दूसरे परदेशियों की इन्तजार में बैठ गया । इसी समय प्रेमनाथ वहाँ आ पहुँचा ।

“दूसरे बन्दर को क्या हुआ ?” प्रेमनाथ ने पूछा ।

“वह मर गया है” उसने जवाब दिया ।

“कैसे मरा ? पिछले हफ्ते तो वह बिल्कुल ठीक था ।”

“उसने मुझको काटा और मैंने उसे इतना मारा कि वह मर गया ।”

प्रेमनाथ चुप रहा किन्तु उसके दिल में बहुत चोट लगी । यह पहाड़ी लड़का था और बचपन में बन्दर पाला करता था । प्रेमनाथ को याद था कि वह उसको कितना प्यार करता था । एक जानदार जानवर के लिए इन्सान की दया के ऊपर रहना कितना बुरा है । बन्दरिया डरी हुई और दुःखी थी ।

प्रेमनाथ जाकर एक कैला लाया और उसकी ओर फेंका । कैला थोड़ी दूर गिरा । बन्दरिया ने उस तक पहुँचने की कोशिश की किन्तु बन्दरवाले ने उसको मारा ।

“तुम ऐसा क्यों कर रहे हो” प्रेमनाथ गुस्से से बोला । यह भूखी है ।

“अगर यह भूखी है तो यह देखना मेरा काम है” बन्दरवाले ने चलते-चलते कहा । उसने बन्दरिया को घुमा कर अपने कन्धे पर बैठा दिया ।

प्रेमनाथ ने कन्धे हिलाये कि इसके साथ बहस करना बेकार है । वह चलते-चलते एक ओर गया । एक लड़का साइकल पर आ रहा था जिसके पीछे एक अलसैशियन कुत्ता भाग रहा था । कुत्ते ने बन्दर की ओर देखा और सोचा कि मैं इसे पकड़ लूँ । कुत्ते ने बन्दर वाले पर झपट्टा मारा । बन्दरवाला नीचे गिर गया और बन्दरिया की चेन उसके हाथ से छूट गई । बन्दरिया वहाँ से भाग कर दुकानों की छत पर जा बैठी । यह सब कुछ इतना जल्दी हुआ, बन्दरवाला अभी जमीन से उठ भी नहीं पाया था कि बन्दरिया गायब हो गई ।

बन्दरवाले के पांव में मोच आ गई थी । वह कुत्ते के मालिक को गाली देने लगा ।

प्रेमनाथ की नजर बन्दरिया की ओर गई जिसकी जंजीर पेड़ की टहनी में फँसी हुई थी ।

उसने चेन निकाली और केला दिखाकर बन्दरिया को हाथ में पकड़ लिया । यही मौका था कि वह इसे इस दुःखभरी जिन्दगी से बचा देता । उसे अपनी कमीज में छिपाते हुए वह पासवाले बगीचे में निकल गया । वहां से वह दूसरे दरवाजे के रास्ते से सुनसान जगह में पहुँच गया ।

यहाँ बैठ कर वह सोचने लगा कि आगे क्या करना है । वह बन्दर को छोड़ना नहीं चाहता था । ऐसा करने से वह पकड़ा जाता । न ही वह उसे अपने पास रखना चाहता था । उसने बन्दरिया के कपड़े उतारे और साथ वाले कुएं में फेंक दिये । साथ ही थोड़ी दूरी पर एक माली पत्तियां जला रहा था । प्रेमनाथ ने उसकी राख बन्दरिया के मुँह पर लगा दी । अब वह काले मुँह वाली बन्दरिया लगने लगी । अब कोई भी उसे पहचान नहीं सकता था । उसने चेन भी कुएं में फेंक दी और अपनी पेटी उसके गले में बांध दी ।

अब क्या किया जाय ? समय बहुत थोड़ा है । बन्दरिया को कहीं भी छिपाया नहीं जा सकता था । वह इसको छोड़ देता, किन्तु कहाँ ? उसे एकदम यह ध्यान आया कि रिज पर और भी बहुतेरे बन्दर आजादी से घूमते हैं । इसको भी वहीं छोड़ा जाये किन्तु रिज पहुँचने का रास्ता दूसरी ओर था ।

प्रेमनाथ शीघ्र ही उसी रास्ते चल पड़ा । बन्दरिया के कारण वह बस में नहीं बैठना चाहता था, इसलिए उसे सारा रास्ता पैदल चलना पड़ा । मार्ग में उसने मूँगफली और डबलरोटी खरीदी और रिज पहुँच गया । पेड़ के नीचे बैठकर उसका पट्टा निकाला और इसे खुला छोड़ दिया । आस-पास काफी बन्दर थे । बन्दरिया वहीं बैठ कर मूँगफली और डबलरोटी खाने लगी ।

सब बन्दर इसकी ओर देख रहे थे । एक छोटा बन्दर आगे बढ़ा और दोनों ने दोस्ती कर ली और जंगल में इकट्ठे भाग गये ।

यह देख कर प्रेमनाथ बहुत खुश हुआ। मगर उदास भी हुआ कि भाई के पास पहुँचने के लिए बस का किराया भी नहीं बचा था। साथ ही न जाने उसको फिर कब भाई के घर जाने का मौका मिलता। किन्तु वह इसी बात से बहुत प्रसन्न था कि उसने एक जानवर की जुल्मी हाथों से जान बचाई और इसीमें झूमता-झामता पैदल अपने घर की ओर वापस चल दिया।

प्रश्नावली

(क) किसने कहा -

1. “हाँ, देखो बेचारी लाठी से कितना डर रही है।”
2. “उसको इतने पैसे भी बहुत लग रहे थे क्योंकि वह आजाद था।”
3. “अगर वह भूखी है तो यह देखना मेरा काम है।”
4. “इतनी गर्मी में उसे सब कपड़े पहनाकर नचाना ठीक नहीं, इसकी जिन्दगी बहुत दुखी है।”
5. “उसने मुझको काटा और मैंने उसे इतना मारा कि वह मर गया।”

(ख) तमाशे वाले के पास से छूटकर बंदरिया रिज पर अन्य बंदरों तक किस तरह पहुँच गई? विस्तार से लिखिए।

पाठ बोध :

करुणा के भाव से किए गए कार्य से मिलने वाली शांति/सुकून की कीमत पैसों से नहीं आँकी जा सकती, वह केवल आनंद के रूप में स्वयं अनुभव की जा सकती है।

बहादुर हमदर्द बच्चे

“मुझे बहुत दुःख है” श्री खन्ना ने पत्र खोलते हुए कहा, “मुझे डर है कि तुम दोनों ही सुन कर निराश होओगे।

उसका बेटा व बेटी अनिल और आशा ने उसकी ओर देखते हुए पूछा, “क्या बात है पिताजी ?”

पिताजी घबड़ाये हुए दिखाई दे रहे थे। “तुम दोनों छुट्टियों की प्रतीक्षा में थे,” उनके पिता ने कहा। “मुझे अभी मरवाह की चिट्ठी आई है कि वह बीमार है और मुझे वापस जाना पड़ेगा।”

“ओह पिताजी !” आशा ने उदास होकर देखा। “हम तो कल ही पहुँचे हैं।”

अनिल ने बुद्धिमता से देखा और कहा “फिकर मत करो पिताजी ! हम सब समझते हैं। आप कब तक वापस लौटेंगे ?”

“मुझे कुछ पता नहीं कि मैं कब वापस आऊँगा। मुझे हिसाब किताब देखने हैं क्योंकि मरवाह ने गड़बड़ कर रखी है। मुझे लगता है कि मुझे नुकसान उठाना पड़ेगा। इसी कारण जब तक मुझे यह मालूम नहीं होता कि मेरे पास कितने पैसे हैं, यह छुट्टियाँ चुपचाप बितानी पड़ेंगी।”

आशा ने कहा, “हम और भी तो बहुत कुछ कर सकते हैं, झील में तैर सकते हैं, घूमने जा सकते हैं किन्तु आप को तो और भी कठिनता का सामना करना पड़ रहा है।”

उसके पिता ने दोनों को प्यार किया और कहा ‘तुम दोनों बहादुर हो। खूब मजे करना और अपनी माँ की देखभाल करना। शायद मैं जल्दी ही वापस आ जाऊँ।’ इतना कह कर उसने सामान बांधना शुरू कर दिया।

“जाओ अपनी चचेरी बहन मंजू के साथ खेलो,” उनकी मां ने कहा ।

“मैं मंजू के साथ खेलना नहीं चाहता । क्या तुम उसके साथ खेलना चाहती हो ?” अनिल ने पूछा ।

“मेरे विचार में हमें उससे मित्रता रखनी चाहिये । आओ चलो, उससे पूछते हैं कि कल वह जिमखाना चलेगी,” आशा ने जवाब दिया ।

जब वे दोनों मंजू के घर गये तो वह घर में थी और वे कहने लगे, “हमारे पिताजी को वापस जाना पड़ गया । अब हमारे पास खर्च करने के लिये अधिक पैसे भी नहीं हैं ।”

मंजू ने ताने से जवाब दिया “यदि घुड़सवारी नहीं कर सकते तो यहाँ रहने की क्या आवश्यकता है । पिताजी के साथ क्यों, नहीं चले जाते ।”

“क्यों तुम जिमखाना जा रही हो ?” आशा ने बात बदलते हुए पूछा ।”

“क्यों नहीं ।” मंजू ने बदतमीजी से कहा । “मैं तो तीन खेलों में हिस्सा ले रही हूँ । मेरे ख्याल में तुम दोनों नहीं आओगे ।”

“हम जरूर आएँगे । हम खेलों में हिस्सा लें या नहीं, “अनिल ने जल्दी से जवाब दिया । “हम पिकनिक के लिये पहाड़ी पर अपना खाना भी साथ ले जायेंगे ।”

“अगर ऐसी बात है तो मैं भी चलूंगी ।” मंजू ने बिन बुलाये कह दिया ।

दूसरे दिन जिमखाना जाने से पहले वे पिकनिक का बचा खुचा सामान इकट्ठा कर रहे थे ।

“मैं यह सब बरतन नदी से धो कर लाती हूँ। तुम दोनों यह फल खा लेना।” आशा ने कहा।

वह सब बरतन लेकर झाड़ी के पास पहुँची, उसने एक छोटा-सा पहाड़ी घोड़ा दो चट्टानों के बीच में फंसा हुआ देखा और चिल्लाई, “अनिल ! मंजू !! जल्दी आओ।”

“वह देखो !” आशा ने इशारा करते हुए कहा।

“ओह ! बेचारा छोटा सा जानवर !, अनिल की आवाज दया से भरी थी। “न जाने कब से फंसा बैठा है।”

“पागल मत बनो ! पहाड़ी टट्टू ही तो है। अपने आप निकल जायेगा,” मंजू बोली।

अनिल ने उसकी ओर घूर कर देखा। “क्या तुम सोचती हो कि यह बेचारा इसी तरह रहना चाहता है, इसके सिर से पानी बह रहा है। आओ तुम दोनों। हम इकट्ठे मिलकर इस को बाहर निकालने की कोशिश करते हैं।”

पर मंजू पीछे हट रही थी। “इसे बचाते-बचाते हम सब गिर जायेंगे। वैसे भी हमें जिमखाना पहुँचने के लिए देर हो रही है,” मंजू कहने लगी।

आशा गुस्से से बोली, “जाओ तुम अपने कीमती जिमखाना में। हमारे लिए तो इसकी जान बचाना जरूरी है।”

बहन भाई दोनों ने मिलकर ताकत लगाई किन्तु उसे न निकाल सके।

“हमें मदद लेने के लिए पुलिस के पास जाना चाहिये” अनिल ने कहा।

“तुम जाओ । उनको बुला लाओ । मैं टट्टू के पास ठहरती हूँ । हम इसे अकेले नहीं छोड़ सकते,” आशा ने कहा ।

आशा टट्टू के पास बैठी रही और उसे फुसफुसा कर दिलासा देती रही । अनिल दो घंटे के बाद दो पुलिसमेन और एक रस्सा लेकर आ पहुँचा । उसको निकालने में एक घंटा लग गया ।



थके हुए, भीगे हुए, पानी से लथ-पथ दोनों बहन भाई टट्टू के साथ पुलिस स्टेशन पहुँचे । उनको वहाँ छोड़ कर अपने घर की ओर चल दिये । जिमखाना नहीं जा सके किन्तु आशा और अनिल को इस बात का कोई दुःख नहीं था क्योंकि उन्होंने एक बहुत अच्छा काम किया था ।

अगले तीन दिन दोनों को पुलिस स्टेशन जाना पड़ा क्योंकि अभी तक टट्टू का मालिक नहीं मिला था । घोड़ा भी उन्हें देख कर बहुत खुश होता था । मंजू ने दोबारा उन्हें मिलने की कोशिश नहीं की क्योंकि वह बताना नहीं चाहती थी कि वह पहले खेल में ही घोड़े से गिर गई थी ।

चौथे दिन उनके घर एक बूढ़ा-सा आदमी साफ कपड़े पहने हुए

आया । यह साथ वाले खेत का किसान था । उसने आते ही अपने आने का कारण बताया ।

“मैं आप को धन्यवाद देने आया हूँ” उसने कहा । “पुलिस ने मुझे बता दिया है कि तुम दोनों ने मेरे घोड़े की जान बचाई है । यह घोड़ा मुझे बहुत प्यारा लगता है । यह मेरे पोते के लिये रखा गया था । कुछ दिन पहले इसकी चोरी हो गई थी और मुझे शक है कि इससे भारी बोझा उठवाया गया है । मेरा बच्चा तब से बीमार है । इसको देखकर वह ठीक भी हो जायेगा ।

अनिल और आशा चुपचाप खड़े रहे । वे खुश अवश्य थे ।

“और अब” बूढ़े आदमी ने कहा “मैं यह जानना चाहता हूँ कि मैं तुम लोगों के लिये क्या कर सकता हूँ ? तुम दोनों कितने दिन यहाँ ठहरोगे ? क्या तुम्हें घुड़सवारी का शौक है ? मेरे पास काफी अच्छे-अच्छे घोड़े हैं । मैं तुम दोनों को एक-एक दे सकता हूँ । तुम जितने दिन यहाँ रहो इन पर चढ़ सकते हो । क्या यह अच्छा रहेगा ?

“क्यों नहीं” अनिल ने जवाब दिया । “हमें घुड़सवारी करना बहुत अच्छा लगता है । इस साल हम किसी कारण नहीं कर सके ।”

उसी समय दरवाजा खुला और खन्नाजी अन्दर आये ।

“पिताजी !” आशा खुशी से चिल्लाई और बोली- “आप इतनी जल्दी वापस कैसे आ गये ?”

“मरवाह अब ठीक हो रहे हैं” पिताजी ने जवाब दिया “और काम में इतनी गड़बड़ नहीं हुई । तुम्हारे घर में यह कौन मेहमान आया हुआ है ?”

बूढ़े आदमी ने खन्ना को बधाई दी और कहा, “आप के बच्चे बड़े अच्छे हैं। और आपको पूरी बात बता दी।

खन्नाजी कहने लगे, “मेरे बच्चों को जानवरों से बहुत प्यार है। असल में ये दोनों जीव-जन्तु कल्याण बोर्ड के सदस्य हैं।

“जीव-जन्तु कल्याण बोर्ड के सदस्य हैं ? उसका क्या लक्ष्य है ?”

“जानवरों के प्रति हमदर्दी का काम”

दोनों ने एक ही आवाज में कहा।

प्रश्नावली

(क) रिक्त स्थान भरिए-

1. अनिल और आशा का स्वभाव/व्यवहार अच्छा था जब कि..... एक बदमिजाज लड़की थी।
2. आशा ने दो चट्टानों के बीच पहाड़ी..... फँसा हुआ देखा।
3. टट्टू के पास बैठी रही।
4. अनिल दो घंटे बाद दो पुलिसमेन और एक लेकर आया।
5. जंगली घोड़े को भी कहा जाता है।

(ख) टट्टू (जंगली घोड़े) का मालिक कौन था ? उसके बारे में कुछ वाक्य लिखो।

(ग) तुम अनिल, आशा की तरह बनना पसंद करोगे या मंजू की तरह ? क्यों ?

पाठ बोध :

मूक जानवर भी सुख-दुख का अनुभव करते हैं,
हमें उनके प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए।

असहाय नेवला

छोटू ने घबराते हुए बिल में से अपना मुँह बाहर निकाला । उसकी माँ, बड़ा भाई और बहन सुबह से बाहर गये हुए थे । छोटू भूख से परेशान था । वह डर के मारे बाहर निकलना नहीं चाहता था । उसकी माँ कह गई थी “जब तक मैं आवाज न दूँ , तुम बिल के अन्दर ही बैठे रहना ।”

जब घरवाले खाने की खोज में घर से बाहर निकले तो छोटू सोया हुआ था । जब वह जगा तो बहुत देर हो चुकी थी । वह बेचैनी से इन्तजार कर रहा था । उसे क्या मालूम कि उनके पीछे एक कुत्ता लगा था, जिसके कारण वह सब डरे हुए थे और घर वापस आने की हिम्मत नहीं कर रहे थे ।

छोटू पहले कभी भी इतने समय के लिए अकेला नहीं रहा था । भूख के मारे उसकी जान निकल रही थी । वह सावधानी से बिल के बाहर निकला, इधर-उधर सूँघता हुआ और डरता हुआ आगे बढ़ा । सड़क पर पहुँच कर उसने बहुत कुछ देखा । कहीं पेड़ों की कतार थी, कहीं बकरियाँ चर रही थी और कहीं बच्चे खेल रहे थे । वह सब देख कर बहुत खुश हुआ । छोटू को अपने माँ-बहन-भाई कहीं भी दिखाई नहीं दिये । जैसे ही वह सड़क पर चल रहा था अचानक उसे सुनाई दिया-

“देखो ! देखो ! एक नेवला ! इसे जल्दी से पकड़ लो ।”

छोटू ने बचने की कोशिश की किन्तु किसी ने उसे पकड़ लिया । छोटू ने काटने की भी कोशिश की मगर उसका गला कसकर दबा हुआ था ।

“तुम इसका क्या करोगे ?” कोई दूसरा बोला । “यह तो बहुत ही छोटा है । साँप भी नहीं पकड़ सकता ।”

“और भी अच्छा,” पहले वाले ने कहा । “मेरे मामा के पास भी

न्याला था, वह खो गया है। इसको पाल सकते हैं” पकड़ने वाले ने छोटू को जेब में डाल लिया। उसने छूटने की कोशिश की किन्तु कामयाब नहीं हुआ।

कुछ घंटों के बाद उसको दूसरी जगह लाया गया।

“मामाजी देखो, मैं आपके लिए क्या लाया हूँ। आपने अपना नेवला खो दिया था। मैंने इसको बड़ी कठिनता से पकड़ा है। मेरी माँ कहती है कि आप मुझे अवश्य ही एक रुपया देंगे।”

“तुम्हारी माँ गलत कह रही है” मामाजी ने जवाब दिया। “मैं तुम्हें कुछ नहीं दूँगा। मुझे पहले नेवला दिखाओ तो सही।”

मामाजी ने छोटू को हाथ में लिया और कहने लगे, “मैं तुम्हें 25 पैसे दूँगा। यह इसके लायक भी नहीं है। इसको सिखाने में बहुत समय लगेगा तब कहीं सांप पकड़ना सीख पायेगा।

छोटू को एक छोटे से पिंजरे में डाल दिया गया और एक रोटी क टुकड़ा उसके आगे फेंक दिया गया। छोटू ने बाहर निकलने के लिये बहुत सिर पटका किन्तु कोई सफलता नहीं मिली। बेचारा थक कर सो गया।

कैद में रहते बहुत दिन निकल गये। छोटू गन्दे पिंजरे में भूख तड़पता रहता था। एक हफ्ते बाद उसके गले में रस्सी बांधी गई।

“अब काफी समय हो गया है” मामाजी ने कहा। “इसको स पकड़ना सिखाना चाहिये। चलो जाओ वह सांप उठा लाओ।”

“क्या तुम थोड़ा और इन्तजार नहीं कर सकते कि यह और ब हो जाये?” किसी दूसरे आदमी ने, जो सपेरा लगता था, पूछा।

“मैं और इन्तजार नहीं कर सकता” मामाजी बोले। “जाओ अ टोकरी खोलो।

सपेरे ने उसी समय टोकरी खोल दी। उसमें से तीन डर निकले। छोटू डर के मारे पीछे हटा तो मामाजी ने झटके से पटक दिया। एक सांप छोटू की ओर बढ़ने लगा। उसी समय बीन बजानी शुरू की, सब सांपों ने नाचना शुरू कर दिया। जो की और बढ़ रहा था उसने भी झूमना शुरू किया।



अचानक बीन बन्द हो गई और सपेरा कहने लगा, “मैंने ही कहा था कि अभी इसको पिंजरे में ही रहने दो।”

“नहीं हम इसे आज अपने साथ ले जायेंगे। इसे सीखना मामाजी ने कहा। उन्होंने छोटू को रस्सी से घुमा कर पिंजरे में और शाल से ढक दिया। गर्मी से परेशान छोटू की जान थी। वह बार बार इधर-उधर भटक कर टक्कर खा रहा था। में वे दोनों आदमी एक होटल, जहाँ वे हमेशा बैठा करते थे, ज

एक बार फिर बीन बजी और डर के मारे छोटू की

लगी । वह सोचने लगा कि न जाने अब उसके साथ क्या होगा । सपेरे ने टोकरी खोल दी और लोगों को तमाशा दिखाने लगा ।

अचानक छोटू को दो परदेशियों की बातचीत की आवाज सुनाई दी । वे अंग्रेजी में बात कर रहे थे ।

“ओह ! देखो हेनरी यह नेवला कितना प्यारा है !” एक औरत ने कहा । “क्या तुम्हारे ख्याल में वह इसे बेचेगा । मैं एक नेवला पालना चाहती हूँ ।”

“चलो कोशिश करते हैं ।” परदेशी ने सपेरे से पूछा, “क्या तुम इसको बेचोगे ? मेरी पत्नी तुम्हारे नेवले को खरीदना चाहती है । कितने में बेचोगे ?”

“यह बहुत अच्छा नेवला है । मैं आपको दस रुपये में दे दूँगा । मुझे तो पन्द्रह में पड़ा था’ मामाजी ने चालाकी से कहा ।

“छोड़ो हेनरी !” उसकी पत्नी ने कहा । “यह बुरा आदमी तुम्हें धोखा देना चाहता है ।” यह कहकर वह चल पड़ी ।

हेनरी भी वैसे ही चल देता किन्तु एक अजीब बात हुई । नाले में से एकदम किसी न्योले की आवाज आई । छोटू ने पहचान लिया कि वह तो उसकी माँ थी । छोटू जोर जोर से चीखने लगा । लेकिन माँ की झाड़ी में से बाहर निकलने की हिम्मत न पड़ी ।

वह परदेशी वापस आया । “यह लो दस रुपये का नोट । मुझे मालूम है कि तुम धोखा दे रहे हो,” हेनरी ने कहा । पैसे देकर उसने न्योले को उठा लिया और झाड़ी की ओर चल पड़ा । छोटू की रस्सी खोल दी और बोला, “अब तुम अपनी माँ के पास जाओ । इधर-उधर किसी के पंजे में मत आना ।”

छोटू जल्दी से बिजली की तरह माँ के पास भाग गया ।

हेनरी अपनी पत्नी के पास आ गया । “इतनी देर तुम क्या कर रहे थे” उसने पूछा । “तुम हमेशा की तरह फिर धोखा खा गये हो ? ”

हेनरी ने सिर हिलाया और कहा “जो किया अच्छा ही किया । नेवला अपनी माँ के पास जाना चाहता था क्योंकि वह अभी छोटा ही था । ”

प्रश्नावली

(क) उत्तर लिखिए-

1. छोटू कौन था ? वह बिल से बाहर क्यों निकला ?
2. छोटू की माँ, भाई, बहन कहाँ गए ?
3. एक लड़का छोटू को पकड़ कर कहाँ ले गया ?
4. लड़के को मामाजी ने छोटू नेवेले की क्या कीमत दी ?
5. परदेशी ने छोटू को कितने में खरीदा ?

(ख) रिक्त स्थान भरिए-

1. छोटू को एक छोटे में डाल दिया गया ।
2. उसके आगे का टुकड़ा फेंक दिया गया ।
3. छोटू कैद में रहने पर बहुत था ।
4. एक दिन उसे बाहर निकाला गया और उसके आगे तीन डरावने.....छोड़ दिए गए ।

(ग) परदेशी ने छोटू को खरीदकर क्या किया ? अपने शब्दों में लिखो ।

पाठ बोध :

परिवार से बिछुड़ कर रहने का तात्पर्य- कदम-कदम पर भय का साया ।

कछुए की बहिन

कछुआ तालाब से निकला और धीरे-धीरे सरक कर खेत की मेड़ पर आकर बैठ गया । उसे तालाब से बाहर की दुनियाँ बहुत प्यारी लगी । स्कूल से लौटते-खिलखिलाते बच्चों को देखकर उसका मन मचल उठा । उसने सोचा- मैं भी बच्चों की तरह खिलखिलाता, कंधे पर बस्ता लटका कर स्कूल जाता ।

उसने अपना सिर निकालकर बच्चों की तरफ देखा । दो शैतान बच्चों ने उसको देख लिया । फिर क्या था ! दोनों उसे बारी-बारी से ढेले मारने लगे । कछुए ने अपने हाथ, पैर, सिर सब एकदम समेट लिए । खोपड़ी पर लगातार ढेलों की मार से उसे लगा कि वह मर जाएगा । लड़कों के साथ एक छोटी लड़की भी थी । वह चिल्लाई- 'क्यों मार रहे हो ? इसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?'

'तुम्हें बहुत दुख हो रहा है ? यह तुम्हारा भाई है क्या ?' एक शैतान लड़के ने कहा ।

'इसे राखी बांध देना ।' दूसरा लड़का कछुए को ढेला मार कर बोला ।

लड़की की आंखों में आँसू आ गए, 'यह मेरा भाई हो या न हो, पर यह दुश्मन भी नहीं है ।'

'अरे, ओ कछुए की बहिन ! अपने घर चली जा ।' दूसरा बोला ।

सभी-बच्चे 'कछुए की बहिन ! कछुए की बहिन !! कछुए की बहिन !!! कहकर जोर-जोर से हंसने लगे । उन दोनों शैतान लड़कों ने कछुए को उल्टा करके ढेलों के बीच में रख दिया ।

लड़की चुपचाप अपने घर चली गई ।

घर पहुँचने पर उसका मन बहुत उदास हो गया । वह सोचने लगी, 'बेचारा कछुआ ! कब तक उल्टा पड़ा रहेगा ?

उसे लगा जैसे वह सचमुच उसका भाई ही हो । वह चुपचाप घर से निकली और तालाब के किनारे पहुँची । कछुआ उल्टा पड़ा हुआ था । वह सीधा होने के लिए छटपटा रहा था । लड़की ने चारों तरफ देखा । आसपास कोई नहीं था । वह उसे उठा कर तालाब की तरफ दौड़ी । उसने कछुए को तालाब के पानी में छोड़ दिया ।

कछुए ने अपनी लंबी गर्दन निकाली । चमकती छोटी-छोटी आंखों से लड़की की तरफ प्यार से देखा और फिर गहरे पानी में उतर गया ।

लड़की खुश होकर घर की तरफ दौड़ी । अब उसे कोई 'कछुए की बहिन' कहे तो वह नहीं चिढ़ेगी ।

प्रश्नावली

(क) उत्तर लिखिए-

1. कछुआ स्कूल के बच्चों को देखकर मन ही मन क्या सोच रहा था ?
2. छोटी लड़की क्यों उदास थी और उसने अपनी उदासी दूर करने के लिए क्या किया ?

(ख) किसने कहा-

1. "इसे राखी बाँध लेना ।"
2. "यह मेरा भाई हो या न हो, पर यह दुश्मन भी नहीं है ।"

(ग.) यदि आप वहाँ होते तो लड़कों के साथ कैसा बर्ताव करते ?

पाठ बोध :

मूक पशुओं को सताना बुरा है,
उनकी सहायता करना अच्छा है ।

आज्ञाकारी चैम्पियन

हैरी लटकने वाले कानों तथा लगभग मानव जैसी आँखों वाला सुनहरा कोंकरस्पेनियल अब जिन्दा नहीं है। एक समय में “आज्ञाकारी चैम्पियन” कहलाने वाले हैरी ने प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी तथा बालकों एवं बड़ों को बराबर लुभाया था।

हैरी कोई साधारण कुत्ता नहीं था। दो “प्रजाति-चुनौती” प्रमाण-पत्रों का विजेता था तथा उसने कई सौन्दर्य प्रतियोगिताओं में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किये थे। उसे एक प्रदर्शनी में “श्रेष्ठ स्वर्णिम कोंकर” घोषित किया गया। उसके बराबर का दूसरा कोंकरस्पेनियल विश्व-भर में नहीं है। इसे अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता तथा “आज्ञाकारी चैम्पियन” पुरस्कार दिये गये, यह लगभग पचास देशों में अपनी प्रजाति का एकमात्र कुत्ता था। हैरी का जन्म- 22 अगस्त 1959 को हुआ तथा मृत्यु- 29 सितम्बर 1969 को हुई। उसको तीव्र बुखार तथा गंभीर संक्रामक रोग हुआ था, जिससे चौबीस घंटों में उसकी मृत्यु हो गई। यह दस वर्षों की अवधि हैरी तथा दिल्ली के उसके प्रशिक्षक श्री ए. पी. कनोडिया के लिए कीर्तिमान स्थापित करने वाली अवधि रही।

हैरी दो बार “आज्ञाकारी चैम्पियन” बना। कोई भी कुत्ता चैम्पियनशिप प्रदर्शनों में तीन विभिन्न निर्णायकों के द्वारा तीन बार आज्ञाकारिता चुनौती प्रमाण-पत्र जीत लेता है, तो वह “आज्ञाकारी चैम्पियन” बनता है। हैरी ने छः विभिन्न निर्णायकों के तहत ऐसे सात प्रमाण-पत्र जीते थे। इस प्रकार उसने दो बार “आज्ञाकारी चैम्पियन” और अन्य कई पुरस्कार जीते थे। इस अद्भुत कुत्ते ने मुम्बई, दिल्ली, कोलकत्ता, चेन्नई, बैंगलूर, नैनीताल तथा शिमला में डोग-शो में भाग लिया था। मुम्बई और दिल्ली के कुत्तों से सम्बद्ध इतिहास में किसी भी नस्ल के कुत्तों में “आज्ञाकारिता चुनौती प्रमाण-पत्र” प्राप्त करने वाला पहला कुत्ता था।

कुत्तों में तीन “प्रजाति ग्रुप” (ब्रीड-ग्रुप) होते हैं । भारत का हैरी “आज्ञाकारी चैम्पियन” बनने वाला छोटी प्रजाति का एकमात्र कुत्ता था । अल्सेशन, डॉबरमन, पिन्सचर, लैरडार, रिट्रीबर और पुलिस कुत्ते जैसे कई बड़ी प्रजाति के कुत्तों ने आज्ञाकारिता प्रतियोगिताओं में भाग लेते समय हैरी के आगे हार मान ली थी । उसने कई बार बड़े-बड़े अंतर से अपने प्रतिद्वन्द्वियों को हराया था, एक बार तो यह हराने का फासला सत्तर अंकों तक पहुँच गया था । अपनी पाँच वर्ष की उम्र में, कोलकत्ता के अन्तर्राष्ट्रीय निर्णायक के सामने सातवीं बार आज्ञाकारिता चुनौती पुरस्कार प्रमाण-पत्र जीतने से हैरी ने ‘आज्ञाकारिता’ में पहले के सभी राष्ट्रीय रिकार्ड तोड़ डाले । तब सेलेक्ट जिसने कई पुरस्कार जीते थे, उसने किसी “डोग-शो” में प्रवेश नहीं किया ।

हैरी तब तक एक मास्टर बन चुका था अर्थात् कभी-कभी “डोग-शो” में नुमाइश देने तथा अपने कौशल तथा अपराजेय करतबों के लिए राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय ट्रॉफियाँ, कप और पदक प्राप्त करने के लिए ही जाता था । इसको भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के उपमंत्री के द्वारा स्वर्ण पदक भी प्रदान किया गया । उसके स्वामी ने लगभग पचास देशों से, जहाँ केनेल क्लब चलाये जाते हैं, कोंकरो के संबंध में विवरण प्राप्त किया, उसमें “आज्ञाकारी चैम्पियन” पदक जीतने वाला कोई दूसरा कोंकर स्पेनियल नहीं था । इसमें आश्चर्य की बात नहीं कि इस सुनहरे बाल वाले कुत्ते को “विश्व का प्रथम आज्ञाकारी चैम्पियन कोंकर स्पेनियल” घोषित किया गया ।

आज्ञाकारिता में परिपूर्णता प्राप्त करने के बावजूद, हैरी के पास बाजीगरी भी थी, वह अतिथियों के स्वागत के लिए गुलाबों का गुलदस्ता ला सकता था; हिन्दू शैली में नमस्ते-अभिवादन कर सकता था; लोगों से हाथ मिला सकता था; अनेक पत्तों में से चिन्हित कार्ड चुन सकता था । चार-चक्र के फाँद से होकर बाध की तरह कूद सकता था; जमीन पर लुढ़क

सकता था । वस्तुओं की रखवाली करना, डूबते को बचाना, रेंगते हुए चलना, कहने पर बोलना, नाचना, गाना, हँसना, और विभिन्न चेष्टाओं को कर दिखाते हुए किसी का भी पता लगा सकता था । किसी छिपी हुई वस्तु को गंध के आधार पर खोज निकालने की उसकी चमत्कारी क्षमता आश्चर्यजनक थी । इसी के कारण उसे मानवीय मेधा सम्पन्न कुत्ता कहा गया था ।

भारत में विभिन्न डोग-प्रदर्शनियों में “हैरी” केन्द्र बिंदु रहा । संगठक तथा शुनक-प्रेमी हैरी के आश्चर्यजनक आज्ञाकारिता कौशल की एक झलक देखने को उत्साहित रहते थे । फिल्मी अंदाज में उसकी अदाकारी का एक उदाहरण इस प्रकार है- नायक का निधन हुआ है । उसके कुत्ते के शोक का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता । उसे बड़ा धक्का लगा है, और दुःख हुआ है, और वह कुत्ता खाने को इन्कार करता है । बिस्कुट उसके मुँह के आगे रखे जाते हैं, वह उन्हें छूता भी नहीं, जोर से रोने लगता है और दुःखी माहौल बना देता है ।

हैरी अपने प्रशिक्षक का प्रत्येक शब्द समझता है । कूटनीतिज्ञों, सांसदों, उच्च अधिकारियों तथा प्रसिद्ध नागरिकों की विशिष्ट सभा में अपने अंतिम प्रदर्शन में जब हैरी गाने लगा तब बच्चे ‘ही-ही’ करने लगे । यह एक मिनट का संगीत सत्र दिल्ली में सम्पन्न हुआ । यद्यपि कोई प्रगीत (गीत रचना) नहीं रहा, फिर भी लहजे की एक धुन सुनाई पड़ती थी । आवाज के आरोह-अवरोह के साथ सुर का ऊँचा-नीचा होना सुनाई पड़ता था । यह सचमुच अद्भुत बात थी ।

दिल्ली के “इण्डियन एक्सप्रेस” ने टिप्पणी की “अपने उस्ताद की आवाज” (His Master's Voice) ने उसे प्रोत्साहित किया और उसने आज विस्मय-मुग्ध दो सौ लोगों के सामने एक मंजे हुए कलाकार की तरह गायन किया ।”

हैरी की प्रशंसा भारत और विदेशों की पत्र-पत्रिकाओं ने की ।

टाइम्स ऑफ इण्डिया ने दिनांक 18 फरवरी 1964 को लिखा- “आस्ट्रेलियायी पुरस्कार प्राप्त करने के लिए जब वह श्रीमती इन्दिरा गांधी के पास गया, हैरी को देश-भर में उत्तम व्यवहार का कुत्ता पाया गया। हैरी ने अपने दोनों हाथों को जोड़कर प्रधानमंत्री का अभिवादन किया, उस समय कुत्ते की मुस्कुराहट अद्भुत थी।

सन् 1962 में हिन्दुस्तान टाइम्स ने हैरी के नमस्ते की टिप्पणी की “किसी भी आदमी को भौचक्का कर देने वाला अभिनन्दन।” कई विदेशी कुकुट क्लबों, शुनक-प्रेमियों तथा कुकुट विशेषज्ञों-प्रशिक्षकों ने हैरी में दिलचस्पी दिखाई तथा विदेशों से डोंग-शो में हैरी के भाग लेने हेतु निमंत्रण देने के लिए श्री कनोडिया के पास आये। हैरी अब हमारे बीच में नहीं है। उसका शरीर दिल्ली में कुत्तों के कब्रिस्तान में रखा गया है, परन्तु उसके अद्भुत कारनामे असंख्य कुत्ते-प्रेमियों की याद में हमेशा अक्षुण्ण बने रहेंगे। उसने भारत का स्तर कुत्तों की दुनियाँ में भी ऊँचा किया।

प्रश्नावली

(क) उत्तर लिखिए-

1. कोई कुत्ता आज्ञाकारी चैम्पियन कैसे बनता है ?
2. हैरी के बारे में क्या लिखा -

(अ) सन् 1962 में हिन्दुस्तान टाइम्स ने।

(ब) सन् 1964 में टाइम्स ऑफ इंडिया ने।

(ख) एक शब्द में बताओ-

1. हैरी के प्रशिक्षक का नाम लिखो।
2. कुत्तों में कितने प्रजाति गुण होते हैं ?
3. हैरी कितने वर्ष जिया ?
4. आस्ट्रेलियायी पुरस्कार उसने किससे प्राप्त किया ?

(ग) आज्ञाकारी चैम्पियन-हैरी की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

पाठ बोध : जानवरों की दुनियाँ का भी कोई कम महत्व नहीं।

लिंगन की करुणा

लिंगन जब लड़का था, संवेदनशील रहा; लिंगन जब युवा था सहानुभूतिशील रहा; लिंगन जब वयस्क बना, करुणामय रहा । इतिहास इस महान् आत्मा की दयालुता से भरपूर है, तथा उसका जीवन साबित करता है कि मानवता एवं दयालुता दोनों साथ-साथ चलती हैं ।

लिंगन फरवाले तथा परवाले हरेक प्राणी का दोस्त रहा तथा अपने कुत्ते 'हनी' के प्रति विशेष अनुराग रखता था । एक दिन भीषण गर्मी में जब वे एक बोरे में गेहूँ लेकर चक्की पर आटा पिसवाने के लिए जा रहे थे, तभी उन्हें रास्ते में यह कुत्ता मिला ।

इस कुत्ते की एक टांग टूट चुकी थी और उसके स्वामी ने उसे छोड़ दिया था । उसने तत्काल अपने भारी बोरे को एक जगह पर रखा और उस छोटे कुत्ते को उठाकर एक नदी के पास ले गया । उसकी घायल टांग को धोया और उसे ताजा पानी पिलाया । वह उसे अपने घर ले आया; खपची लगाकर उसकी टांग को बांध दिया और एक साफ मुलायम बिस्तर पर ठंडी छाया में रखा तब से लेकर ये दोनों सच्चे दोस्त बने ।

हनी हमेशा लिंगन के छोटे-मोटे कामों पर जाते समय भी, उनके साथ चलता था और हर काम के पूरा होने तक सब्र करके खड़ा रहता था । दोनों एक साथ जंगल में खुशी से चलते थे, लिंगन जोशीले स्वर में गुनगुनाते हुए तथा हनी उनके आगे और पीछे खुशी के उन्माद में दौड़ता हुआ ।

एक समय जब ये दोनों साथ थे, लिंगन एक गुफा के अन्दर दो पत्थरों के बीच जकड़ गया । वह अपने आप को छुड़ा नहीं सका तब हनी ने खतरे को समझा और घर की ओर दौड़कर जोर-जोर से भौकना शुरू

किया जिससे तुरन्त बड़ी संख्या में लोग इकट्ठे हो गए और इस तरह उसने अपने मालिक को बचाया ।

जब कभी हनी कोई गलती करता था, लिंकन उसे दया से और धीरे-धीरे फटकारते थे; उन्होंने समझ लिया था कि जानवर मनुष्यों की तरह अक्सर गलतियाँ करते हैं क्योंकि वे कुछ ज्यादा समझ नहीं सकेंगे और धीरे-धीरे समझाने तथा करुणा दिखाने से गलतियाँ सुधर जाएँगी परन्तु कड़े शब्दों और गालियों से काम नहीं बनेगा ।



हनी उनके करुणापूर्ण व्यवहार के कारण, अपने स्वामी में विश्वास और प्यार रखता था । लिंकन बदले में हर दिन ईश्वर से प्रार्थना करता था कि वे हनी को एक अच्छा कुत्ता बनाये रखें ।

लिंकन की अबोध प्रार्थना में एक अप्रतिरोध्य निवेदन निहित रहा-
“हे भगवान, माताजी की मदद करें, पिताजी की मदद करें, बहन की मदद करें, हरेक की मदद करें, पढ़ने लिखने में मेरी मदद करें । हनी की देख रेख करें और उसे अच्छा कुत्ता बनावें और असभ्य स्थिति में खो जाने पर हम सबको बचावें ।”

यह स्मरण किया जा सकता है कि लिंकन के परिवार ने कई अन्य परिवारों के साथ केन्टुकी से इल्लिनॉयस को प्रवास किया था। उन्होंने बैल दल से यात्रा की, वे दिन में जितनी यात्रा कर सकते थे, करते तथा शाम में किसी नदी के किनारे अथवा पानी मिलने वाले किसी अन्य जगह में ठहर जाते थे। एक दिन सवेरे, प्रशांत एवं ठंडी रात के बाद इस समूह ने देखा कि रातभर में बरफ के पतले परत बन गये थे और वे तटों पर चौरस फैल गए थे। एक-एक परिवार के लोग उस ठंडे पानी को पार करते हुए आगे बढ़े।

तब एक छोटा पीला कुत्ता धारा की दूसरी तरफ से पानी के किनारे चला आया। जैसे ही कैम्प बिखरने लगा, यह छोटा कुत्ता जंगलों में चला गया तथा उसने इन पथ प्रदर्शकों के प्रस्थान पर ध्यान नहीं दिया। जब वह वापस आया, तो सब लोग जा चुके थे। वह अकेले उस पार जाने की हिम्मत न करके भौंककर मदद मांगने लगा। मगर कुत्ते के लिए पानी में उतरने तथा समय निकालने के लिए कोई भी तैयार नहीं था। कैम्प में पहले से कई कुत्ते थे। इस चौपाये नन्हे प्राणी पर किसी ने ध्यान नहीं दिया सिवाय अकेले एक छोटे लड़के को छोड़कर जो कि लिंकन नाम से जाना जाता था। उसने उसकी चीख सुनी। कोशिश करने पर भी वह इस करुण पुकार की अनसुनी नहीं कर सका। सहयात्रियों की हंसी-मजाक की परवाह न करते हुए, उसने अपने जूते निकाले, पतलून थोड़ा ऊपर कर लिया और पानी के उस पार तक आगे बढ़ा, छोटे कुत्ते को अपनी बाँहों में लिये वह वापस आया और अपने पथ प्रदर्शक दल में अपना स्थान ग्रहण कर लिया।

लिंकन अपने जीवन-भर, असहायों का समर्थन करने और उनकी रक्षा करने में लगा रहा। एक अवसर पर उसने एक सुअर को कीचड़ में जकड़ा हुआ देखा वह टेढ़े-मेढ़े चलते हुए मुलायम मैदान पर चला और

प्रयास करने पर भी और गहराई में धँसता गया । लिंकन अच्छे कपड़े पहने हुए था । उसने पहले सोचा कि इस सुअर के झमेले में न पड़े । परन्तु कुछ दूर जाने पर उसका मन उस बेचारे जानवर पर दया से भर गया । यद्यपि लिंकन के कपड़े उस कीचड़ एवं गंदगी से पूरी तरह से खराब हो गये फिर भी उसने पीछे चलकर उस प्राणी की रक्षा की थी ।

इसी तरह एक बार एक युवा वकील के रूप में लिंकन अपने साथियों के साथ घने जंगलों में होकर तथा घास के मैदान में अपने घोड़े पर बैठकर जा रहा था । वे वृक्ष-समूहों से होकर चिड़ियों के गानों का मजा लेते हुए जा रहे थे, उन्होंने एक पक्षी शावक को अपने घोंसले से गिरते हुए देखा । वे लोग कुछ ही दूर गये होंगे कि इस बीच में लिंकन अपने घोड़े से उतरकर आया और उस जगह पर जाकर असहाय पक्षी को फड़फड़ाते हुए देखा, उसने सावधानी से उसे अपने हाथों में उठाकर घोंसले के बगल में एक डाली पर रखा । जब वे अपने साथियों से मिले, उनमें से एक ने लिंकन को देर करते हुए देखकर पूरे दल का समय व्यर्थ करने के लिए फटकारा । 'मेरे दोस्त !' लिंकन ने जवाब दिया, मैं इतना ही कह सकता हूँ कि मुझे इस प्राणी की रक्षा से अब बेहतर लग रहा है । यदि इस नन्हें जीवन को जमीन पर मर जाने दिया होता तो मुझे रात भर नींद नहीं आती ।

एक और सन्दर्भ में सिविलवार के दौरान जनरल ग्रान्ट के मुख्यालय का संदर्शन करते समय मातृहीन तीन बिलौटों को जमीन पर रेंगते हुए देखा । उन्होंने उन बिलौटों को सावधानी से ले लिया और उन्हें राहत पहुँचाई और वहाँ के एक कर्मचारी-अधिकारी से उन अनाथ शावकों को ज्यादा ताजा दूध देने को और अत्यन्त दया के साथ देख-रेख करने को कहा । उस घटना के बाद लिंकन को उस कार्यालय में तीन-चार बार वापस जाने का अवसर मिला और हर बार उन्होंने उन बिलौटों को देखा तथा वात्सल्य से थपथपाया ।

“सहृदयता” उनके स्वभाव का आर्ष शब्द था और उनके युद्ध के दबाव में अथवा उनके राजनैतिक क्रियाकलापों के भ्रम में मानव अथवा जानवरों के प्रति उनका सहज एवं करुणापूर्ण व्यवहार देखकर उनके सहयोगी भी बार-बार चौंक पड़ते थे ।

माताएँ जिनके पुत्रों ने युद्ध में अपना प्राण त्याग दिया था, के प्रति इनकी दया का, सुस्पष्ट अथवा अन्यथा प्रमाण मिलते हैं । उन बालक-बालिकाओं के लिए जिनके पिता इस महायुद्ध के कारण छिन गये थे, लिंकन का हृदय भर आया तथा वे आँसूओं में डूब गए । असहायों के बीच में एक असहाय रहते हुए ये मानवता के लिए संघर्ष करना जानते थे तथा दूसरों के दुःख से प्रभावित होकर उसे दूर करने में स्वयं कष्ट भी भोगते थे । कोई भी सहृदयी व्यक्ति इस लेख/घटना को पढ़कर लिंकन की मानवतावादी दृष्टि के प्रति नतमस्तक हुए बिना नहीं रह सकता ।

प्रश्नावली

(क) उत्तर लिखिए-

1. लिंकन के कुत्ते का नाम क्या था ? वह उन्हें कैसे मिला ?
2. लिंकन प्रतिदिन क्या प्रार्थना करते थे ?
3. मातृहीन तीन बिलौटों को देखकर लिंकन ने क्या किया ?
4. गुफा में फँसे लिंकन को कुत्ते हनी ने कैसे बचाया ?

(ख) लिंकन बहुत ही दयालु स्वभाव के थे । यह कथन पाठ के आधार पर कोई तीन उदाहरण देकर सिद्ध करो ।

पाठ बोध :

अपने सह प्राणी पशु पक्षियों के प्रति करुणा भाव रखकर
श्रेष्ठ मानव जीवन को सफल बनाओ ।

चौपाया डॉक्टर

जब कभी हमारे पालतू कुत्ते अथवा बिल्ली अथवा किसी जानवर मित्र को कुछ बीमारी और दर्द होता है तो हमें पशु चिकित्सक तुरन्त याद आते हैं। मनुष्यों के समान जानवरों की ऐसी दर्दनाक हालत में भी हमें सक्षम चिकित्सकीय सहायता की जरूरत होती है और हम चाहते हैं कि वह हमें जल्दी से जल्दी मिल जाए।

रेड-इन्डियन (गोरे-इन्डियनों) ने भेड़ियों से जाना है कि गंधक-स्रोत गठिया (रूमाटिज्म) के इलाज में काम आते हैं, भालुओं से सीखा है- लाल मिट्टी (मृत्तिका) के स्नान से घाव भर जाते हैं; हिरन से सीखा है कि पर्णांग से बुखार का इलाज किया जा सकता है। यूरोपवासियों ने बीमार बिल्लियों की निगरानी करने से पुदीना के गुणों के बारे में बहुत पहले ही जान लिया था।

जानवरों के पास “दवाखाने” हैं। यद्यपि जंगलों (बुड्लैण्ड) तथा घासवाले मैदानों के जंगली जानवर तथा हवा में उड़ने वाले पक्षी किसी फार्मसी-स्कूलों में नहीं जाते फिर भी नुस्खा (Prescription) के अनुसार दवाओं का मिश्रण करना जानते हैं। इनको सही खुराक मालूम है। वे मालिश की आरोग्यकर क्षमता तथा गरम एवं ठंडे स्नान के रोगोपचारक मूल्य जानते हैं। लोमचर्म तथा पर के कुछ शल्य चिकित्सक टिकाऊ खपची से टूटे हुए टांगों अथवा पंखों को जोड़ना जानते हैं।

राष्ट्रीय पार्कों में हृष्ट-पुष्ट बूढ़े भालू अपने दर्द से छुटकारा पाने के लिए गरम स्नान लेना पसन्द करते हैं। वर्षा के समय जंगली टर्की अपने नन्हे शावकों को नमी के कारण होने वाली परेशानियों से बचाने के लिए “स्पाइस-बुश” खिलाती है।

बिल्लियाँ बुखार के समय अपने पाँवों को ठंडे पानी में रखती हैं।

घायल जंगली सुअर घाव भरने तथा इस संक्रमण से बचाने के लिए लाल मृत्तिका में लोटनी लेता है। बीमार पड़ने पर हिरनें और भेड़-बकरियाँ सीधे अपने खुले दवाखाना अर्थात् जहाँ प्रकृति ने उनके लिए प्रचुर उपचारात्मक जड़ी-बूटियाँ फैला रखी हैं, में चली जाती हैं।

कुछ साल पहले, एक इलेक्ट्रिकल कम्पनी एक मशीन बाजार में लाई जो कृत्रिम ज्वर पैदा करती है। जिसे कुछ बीमारियों के इलाज हेतु उत्तम प्रगति मानकर विज्ञान जगत में इसका स्वागत किया गया। परन्तु हमारी सामान्य छोटी लोमड़ी कई शताब्दियों से कृत्रिम ज्वर पैदा करने के बारे में जानती है। बिल्ली फॉक्स (सियार) मिट्टी के साथ हरे पत्ते मिलाकर घाव पर मिश्रण को लगाता है, उनके सारे उपचारात्मक प्रभावों के साथ बुखार पैदा किया जाता है।

किसी लोमड़ी को चीचड़े पड़ जाते हैं तो वह अपने मुँह में ऊनी रद्दी रख लेता है और पानी में जाता है; उसकी नाक मात्र तल के ऊपर रहती है जब सारे चीचड़े शरीर से निकलकर उस ऊनी रद्दी पर एकत्र हो जाते हैं, तब वह उस ऊनी गेंद को पानी में डालकर बाहर निकल आ जाती है।

खेतों में तथा जंगलों में रहने वाले कई नागरिक हाइड्रोथेरापी के हितकारी मूल्य जानते होंगे। बीमार जानवर नदी प्रवाह के पास लेटकर, कम खाकर अथवा नहीं खाकर और अधिक से अधिक शुद्ध जल पीकर सामान्य बीमारियों से अपने-आप स्वस्थ बने रहना जानते हैं। पेट की गड़बड़ से ग्रस्त हाथी कुछ दिन भूखे रह जाते हैं और अल्कालिन मिट्टी जो कि एक जुलाब का काम करती है, निगल लेते हैं।

जंगली ड्रगस्टोर (Forest Drugstore) में घावों, खरोंचों तथा टूटी हड्डियों के इलाज का भण्डार मौजूद है। भालू घावों से रक्त स्राव को रोकने के लिए पेड़ के चिकने गोंद का लेप लगाते हैं। घायल अंगों पर वे गाढ़ा

मृत्तिका-लेप लगाते हैं। ऊदबिलाव और मस्क-चूहे घावों में मृत्तिका का प्रयोग करने में बड़े निपुण हैं। वे घावों को पानी से धोना जानते हैं। अपने खरोंचों पर रगड़ने के लिए गोंददार पेड़ों से गोद का चयन करते हैं।

अंगच्छेदन इनके लिए मामूली बात है। फंसे हुए जानवर अपनी टांग तुड़वाने और एतद्वारा मुक्त होने के लिए झिझकते नहीं। यद्यपि यह प्रक्रिया बड़ी कष्टदायक होती है, फिर भी वे इस कार्य को सफाई के साथ करते हैं। जब किसी चींटी की टांग टूटती है, दूसरी चींटियाँ अंगच्छेदन का कार्य सम्पन्न करती हैं। यदि घाव गंभीर हो तो पीड़ित को मरने के लिए छोड़ दिया जाता है। गिलहरियाँ अपनी टूटी टांग को एक स्थाई अवस्था (पोजिशन) में रख लेती हैं और हड्डी को जुड़ने देती हैं। जंगली टर्की भी अपने टूटे पंखों के साथ ऐसा ही करते हैं।

“वुड-कॉक” नाम का पक्षी इन सारे वुडलैण्ड सर्जनों में चतुर है। वह मृत्तिका का लेप बनाकर उससे अपने साथियों की टूटी अस्थियाँ जोड़ना जानता है। टूटी टांग को ठीक तरह से जोड़ने के लिए मृत्तिका के साथ रेशमी जड़ों को मिलाने का चिकित्सकीय ज्ञान भी इनमें देखा गया है।

इस जीव जंतु जगत में क्या कभी आपने इन्हें अपनी चिकित्सा आप तथा अपने शावकों की चिकित्सा करते हुए देखा है? प्रकृति-माँ ने अपने जीवों को, अपनी देख-रेख और चिकित्सा आप कर लेने की मनमोहक बुद्धि प्रदान की है। बीमार कुत्ते को यदि खुला छोड़ दिया जाय तो वे सहज ही कुछ चिकित्सकीय गुण वाले घास ढूँढ़कर खा लेते हैं। पुदीना एक ऐसी खुशबूदार बूटी है, जो हमेशा बिल्लियों को आकृष्ट करती है परन्तु जब वे बीमार पड़ती हैं, तो इसके उपचारात्मक प्रभाव के कारण इस पौधे की तलाश में लग जाती हैं। भेड़-बकरियाँ, गायें तथा हिरन भी उपचारात्मक शक्ति वाली जड़ी बूटियों के द्वारा अपनी चिकित्सा आप कर लेने में सक्षम हैं।

हमारी आँखें कमजोर हों अथवा उनमें पीड़ा हो तब हमारे डॉक्टर हमें काले चश्मे पहनने का सुझाव देते हैं। इस प्रकार की हालत में हमारे जीव जन्तु मित्र भी स्वतः ही छाया में रहने लगते हैं अथवा अपनी आँखों को अपने पंजे से बंद कर लेते हैं ताकि सूर्य की तेज किरणें आँखों पर न पड़ें।

हम अपने शरीर पर होने वाले कटाव अथवा खरोंच को लेपों के द्वारा आराम देते हैं। हिरन ऐसे घावों को एक प्रकार की रालमयी जड़ी बूटी से ढकने का प्रयास करते हैं। भालू नरम मृत्तिका अथवा गोंद का प्रयोग करते हैं। सुअर रक्त-स्राव को रोकने के लिए कीचड़ में लोटनी लेते हैं तथा घोड़े एक दूसरे के घाव को चाटकर आराम पाते हैं। जैसे हम अंगच्छेदन को अंतिम उपाय के रूप में अपनाते हैं उसी प्रकार जीव-जन्तु जगत भी। जब कभी दूसरे इलाज काम नहीं आते, लोमड़ी अपनी घायल टांग को तुड़वा लेने में कोई संकोच नहीं करती। उसके बाद घाव को चाटकर ठंडे पानी में नहाकर तथा गोंद के लेप से उसे ठीक किया जाता है। रक्कून, ऊदबिलाव तथा छछूंदर भी यही तरीका अपनाते हैं।

मानव ने शताब्दियों से जीव-जन्तु जगत के द्वारा सहजतः अपनाये जाने वाले चिकित्सकीय उपचार अपनाये। उदाहरण के लिए गठिया की चिकित्सा में हम भी खनिजीय झरनों की ओर दौड़ते हैं और विभिन्न प्रकार के ताप-प्रयोग करते हैं। हिरन और पशु ऐसी पीड़ा होने पर गंधक जल प्रवाह में नहाते हैं अथवा यथासंभव अत्यधिक गर्मी (सूर्य के ताप) में लेट जाते हैं। अकसर इनका स्वास्थ्य लाभ हमारे आधुनिक तरीकों से हमें प्राप्त होने वाले स्वास्थ्य लाभ के बराबर रहता है।

आप किसी जंगली जानवर को दाँत दर्द से परेशान देखेंगे तो अचरज में पड़ जाएँगे ना ? क्या आप जानते हैं उनका एक दाँत उन्हें परेशान करे तो वे क्या करते हैं ? हाथी का एक दाँत उसे परेशान करता हो तो वह

हाथी उस हिलने वाले दांत को किसी पेड़ की उपयुक्त दरार में दबाकर उसे मुँह से बाहर निकल आने तक हिलाता रहता है। मगरमच्छ अपने लिए निजी दंत चिकित्सक रखता है। सुनने-जानने में अजीब सा लगता है, पर भारी सरीसृप (Reptile) इनके विश्वसनीय दंत चिकित्सक हैं। जब कभी मगर को कोई दांत परेशान करता है तो वह इन चिकित्सकों में से किसी एक के दैनिक निरीक्षण (Daily Visit) पर आने तक इंतजार करता है।

यहाँ एक और बात है जो आप लोग शायद ही जानते होंगे; मगरमच्छों को टिट्टियाँ, जोंक (लीच) और ऐसे ही अन्य छोटे कृमि इनके मुँहों पर आक्रमण करके इन्हें बहुत परेशान करते हैं और इनके लिए बड़ी मुसीबत बन जाते हैं। इसी बिन्दु पर जो दंत-चिकित्सक सामने आता है, वह है- (Spur) एक विशेष पंखवाला जल पक्षी जो मगरमच्छ को इन कष्टकारी जोंकों के प्रहार से मुक्ति दिलाने के लिए दंत-चिकित्सक के रूप में अपना काम शुरू करता है। प्रतिदिन अपना अधिकांश समय मगरमच्छ एक नदी के किनारे पर धूप में लेटते हुए बिताता है। जब उसको जल पक्षी के आने का बोध होता है, तब वह अपना मुँह खोलता है और यह छोटा जीव उसके तगड़े जबड़े के बीच में हिम्मत के साथ कूदता है, एक बार अन्दर जाने पर, यह जल पक्षी दुतरफ़ा कार्य करने लगता है। इस बड़े प्राणी के दांतों के बीच में परेशान करने वाले जोंकों को दांतों के साथ चिपके हुए आहार सहित बाहर निकालने लगता है। इस पद्धति में अपने श्रम के लिए उसे अपना आहार भी मिल जाता है। मगरमच्छ बहरहाल उसकी उत्तम सेवा की प्रशंसा करता है और संयोगवश अपने नन्हे दंत चिकित्सक को निगल न जाए इसके लिए सावधान रहता है। जब दंत चिकित्सक किसी मरीज पर अपना काम पूरा कर लेता है, और वह बाहर निकलना चाहता है, तब अपने नुकीले कांटे से उस मगर के मुँह के अन्दर के ऊपरी भाग में कोंचते हुए नाजुक स्मरण दिलाता है जिससे जबड़े खुलते हैं और वह बाहर कूद पड़ता है; किसी दूसरे मरीज जिसे

दंत चिकित्सक की सख्त जरूरत है और जो इसके इन्तजार में है, की सेवा करने के लिए ।

घोड़ा नमक के अभाव में चरागाह में सहजतः उस खनिज को पत्थरों के आस-पास खोजता हुआ, चरने लगता है तथा चूजे जिन्हें पूरा कैल्शियम ना मिला हो अंडे की खोल के लिए आवश्यक कैल्शियम प्राप्त करने के लिए हड्डियों एवं कंकड़ों की तलाश करते हैं और उन्हें अपनी चौंच में ले लेते हैं । ये कुछ प्रसंग हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि जीव-जन्तु अपना आहार स्वयं संतुलित करने में सक्षम होते हैं ।

प्रश्नावली

(क) सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो-

1. लोमड़ी चीचड़े पड़ने पर अपने मुँह में रद्दी रख लेता है ।
(ऊनी/सूती)
2. भालू दर्द से छुटकारा पाने के लिए स्नान लेना पसंद करते हैं ।
(ठंडा/गरम)
3. बिल्लियाँ बुखार के समय अपने पाँवों को पानी में रखती हैं ।
(ठंडे/गरम)
4. प्रायः जीव-जन्तु अपना आहार स्वयं करने में सक्षम होते हैं ।
(संतुलित/असंतुलित)
5. खनिजीय झरने (गंधक स्रोत) के इलाज में काम आते हैं ।
(मलेरिया/गठिया)

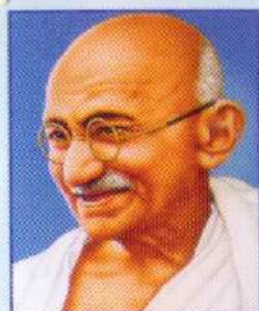
(ख) टिप्पणी लिखिए-

मगरमच्छ और उनके दंत चिकित्सक

पाठ बोध :

इस सृष्टि के प्रत्येक जीव-जन्तु को जीने का उतना ही अधिकार है, जितना मानव को ।

मानवता की मिसाल बने, ये प्रेरणादायी व्यक्तित्व !



महात्मा गांधी



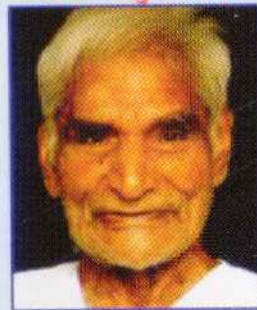
एपीजे. अब्दुल कलाम



मदर टेरेसा



राजा राममोहन राय



बाबा आम्टे



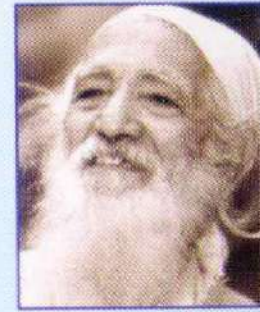
संत विनोबा भावे



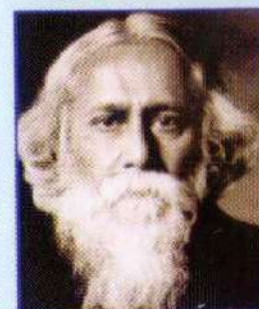
स्वामी विवेकानंद



श्रीनिवास रामानुजम्



सुन्दरलाल बहुगुणा



गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर



शैयद अहमद खान



अन्ना हजारे

करुणा की कथाएं तथा मानवीय बोध कथाओं पर आधारित
राष्ट्रीय प्रतियोगिता में विभिन्न क्षेत्रों में परीक्षा देते तथा
पुरस्कार, प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हर्षित-उत्साहित विद्यार्थीगण



KARUNA INTERNATIONAL

MUNOTH CENTER, 2nd Floor,

343, Triplicane High Road, Chennai - 600 005

Ph. : 044-28591724, 28591714, 95514 96900

emai : info@karunainternational.org